

वेदमन्त्राः

Colophon

This document was typeset using X_YTeX, and uses the Sidhanta font extensively. It also uses several L^AT_EX macros designed by *H. L. Prasād*. Practically all the encoding was done with the help of Ajit Krishnan's mudgala IME (<http://www.aupasana.com/>).

Acknowledgements

The initial ITRANS encodings of some of these texts were obtained from <http://sanskritdocuments.org/> and <https://sa.wikisource.org/>. Thanks are also due to Ulrich Stiehl (<http://sanskritweb.de/>) for hosting a wonderful resource for Yajur Veda, and also generously sharing the original Kathaka texts edited by Subramania Sarma. See also <http://stotrasamhita.github.io/about/>

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

अनुक्रमणिका

| | |
|--|----|
| महान्यासः | 1 |
| पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् | 1 |
| पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् | 3 |
| केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः | 5 |
| मूर्धादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः | 12 |
| पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः | 12 |
| हंसगायत्री | 13 |
| दिक् सम्पुटन्यासः | 14 |
| षोडशाङ्गरौद्रीकरणम् | 18 |
| गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः | 23 |
| आत्मरक्षा | 24 |
| शिवसङ्कल्पः | 25 |
| पुरुषसूक्तम् | 30 |
| उत्तरनारायणम् | 32 |
| अप्रतिरथम् | 32 |
| प्रतिपूरुषम् (सं०) | 34 |
| प्रतिपूरुषम् (ब्रा०) | 35 |
| शतरुद्रीयम् (सं०) | 36 |
| शतरुद्रीयम् (ब्रा०) | 39 |
| पञ्चाङ्गम् | 40 |
| अष्टाङ्ग-नमस्काराः | 41 |

| | |
|--|----|
| लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम् | 42 |
| लघुन्यासे देवता-स्थापनम् | 43 |
| कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् | 45 |
| षोडशोपचार पूजा | 45 |
| श्रीरुद्रनाम त्रिशती | 45 |
| प्रदक्षिणम् | 52 |
| नमस्काराः | 54 |
| चमकानुवाकैः प्रार्थना | 56 |
| प्रार्थना | 61 |
| श्रीरुद्रजपः | 61 |
| ध्यानम् | 62 |
| रुद्रप्रश्नः | 63 |
| चमकप्रश्नः | 71 |
| रुद्रप्रश्नः | 79 |
| चमकप्रश्नः | 87 |
| पुरुषसूक्तम् | 92 |
| नारायणसूक्तम् | 94 |
| विष्णुसूक्तम् | 95 |
| भूसूक्तम् | 96 |

| | |
|------------------------|-----|
| दुर्गा सूक्तम् | 98 |
| श्रीसूक्तम् | 99 |
| मेधासूक्तम् | 101 |
| भाग्यसूक्तम् | 102 |
| पवमानसूक्तम् | 102 |
| आयुष्यसूक्तम् | 105 |
| नवग्रहसूक्तम् | 106 |
| नक्षत्रसूक्तम् | 110 |
| गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् | 117 |
| मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः | 120 |

॥ महान्यासः ॥

॥ पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् ॥

ओङ्कारमन्त्रसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।

कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने
बाहुभ्यामुत ते नमः॥ या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते
धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो रुद्र मृडय॥

(EAST)

कं खं गं घं ङं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय।
पूर्वाङ्गरुद्राय नमः।

महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्।

महापापहरं वन्दे तस्मै मकाराय नमो नमः॥२॥

अपैतु मृत्युरमृतं न आगन्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पूर्णं
वनस्पतैरिवाभिनः शीयतां रयिः स च तान्नः शचीपतिः।

(SOUTH)

चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय।
दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः।

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्।

शिवमेकं परं वन्दे तस्मै शिकाराय नमो नमः॥३॥

ॐ। निधनपतये नमः। निधनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय

नमः। ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यलिङ्गाय
 नमः। सुवर्णाय नमः। सुवर्णलिङ्गाय नमः। दिव्याय नमः।
 दिव्यलिङ्गाय नमः। भवाय नमः। भवलिङ्गाय नमः। शर्वाय
 नमः। शर्वलिङ्गाय नमः। शिवाय नमः। शिवलिङ्गाय
 नमः। ज्वलाय नमः। ज्वललिङ्गाय नमः। आत्माय नमः।
 आत्मलिङ्गाय नमः। परमाय नमः। परमलिङ्गाय नमः।
 एतत्सोमस्य सूर्यस्य सर्वलिङ्गं स्थापयति पाणिमन्त्रं
 पवित्रम्।

(WEST)

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय।
 पश्चिमाङ्गरुद्राय नमः।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।

वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा
 भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

(NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय।
 उत्तराङ्गरुद्राय नमः।

यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्।

यलिङ्गं पूजयेन्नित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनाप्यायस्व॥

नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय।
ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय नमः।



॥ पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता
पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् ॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः
प्रचोदयात्॥

संवर्ताग्नि-तटित्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणम्
गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्।
अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकम्
वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणम्
कर्णोद्भासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्धिन्नदंष्ट्राङ्कुरम्।
सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरम्
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चार्थवनादोदयम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।

भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नमः॥

प्रालेयाचलमिन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभम्

भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् ।

विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणार्चितपदं ऋग्वेदनादोदयम्

वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST)

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः

कालाय

नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय

नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय

नमः॥

गौरं कुङ्कुमपङ्कितं सुतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलम्

भ्रूविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्।

स्निग्धं विम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतम्

वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वक्त्रं हरस्योत्तरम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां

ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु
सदाशिवोम्॥

व्यक्ताव्यक्तरूपितं च परमं षट्त्रिंशतत्त्वाधिकम्
तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरमिति ध्येयं सदा योगिभिः।
ओङ्कारादि समस्तमन्त्रजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम्
वन्दे पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

॥ केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः ॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥
शिखायै नमः॥ (TUFT)

अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भुवा अधि।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD)

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD)

ह्रस्वः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्धोमसदजा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं
बृहत्॥

भ्रुवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥
नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES)

नमः स्नुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च
नमः सूद्याय च सरस्याय च नमो नाद्याय च वैशन्ताय च।
कर्णाभ्यां नमः॥ (EARS)

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु
रीरिषः।

वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवधीर्हविष्मन्तो नमसा विधेम
ते॥

नासिकायै नमः॥ (NOSE)

अवतत्य धनुस्त्व९ सहस्राक्ष शतेषुधे॥
निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव।
मुखाय नमः॥ (FACE)

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षमाचराः।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
कण्ठाय नमः॥ (NECK)

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवः रुद्रा उपश्रिताः।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK)

नमस्ते अस्त्वायुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥
बाहुभ्यां नमः॥ (SHOULDERS)

या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिब्रुज॥
उपबाहुभ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST)

परिणो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः।
अव स्थिरा मघवेन्द्रस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृडय॥
मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS)

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS)

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नमः॥
अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS)

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः
कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो
बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो
मनोन्मनाय नमः॥

तर्जनीभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS)

अ॒घोरे॑भ्योऽथ॒ घोरे॑भ्यो॒ घोर्घो॑रतरेभ्यः।

सर्वे॑भ्यः सर्व॑शर्वे॑भ्यो नम॑स्ते अस्तु रु॒द्ररू॑पेभ्यः॥

मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS)

तत्पुरु॑षाय वि॒द्महे॑ महादे॒वाय॑ धीमहि।

तन्नो॑ रुद्रः प्रचो॒दया॑त्॥

अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS)

ईशानः सर्व॑विद्याना॒मीश्वरः॑ सर्व॑भूतानां॒ ब्रह्माधि॑पतिर्ब्रह्म॒णो-
ऽधि॑पतिर्ब्रह्मा॑ शिवो॒ मे अस्तु॑ सदाशिवो॒म्॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो॑ हिरण्यबा॒हवे॑ हिरण्यवर्णाय॑ हिरण्यरूपाय॑ हिरण्यपतये-
ऽम्बिका॑पतये उमापतये॑ पशुपतये॑ नमो॒ नमः॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ (RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT

AND BACK)

नमो॑ वः कि॒रि॒केभ्यो॑ दे॒वाना॑ ५ हृद॑येभ्यः॥

हृदयाय नमः॥ (HEART)

नमो॑ गु॒णेभ्यो॑ गु॒णप॑तिभ्यश्च वो॒ नमः॥

पृष्ठाय नमः॥ (BACK)

नम॑स्तक्ष॑भ्यो रथका॒रेभ्य॑श्च वो॒ नमः॥

कक्षाभ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमः॥
पार्श्वाभ्यां नमः॥ (TRUNK)

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवा९ उत।
अनेशनस्येषव आभुरस्य निषङ्गथिः॥

जठराय नमः॥ (STOMACH)

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकं आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषां विधेम॥
नाभ्यै नमः॥ (NAVEL)

मीढुष्टम् शिवंतम शिवो नः सुमनां भव।
परमे वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान् आ चर् पिनाकं
बिभ्रदा गंहि॥

कट्यै नमः॥ (WAIST)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

गुह्याय नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS)

ये अन्त्रेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

अण्डाभ्यां नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS)

स शिरा जातवेदा अक्षरं परमं पदम्।
वेदानां शिरसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥

अपानाय नमः॥ (ANUS)

मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भ॒कं मा न॒ उ॒क्ष॑न्तमु॒त मा न॑
उ॒क्षि॑तम्।

मा नो॑ऽव॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र
री॒रिषः॥

ऊरुभ्यां नमः॥ (THIGHS)

ए॒ष ते॑ रु॒द्रभा॒गस्तं जु॑षस्व॒ तेना॑व॒सेन॑ प॒रो मू॒जव॑तोऽती॒ह्यव॑ततधन्वा॒
पिना॑कहस्तः॒ कृ॒त्ति॑वासाः॥

जानुभ्यां नमः॥ (KNEES)

स॒ꣳसृ॒ष्टि॒जि॒त्सोम॑पा बा॒हुश॑ध्य॒र्ध्वध॑न्वा॒ प्रति॑हिताभि॒रस्ता॑।
बृ॒ह॒स्प॒ते परि॑दीया॒ रथे॑न र॒क्षो॒हाऽमि॒त्राꣳ अप॒बाध॑मानः॥

जङ्घाभ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES)

वि॒श्वं भू॑तं भु॒वनं चि॒त्रं ब॑हु॒धा जा॑तं जा॒य॑मानं च॒ यत्।
सर्वो॑ ह्ये॒ष रु॒द्रस्तस्मै॑ रु॒द्राय॑ नमो॑ अस्तु॥

गुल्फाभ्यां नमः॥ (ANKLES)

ये प॒थां प॑थि॒रक्ष॑य ऐ॒लवृ॑दा य॒व्युधः॑।
तेषांꣳ स॒हस्र॑योज॒नेऽव॑धन्वा॒नि तन्म॑सि॥

पादाभ्यां नमः॥ (FEET)

अ॒ध्य॑वोचदधि॒वक्ता प्र॑थ॒मो दै॒व्यो भि॒षक्।
अ॒हीꣳश्च॒ सर्वा॑ञ्ज॒म्भय॑न्त्सर्वा॑श्च या॒तुधा॑न्यः॥

कवचाय हुम्॥ (CROSS HANDS ACROSS CHEST WITH TIPS OF FINGERS
TOUCHING SHOULDERS)

नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च क॒व॒चिने॑ च॒ नमः॑ श्रु॒ताय॑ च श्रु॒तसे॒नाय॑
च॥

उपकवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)

नमो॑ अस्तु॒ नील॑ग्री॒वाय॑ सहस्रा॒क्षाय॑ मी॒दुषे॑।
अथो॒ ये अ॑स्य॒ सत्वा॑नोऽहं॒ तेभ्यो॑ऽकरं॒ नमः॑॥
नेत्र॑त्रयाय॒ वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERS ACROSS THE
THREE EYES)

प्र मु॑श्च धन्व॑न॒स्त्वमु॒भयो॒रार्जि॑यो॒र्ज्याम्।
याश्च॑ ते॒ हस्त॑ इष॑वः॒ परा॒ ता भ॑गवो वप॥
अस्त्राय॑ फट्॥ (SLAP INDEX AND MIDDLE FINGERS OF RIGHT HAND ON
LEFT PALM)

य ए॒ताव॑न्तश्च॒ भूया॑ः सश्च॒ दिशो॑ रु॒द्रा वि॑तस्थिरे।
तेषा॑ः सहस्र॑यो॒जने॑ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि॥
इति॑ दिग्बन्धः॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS
AROUND SELF)



॥ मूर्धादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः ॥

ॐ मूर्ध्ने नमः। नं नासिकाय नमः। मों ललाटाय नमः।
भं मुखाय नमः। गं कण्ठाय नमः। वं हृदयाय नमः। ते
दक्षिणहस्ताय नमः। रुं वामहस्ताय नमः। द्रां नाभ्यै नमः।
यं पादाभ्यां नमः।

॥ पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः ॥

स॒द्योजा॒तं प्र॑पद्यामि स॒द्योजा॒ताय॒ वै नमो॒ नमः॑।
भ॒वे भ॒वे ना॒तिं भवे॒ भव॑स्व॒ माम्। भ॒वोद्भ॑वाय॒ नमः॑॥
पादाभ्यां नमः॥

वा॒मदे॒वाय॒ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॒ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॒ नमो॑ रु॒द्राय॒ नमः॑
का॒लाय॒ नमः॑ कल॑विक॒रणा॒य नमो॑ बल॑विक॒रणा॒य नमो॑
बला॑य॒ नमो॑ बल॑प्रमथ॒नाय॒ नमः॑ सर्व॑भूतदम॒नाय॒ नमो॑
म॒नोन्म॑नाय॒ नमः॑॥

ऊरुभ्यां नमः॥

अ॒घोरे॑भ्योऽथ॒ घोरे॑भ्यो॒ घोर॑घोर॒तरे॑भ्यः।
सर्वे॑भ्यः सर्व॑शर्वे॑भ्यो॒ नम॑स्ते अस्तु रु॒द्ररू॑पेभ्यः॥
हृदयाय नमः॥

तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ महा॒देवाय॑ धीमहि।
तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॑चोदयात्॥
मुखाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-
ऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥
हंस हंस मूर्ध्ने नमः॥



॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्त्रस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः।
अव्यक्त गायत्री छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्।
हंसीं शक्तिः। हंसूं कीलकम्॥
परमहंस-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

हंसां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसूं
मध्यमाभ्यां नमः। हंसैः अनामिकाभ्यां नमः। हंसौ
कनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हंसां
हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखायै वषट्।
हंसैः कवचाय हुम्। हंसौ नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसः अस्त्राय
फट्। भूर्भुवस्सुवरोम् इति दिग्बन्धः॥

॥ ध्यानम् ॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्।
पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥

हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥

हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि।

तन्नो हंसः प्रचोदयात्॥

(एवं त्रिः)

हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः।

एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥



॥ दिक् सम्पुटन्यासः ॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[ॐ] लं। त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र९ हवेहवे सुहव९
शूरमिन्द्रम्।

हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्र९ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

लं भूर्भुवः सुवः। इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतय
ऐरावतवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय
सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो
वरदो भवतु॥ [इन्द्रः संरक्षतु॥] ॥१॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[नं] रं। त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽव
यासिसीष्ठाः।

यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्युस्मत्॥

रं भूर्भुवः सुवः। अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतयेऽजवाहनाय
साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अग्नये नमः। अग्निः सुप्रीतो
वरदो भवतु॥ [अग्निः संरक्षतु॥] ॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।
[मों] हं। सुगं नः पन्थामभयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षत्रे यम
एति राजा॥
यस्मिन्नेनमभ्यर्षिश्चन्त देवाः। तदस्य चित्रं हविषा यजाम॥
हं भूर्भुवः सुवः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये
महिषवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय
सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो
वरदो भवतु॥ [यमः संरक्षतु॥] ॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।
[भं] षं। असुन्वन्तमयंजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यां
तस्करस्यान्वैषि।
अन्यमस्मदिच्छ सा तं इत्या नमो देवि निर्ऋते
तुभ्यमस्तु॥
षं भूर्भुवः सुवः। निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोधिपतये
नरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कार-
भूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः

सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [निर्ऋतिः संरक्षतु॥] ॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[गं] वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशःसु मा न आयुः प्रमोषीः॥

वं भूर्भुवः सुवः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वरुणः संरक्षतु॥] ॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[वं] यं। आ नो नियुद्धिः शतिनीभिरध्वरम्। सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।

वायो अस्मिन् हविषि मादयस्व। यूयं पात स्वस्तिभिः सदानः॥

यं भूर्भुवः सुवः। वायवे साङ्कुशध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने यं वायवे नमः। वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥] ॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[ते] सं। व॒यः॑ सोम॑ व्र॒ते तव॑। मन॑स्त॒नूषु॑ बिभ्र॑तः।

प्र॒जाव॑न्तो अशीमहि॥

सं भूर्भुवः॑ सुवः॑। सोमाय॑ अमृतकलशहस्ताय॑ नक्षत्राधिपतये॑
अश्ववाहनाय॑ साङ्गाय॑ सायुधाय॑ सशक्तिपरिवाराय॑
सर्वालङ्कारभूषिताय॑ उमामहेश्वरपार्षदाय॑ नमः।

उत्तरदिग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय॑ नमः। सोमः सुप्रीतो
वरदो भवतु॥ [सोमः संरक्षतु॥] ॥ ७ ॥

ॐ भूर्भुवः॑ सुव॒रोम्।

[रुं] शं। (ऋक्) तमीशा॑नं जग॑तस्त॒स्थुष॑स्पतिम्। धि॒यं
जि॒न्वम॑वसे हूमहे व॒यम्।

पूषा नो॒ यथा॑ वेद॑सामसद्वृ॒धे र॑क्षि॒ता पा॒युरद॑ब्धः स्व॒स्तये॑॥

शं भूर्भुवः॑ सुवः॑। ईशानाय॑ त्रिशूलहस्ताय॑ भूताधिपतये॑
वृषभवाहनाय॑ साङ्गाय॑ सायुधाय॑ सशक्तिपरिवाराय॑
सर्वालङ्कारभूषिताय॑ उमामहेश्वरपार्षदाय॑ नमः।

ईशानदिग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय॑ नमः। ईशानः
सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ईशानः संरक्षतु॥] ॥ ८ ॥

ॐ भूर्भुवः॑ सुव॒रोम्।

[द्रां] खं। (ऋक्) अ॒स्मे रु॒द्रा मे॒हना॑ पर्व॑तासो वृ॒त्रह॑त्ये
भर॑हूतौ स॒जोषाः॑ ।

यः शंस॑ते स्तुव॒ते धा॒यि प॒ञ्च इन्द्र॑ज्येष्ठा अ॒स्माँ अ॑वन्तु
दे॒वाः॥

खं भूर्भुवः सुवः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये
 हंसवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय
 सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
 ऊर्ध्वदिग्भागे मूर्ध्निस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो
 वरदो भवतु॥ [ब्रह्मा संरक्षतु॥] ॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।
 [यं] ह्रीं। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी।
 यच्छानः शर्म सुप्रथाः॥
 ह्रीं भूर्भुवः सुवः। विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये
 गरुडवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय
 सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
 अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने ह्रीं विष्णवे नमः। विष्णुः
 सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [विष्णुः संरक्षतु॥] ॥१०॥



॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम् ॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ अं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 विभूरसि प्रवाहणो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्रे पिपृहि मा
 मा मा हिंसीः॥ अं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। शिखास्थाने
 रुद्राय नमः॥१॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ आं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 वह्निरसि हव्यवाहनो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा
 मा मा हिंसीः॥ आं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। शिरस्थाने
 रुद्राय नमः॥ २॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ इं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 श्वात्रोऽसि प्रचेता रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा
 मा हिंसीः॥ इं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। मूर्ध्निस्थाने रुद्राय
 नमः॥ ३॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ ईं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 तुथोऽसि विश्ववेदा रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा
 मा मा हिंसीः॥ ईं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। ललाटस्थाने
 रुद्राय नमः॥ ४॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ उं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 उशिगंसि कवी रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा
 मा हिंसीः॥ उं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। नेत्रयोः स्थाने रुद्राय
 नमः॥ ५॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ ऊं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 अङ्घारिरसि बम्भारी रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा
 मा मा हिंसीः॥ ॐ ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने
 रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ ऋं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 अवस्युरसि दुवस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा
 मा मा हिंसीः॥ ऋं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। मुखस्थाने रुद्राय
 नमः॥७॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ ऋं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 शुन्ध्यूरसि मार्जालीयो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि
 मा मा मा हिंसीः॥ ऋं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कण्ठस्थाने
 रुद्राय नमः॥८॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ लं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 सम्राडसि कृशानू रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा
 मा हिंसीः॥ लं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय
 नमः॥९॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ लृं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 परिषद्योऽसि पवमानो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि
 मा मा मा हिंसीः॥ लृं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। हृदयस्थाने
 रुद्राय नमः॥१०॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ एं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 प्रतक्त्रोऽसि नभस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा
 मा मा हिंसीः॥ एं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय
 नमः॥११॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ ऐं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 असम्मृष्टोऽसि हव्यसूदो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि
 मा मा मा हिंसीः॥ ऐं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कटिस्थाने
 रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ ॐं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 ऋतधामाऽसि सुवर्ज्योती रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि
 मा मा मा हिंसीः॥ ॐ ॐं भूर्भुवस्सुवरोम्। ऊरुस्थाने
 रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ औं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 ब्रह्मज्योतिरसि सुवर्धामा रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि
 मा मा मा हिंसीः॥ औं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। जानुस्थाने
 रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ अं। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 अजोँऽस्येकपाद्रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा
 मा हिंसीः॥ अं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। जङ्घास्थाने रुद्राय
 नमः॥१५॥

ॐ भूर्भुवस्सुवः। ॐ अः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः
 शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
 अहिरसि बुध्नियो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा
 मा मा हिंसीः॥ अः ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। पादयोः स्थाने
 रुद्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो
 भवति।

ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शाकिनी-
 डाकिनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद्युपद्रवाद्युपघाताः। सर्वे
 ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु। यजमानं रक्षन्तु। सर्वान्
 महाजनान् रक्षन्तु॥



॥ गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः ॥

मनो॒ ज्योति॑र्जुषता॒माज्यं॑ विच्छि॑न्नं य॒ज्ञं॑ स॒मिमं॑ द॒धातु॑।
या इ॒ष्टा उ॒षसो॑ नि॒मृच॑श्च॒ ताः स॒न्दधामि॑ ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑ ॥ गुह्याय
नमः ॥ १ ॥

अ॒बो॑ध्य॒ग्निः स॒मिधा॑ ज॒नानां॑ प्र॒ति धे॒नुमि॑वाऽऽय॒तीमु॑षासम्।
य॒ह्वा इ॒व प्र॒व॒यामु॑ज्जिहा॑नाः प्र॒भान॑वः॒ सिस्र॑ते॒ नाक॑मच्छं॥
नाभ्यै नमः ॥ २ ॥

अ॒ग्नि॒र्मूर्द्धा॑ दि॒वः क॒कुत्प॑तिः पृथि॒व्या अ॒यम्।
अ॒पां॑ रे॒तां॑ सि जि॒न्वति॑ ॥ हृ॒दया॑य नमः ॥ ३ ॥

मूर्धा॑नं दि॒वो अ॑र॒तिं पृथि॒व्या वै॑श्वान॒रमृ॑ताय॑ जा॒तम॒ग्निम्।
क॒विं॑ स॒म्राज॑म॒तिथिं॑ ज॒नाना॑मा॒सन्ना पा॑त्रं ज॒नय॑न्त दे॒वाः॥
कण्ठाय नमः ॥ ४ ॥

म॒र्माणि॑ ते॒ वर्म॑भिश्छादयामि॒ सोम॑स्त्वा॒ राजा॑ऽमृते॑ना॒भिव॑स्ताम्।
उ॒रोर्व॑री॒यो व॑रि॒वस्ते अ॑स्तु॒ जय॑न्तं॒ त्वाम॑नु॒ मद॑न्तु दे॒वाः॥
मुखाय नमः ॥ ५ ॥

जा॒तवे॑दा॒ यदि॑ वा पा॒वको॑ऽसि। वै॒श्वान॒रो यदि॑ वा
वैद्यु॒तो॑ऽसि।

शं प्र॒जाभ्यो॑ यज॑मानाय लो॒कम्। ऊ॒र्जं पु॑ष्टिं दद॑द॒भ्याव॑वृत्स्व॥
शिरसे नमः ॥ ६ ॥



॥ आत्मरक्षा ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्रह्मा॑त्म॒न्वद॑सृजत। तद॑कामयत। समा॒त्मना॑ पद्येयेति।
आत्म॒न्नात्म॒न्नित्याम॑न्नयत। तस्मै॑ दश॒म॑ हूतः प्रत्य॑शृणोत्।
स दश॑हूतोऽभवत्। दश॑हूतो ह॒ वै नामै॑षः। तं वा ए॒तं दश॑हूत॒ः
सन्तम्। दश॑होतेत्याचक्षते प॒रोक्षे॑ण। प॒रोक्ष॑प्रिया इव॒ हि
दे॒वाः॥

आत्म॒न्नात्म॒न्नित्याम॑न्नयत। तस्मै॑ सप्त॒म॑ हूतः प्रत्य॑शृणोत्।
स सप्त॑हूतोऽभवत्। सप्त॑हूतो ह॒ वै नामै॑षः। तं वा ए॒तं
सप्त॑हूत॒ः सन्तम्। सप्त॑होतेत्याचक्षते प॒रोक्षे॑ण। प॒रोक्ष॑प्रिया
इव॒ हि दे॒वाः॥

आत्म॒न्नात्म॒न्नित्याम॑न्नयत। तस्मै॑ ष॒ष्ठ॑ हूतः प्रत्य॑शृणोत्।
स षड्॑हूतोऽभवत्। षड्॑हूतो ह॒ वै नामै॑षः। तं वा ए॒तं
षड्॑हूत॒ः सन्तम्। षड्॑होतेत्याचक्षते प॒रोक्षे॑ण। प॒रोक्ष॑प्रिया इव॒ हि दे॒वाः॥

आत्म॒न्नात्म॒न्नित्याम॑न्नयत। तस्मै॑ पञ्च॒म॑ हूतः प्रत्य॑शृणोत्।
स पञ्च॑हूतोऽभवत्। पञ्च॑हूतो ह॒ वै नामै॑षः। तं वा ए॒तं
पञ्च॑हूत॒ः सन्तम्। पञ्च॑होतेत्याचक्षते प॒रोक्षे॑ण। प॒रोक्ष॑प्रिया इव॒ हि
दे॒वाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत्। तस्मै चतुर्थः हूतः प्रत्यशृणोत्।
 स चतुर्हूतोऽभवत्। चतुर्हूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं
 चतुर्हूतः सन्तम्। चतुर्होतेत्याचक्षते परोक्षेण। परोक्षप्रिया
 इव हि देवाः॥

तमब्रवीत्। त्वं वै मे नेदिष्ठः हूतः प्रत्यश्रौषीः।
 त्वयैनानाख्यातार इति। तस्मान्नु हैनाः चतुर्होतार
 इत्याचक्षते। तस्माच्छुश्रूषुः पुत्राणां हृद्यतमः। नेदिष्ठो
 हृद्यतमः। नेदिष्ठो ब्रह्मणो भवति। य एवं वेद।
 आत्मने नमः॥

॥ शिवसङ्कल्पः ॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
 येन यज्ञस्त्रायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१॥

येन कर्माणि प्रचरन्ति धीरा यतो वाचा मनसा चारु यन्ति।
 यत्सम्मितामनुसंयन्ति प्राणिनस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
 यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तरमृतं प्रजार
 यस्मान्न ऋते किं च न कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥४॥

सुषारथिरश्वानिव॒ यन्मनुष्या॑न्नेनीयतेऽभीशु॑भिर्वाजिन॑ इव।
 हृत्प्रतिष्ठं॑ यदजिरं॒ जर्विष्ठं॑ तन्मे॒ मनः॑ शिवसङ्कल्पमस्तु॥५॥
 यस्मि॒नृचः॑ साम॒ यजूं॑षि यस्मिन्॒ प्रति॑ष्ठिता रथना॒भावि॑वाराः।
 यस्मि॑श्चि॒त्तं॑ सर्व॒मोतं॑ प्र॒जानां॑ तन्मे॒ मनः॑ शिवसङ्कल्पमस्तु॥६॥
 यदत्र॑ षष्ठं॒ त्रिश॑तं॒ सुवीरं॑ य॒ज्ञस्य॑ गुह्यं नव॑नाव॒माय्य॑म्।
 दशं॑ पञ्च त्रि॒शतं॑ यत्परं॒ च तन्मे॒ मनः॑ शिवसङ्कल्पमस्तु॥७॥
 यज्जाग्र॑तो दूरमु॒दैति॑ दै॒वं तदु॑ सु॒प्तस्य॑ तथै॒वैति॑।
 दूर॒ङ्गमं॑ ज्योति॒षां ज्योति॑रेकं॒ तन्मे॒ मनः॑ शिवसङ्कल्पमस्तु॥८॥
 येने॒दं वि॒श्वं जग॑तो ब॒भूव॑ ये दे॒वापि॑ मह॒तो जा॒तवे॑दाः।
 तदे॒वाग्नि॑स्तम॒सो ज्योति॑रेकं॒ तन्मे॒ मनः॑ शिवसङ्कल्पमस्तु॥९॥
 येन॒ द्यौः पृ॑थि॒वी चा॒न्तरि॑क्षं च॒ ये पर्व॑ताः प्र॒दिशो॑ दि॒शश्च॑।
 येने॒दं जग॑द्वाप्तं॒ प्र॒जानां॑ तन्मे॒ मनः॑ शिवसङ्कल्पमस्तु॥१०॥
 ये मनो॑ हृद॒यं ये च॑ दे॒वा ये दि॒व्या आपो॑ ये सूर्य॑र॒श्मिः।
 ते श्रो॑त्रे चक्षु॒षी स॒श्चरे॑न्तं॒ तन्मे॒ मनः॑ शिवसङ्कल्पमस्तु॥११॥
 अचि॑न्त्यं॒ चाप्र॑मेयं॒ च व्य॑क्ताव्यक्त॒परं॑ च॒ यत्।
 सूक्ष्मा॑त्सूक्ष्म॒तरं॑ ज्ञेयं॒ तन्मे॒ मनः॑ शिवसङ्कल्पमस्तु॥१२॥
 एका॑ च दश श॒तं च॑ स॒हस्रं॑ चा॒युतं॑ च
 नि॒युतं॑ च प्र॒युतं॑ चा॒र्बुदं॑ च॒ न्य॒र्बुदं॑ च॒ समु॑द्रश्च॒ मध्यं॑ चान्तं॑श्च
 परा॒र्धश्च॑ तन्मे॒ मनः॑ शिवसङ्कल्पमस्तु॥१३॥

ये पञ्च पञ्चादश शतं सहस्रमयुतं न्यर्बुदं च।
ते अग्निचित्येष्टकास्तं शरीरं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१४॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
यस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१५॥

यस्येदं धीराः पुनन्ति कवयो ब्रह्माणमेतं त्वा वृणत इन्दुम्।
स्थावरं जङ्गमं द्यौराकाशं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१६॥

परात्परतरं चैव यत्पराच्चैव यत्परम्।
यत्परात्परतो ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१७॥

परात्परतरो ब्रह्मा तत्परात्परतो हरिः।
तत्परात्परतोऽधीशस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१८॥

या वेदादिषु गायत्री सर्वव्यापी महेश्वरी।
ऋग्यजुः सामाथर्वैश्च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१९॥

यो वै देवं महादेवं प्रणवं परमेश्वरम्।
यः सर्वं सर्ववेदैश्च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२०॥

प्रयतः प्रणवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तमम्।
ओङ्कारं प्रणवात्मानं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२१॥

योऽसौ सर्वेषु वेदेषु पठ्यते ह्यज इश्वरः।
अकायो निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२२॥

गोभिर्जुष्टं धनेन ह्यायुषा च बलेन च।
प्रजयां पशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २३ ॥

कैलासशिखरे रम्ये शङ्करस्य शिवालये।
देवतास्तत्र मोदन्ते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २४ ॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्तन्मे मनः
शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २५ ॥

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोहस्त उत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यां नमति सम्पतत्रैर्द्यावापृथिवी जनयन्देव
एकस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २६ ॥

चतुरो वेदानधीयीत सर्वशास्त्रमयं विदुः।
इतिहासपुराणानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २७ ॥

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न
उक्षितम्। मा नोऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा
नस्तनुवो रुद्र रीरिषस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २८ ॥

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो
अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवधीर्हविष्मन्तो
नमसा विधेम ते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २९ ॥

ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्।

ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो
नमस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ३०॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे।
वो चेम् शन्तम९ हृदे। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो
अस्तु तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ३१॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः।
सबुधिया उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च
विवस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ३२॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय
हविषा विधेम तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ३३॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्वं उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय
हविषा विधेम तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ३४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा
भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनः
शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ३५॥

गन्धद्वारां दुराधरूपां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी९
सर्वभूतानां

तामिहोपह्वये श्रियं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ३६॥

य इ॒दं शि॒वं सङ्क॒ल्पं स॒दा ध्या॑यन्ति॒ ब्राह्म॑णाः।
 ते परं॑ मोक्षं॑ गमिष्यन्ति॒ तन्मे॒ मनः॑ शि॒वं सङ्क॒ल्पम॑स्तु॥
 हृद॑याय नमः॥



॥ पुरुषसूक्तम् ॥

ॐ स॒हस्रं॑ शी॒र्षा पु॒रुषः॑। स॒हस्रा॑क्षः स॒हस्रं॑ पात्। स भूमिं॑
 वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वा। अत्य॑तिष्ठद्वशाङ्गु॒लम्॥ पु॒रुष ए॒वेदं॑ स॒र्वम्॑।
 यद्भू॒तं यच्च॑ भव्यम्॑। उ॒तामृ॑त॒त्वस्ये॑शा॒नः। यद॒न्नेना॑ति॒रोह॑ति॥
 ए॒तावा॑नस्य म॒हिमा॑। अतो॒ ज्याया॑श्च॒ पूरु॑षः।

पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑। त्रि॒पाद॑स्यामृ॒तं दि॒वि॥ त्रि॒पादूर्ध्वं॑
 उदै॒त्पुरु॑षः। पादो॑ऽस्ये॒हाऽऽभ॑वा॒त्पुनः॑। ततो॒ विश्व॑ङ्म॒क्राम॑त्।
 सा॒श॒ना॒न॒श॒ने अ॒भि॥ तस्मा॑द्वि॒राड॑जायत। वि॒राजो॑ अ॒धि
 पू॒रुषः॑। स जा॒तो अत्य॑रिच्यत। प॒श्चाद्भूमि॑मथो॒ पुरः॑॥

यत्पु॑रु॒षेण॑ ह॒विषा॑। दे॒वा य॒ज्ञम॑त॒न्वत॑। व॒स॒न्तो
 अ॑स्यासी॒दाज्य॑म्। ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॑विः॥ स॒प्तास्य॑ऽऽस॒न्परि॑धयः।
 त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः। दे॒वा यद्य॑ज्ञं त॒न्वा॒नाः। अब॑ध्न॒न्पुरु॑षं
 प॒शुम्॥ तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॑ प्रौक्षन्। पु॒रुषं॑ जा॒तम॑ग्र॒तः।

तेन॑ दे॒वा अय॑जन्त। सा॒ध्या ऋ॑ष॒यश्च॒ ये॥ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व॑हुतः।
 सम्भृ॑तं पृष॒दाज्य॑म्। प॒शूँस्तां॑श्च॒क्रे वा॒यव्या॑न्।

आ॒र॒ण्यान्ग्रा॒म्याश्च॒ ये॥ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व॑हुतः। ऋचः॒
सामा॑नि जज्ञिरे। छन्दा॑सि जज्ञिरे तस्मा॑त्।

यजु॑स्तस्मा॑दजायत॥ तस्मा॑दश्वा॑ अजायन्त। ये के॒
चोभ॑यादतः। गावो॑ ह जज्ञिरे तस्मा॑त्। तस्मा॑ज्जा॒ता
अ॑जावयः॥ यत्पुरु॑षं व्य॑दधुः। क॒ति॒धा व्य॑कल्पयन्। मुखं॑
किम॑स्य॒ कौ बा॒हू। कावू॑रू पादा॑वुच्येते॥ ब्रा॒ह्म॒णोऽस्य॒
मुख॑मासीत्। बा॒हू रा॑ज॒न्यः कृतः॑।

ऊ॒रू तद॑स्य॒ यद्वैश्यः॑। प॒द्भ्यां शू॒द्रो अ॑जायत॥ च॒न्द्रमा॒
मन॑सो जा॒तः। चक्षोः॑ सूर्यो॑ अजायत। मुखा॑दिन्द्र॑श्चाग्निश्च।
प्रा॒णाद्वा॒युरा॑जायत॥ नाभ्या॑ आसीद॒न्तरि॑क्षम्। शी॒र्ष्णो
द्यौः सम॑वर्तत। प॒द्भ्यां भूमि॑र्दिशः॒ श्रोत्रा॑त्। तथा॑ लो॒कां
अ॑कल्पयन्॥

वेदा॑हमे॒तं पुरु॑षं म॒हान्त॑म्। आ॒दि॒त्यव॑र्णं॒ तम॑स॒स्तु
पा॒रे॥ सर्वा॑णि रू॒पाणि॑ वि॒चित्य॒ धीरः॑। नामा॑नि
कृ॒त्वाऽभि॑वदन् यदास्तै॑॥ धा॒ता पु॒रस्ता॑द्यमु॒दाज॑हार।
श॒क्रः प्रवि॑द्वान्प्रदिश॑श्चत॑स्रः। तमे॒वं वि॑द्वान॒मृत॑ इ॒ह भ॑वति।
नान्यः पन्था॑ अय॑नाय विद्यते॥ य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वाः।
तानि॑ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन्। ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्ते।
यत्र॑ पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः॥

शिरसे॑ स्वाहा॥



॥ उत्तरनारायणम् ॥

अद्भ्यः सम्भूतः पृथिव्यै रसाच्च। विश्वकर्मणः समवर्तताधि।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे॥
वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था विद्यतेयऽनाय॥
प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजायमानो बहुधा विजायते।

तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदमिच्छन्ति
वेधसः॥ यो देवेभ्य आतपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो
देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मणे॥ रुचं ब्राह्मं जनयन्तः।
देवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्य देवा
असन् वशे॥ ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ। अहोरात्रे पार्श्वे।
नक्षत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मनिषाण। अमुं
मनिषाण। सर्वं मनिषाण॥

शिखायै वषट्॥



॥ अप्रतिरथम् ॥

आशुः शिशानो वृषभो न युध्मो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
 सङ्क्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शत९ सेना अजयत् साकमिन्द्रः।
 सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्चवनेन धृष्णुना।
 तदिन्द्रेण जयत् तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा। स
 इषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्वशी स९ स्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन।
 स९ सृष्टजिह्मसोमपा बाहुशध्यूर्ध्वधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता।
 बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्रा९ अपबाधमानः।
 प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्त्रस्माकमेध्यविता रथानाम्।
 गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्मं प्रमृणन्तमोजसा।
 इम९ सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्र९ सखायोऽनु स९
 रभध्वम्। बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी
 सहमान उग्रः। अभिर्वीरो अभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र
 रथमा तिष्ठ गोवित्। अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदायो
 वीरः शतमन्युरिन्द्रः।

दुश्चवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माक९ सेना अवतु प्र युत्सु।
 इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
 देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रे। इन्द्रस्य
 वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुता९ शर्ध उग्रम्।
 महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्।
 अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।
 अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानु देवा अवता हवेषु।

उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत् सत्त्वेनां मामकानां महा॑सि।
 उद्धृ॑त्रहन् वा॒जिनां॑ वाजि॑नान्यु॒द्रथानां॑ जय॑तामेतु घोषः। उप॒
 प्रेत॒ जय॑ता नरः स्थि॒रा वः॑ सन्तु बा॒हवः॑। इन्द्रो॑ वः शर्म
 यच्छ॑त्वनाधृष्या यथाऽस॑थ। अव॑सृष्टा॒ परा॑ पत॒ शर॑व्ये
 ब्रह्म॑सं॒शिता।

गच्छा॑मित्रान् प्रवि॑श॒ मैषां॑ कं च॒नोच्छि॑षः। मर्मा॑णि ते
 वर्म॑भिश्छादयामि॒ सोम॑स्त्वा॒ राजा॑ऽमृते॑ना॒भिव॑स्ताम्।
 उ॒रोर्वरी॑यो वरि॑वस्ते अस्तु॒ जय॑न्तं॒ त्वामनु॑ मदन्तु दे॒वाः।
 यत्र॑ बा॒णाः स॒म्पत॑न्ति कुमा॒रा वि॑शि॒खा इ॒व। इन्द्रो॑ न॒स्तत्र॑
 वृत्र॑हा वि॒श्वाहा॑ शर्म॒ यच्छ॑तु॥ कव॑चाय हुम्॥



॥ प्रतिपूरुषम् (सं०) ॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ८/अनुवाकः - ६)

प्र॒ति॒पू॒रु॒षमे॑क॒कपाला॒न्निर्व॑प॒त्येक॒मति॑रिक्तं॒ याव॑न्तो गृ॒ह्याः॑
 स्मस्ते॑भ्यः॒ कम॑करं पशूनां॑ शर्मा॑सि॒ शर्म॑ यज॑मानस्य॒
 शर्म॑ मे य॒च्छैकं॑ ए॒व रु॒द्रो न॑ द्वितीयाय तस्थ आ॒खुस्ते॑
 रु॒द्र प॒शुस्तं॑ जु॒षस्वैष॑ ते॒ रुद्र॑ भा॒गः स॒ह स्व॒स्त्राऽम्बि॑कया॒
 तं जु॑षस्व भेष॒जं ग॒वेऽश्वा॑य॒ पुरु॑षाय भेष॒जमथो॑ अ॒स्मभ्य॑
 भेष॒जं सु॒भेष॑जं॒ यथाऽस॑ति। सु॒गं मे॒षाय॑ मे॒ष्या॑ अवा॑म्ब

रुद्रमदिमह्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नः श्रेयंसः करद्यथा नो
वस्यंसः करद्यथा नः पशुमतः करद्यथा नो व्यवसाययात्।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव
बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ एष ते रुद्रभागस्तं जुषस्व
तेनावसेन पुरो मूजवतोऽतीह्यवततधन्वा पिनाकहस्तः
कृत्तिवासाः॥

॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०) ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेककपालान्निर्वपति। जाता एव प्रजा
रुद्रान्निर्वदयते। एकमतिरिक्तम्। जनिष्यमाणा एव
प्रजा रुद्रान्निर्वदयते। एककपाला भवन्ति। एकधैव रुद्रं
निर्वदयते। नाभिघारयति। यदभिघारयेत्। अन्तरवचारिणः
रुद्रं कुर्यात्। एकोल्मुकेन यन्ति। तद्धि रुद्रस्य भागधेयम्।
इमां दिशं यन्ति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायामेव दिशि
रुद्रं निर्वदयते। रुद्रो वा अपशुकाया आहुत्यै नातिष्ठत।
असौ ते पशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टि। तमस्मै
पशुं निर्दिशति। यदि न द्विष्यात्। आखुस्तै पशुरिति
ब्रूयात्। न ग्राम्यान् पशून् हिनस्ति। नऽऽरण्यान्। चतुष्पथे
जुहोति। एष वा अग्नीनां पङ्क्तिशो नाम। अग्निवत्येव
जुहोति। मध्यमेन पर्णेन जुहोति। सुगध्येषा। अथो खलु।

अ॒न्त॒मे॒नै॒व हो॒त॒व्यम्॑। अ॒न्त॒त ए॒व रु॒द्रं नि॒र॒व॒द॒य॒ते। ए॒ष ते॑
 रु॒द्र भा॒गः स॒ह स्व॒स्नाऽम्बि॑क॒येत्या॑ह। श॒र॒द्वा अ॒स्याम्बि॑का
 स्व॒सा। तया॒ वा ए॒ष हि॑न॒स्ति। य॒ः हि॑न॒स्ति। तयै॒वैन॑ः
 स॒ह श॑म॒य॒ति। भे॒ष॒जं ग॒व इ॒त्या॑ह। या॒व॒न्त ए॒व ग्रा॒म्याः
 प॒श॒वः। तेभ्यो॑ भे॒ष॒जं क॑रोति। अ॒वा॒म्ब रु॒द्रम॑दि॒म॒हीत्या॑ह।
 आ॒शिष॑मे॒वैता॒माशा॑स्ते। त्र्य॒म्बकं॑ य॒जाम॑ह॒ इत्या॑ह।
 मृ॒त्योर्मु॑क्षी॒य माऽमृ॒तादि॒ति वा॒वेत॑दा॒ह। उ॒त्कि॑र॒न्ति। भ॒ग॑स्य
 ली॒प्स॒न्ते। मू॒ते कृ॒त्वाऽऽस॑ज॒न्ति। यथा॒ जनं॑ य॒तेऽव॑सं
 क॒रोति॑। ता॒दृगे॒व तत्। ए॒ष ते॑ रु॒द्र भा॒ग इत्या॑ह नि॒र॒व॒त्यै।
 अ॒प्र॒तीक्ष॑मा॒य॒न्ति। अ॒पः परि॑षि॒ञ्च॒ति। रु॒द्रस्या॒न्तर्हि॑त्यै। प्र
 वा ए॒ते॒स्मा॒ल्लो॒काच्च॑व॒न्ते। ये त्र्य॒म्बकै॑श्चर॒न्ति। आ॒दि॒त्यं
 च॒रुं पु॒नरे॒त्य नि॒र्व॒प॒ति। इ॒यं वा अ॒दि॒तिः। अ॒स्यामे॒व
 प्र॒ति॒ति॒ष्ठ॒न्ति।

नेत्रत्रयाय वौषट्॥



॥ शतरुद्रीयम् (सं०) ॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - १४)

त्वम॑ग्रे रु॒द्रो अ॒सुरो॑ म॒हो दि॒व॒स्त्व॑ः श॒र्धो मा॑रु॒तं पृ॒क्ष
 ई॒शि॒षे। त्वं वा॒तैर॑रु॒णैर्या॑सि शङ्ग॒य॒स्त्वं पृ॒षा वि॑ध॒तः पा॑सि॒ नु
 त्मना॑। आ वो॒ राजा॑नम॒ध्व॒रस्य॑ रु॒द्रः हो॒ता॒रः स॒त्य॒य॒जः॑

रोदस्योः। अग्निं पुरा तनयितोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे
कृणुध्वम्। अग्निर्होता नि षसादा यजीयानुपस्थे मातुः
सुरभावुं लोके। युवां कविः पुरुनिष्ठ ऋतावां धर्ता
कृष्टीनामुत मध्यं इद्धः।

साध्वीमर्कदेववीतिं नो अद्य यज्ञस्य जिह्वामविदाम गुह्याम्।
स आयुराऽगात्सुरभिर्वसानो भद्रामर्कदेवहूतिं नो अद्य।
अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन्।
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना
भात्यन्तः। त्वे वसूनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे
यज्ञियांसः।

क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन्त्सं सौभगानि दधिरे
पावके। तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथक्। अग्ने
कामाय येमिरे। अश्याम् तं काममग्ने तवोत्यश्याम् रयिं
रयिवः सुवीरम्। अश्याम् वाजमभि वाजयन्तोऽश्याम्
द्युम्नमजरऽजरन्ते। श्रेष्ठं यविष्ठ भारताऽग्ने द्युमन्तमा भर।

वसो पुरुस्पृहं रयिम्। स श्वितानस्तन्यतू रौचनस्था
अजरैभिर्नानदद्विर्यविष्ठः। यः पावकः पुरुतमः पुरुणि
पृथून्यग्निरनुयाति भवन्। आयुष्टे विश्वतो दधदयमग्निर्वरण्यः।
पुनस्ते प्राण आयति परा यक्ष्मं सुवामि ते। आयुर्दा अग्ने
हविषो जुषाणो घृतप्रतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु
चारु गव्यं पितेव पुत्रमभिरक्षतादिमम्।

तस्मै ते प्रति॒हर्यते॑ जा॒तवे॑दो वि॒चर्ष॑णे। अ॒ग्ने जना॑मि
सुष्टु॑तिम्। दि॒वस्परि॑ प्रथ॒मं ज॑ज्ञे अ॒ग्निर॒स्मद्वि॑तीयं परि
जा॒तवे॑दाः। तृ॒तीयं॑म॒प्सु नृ॑मणा॒ अज॑स्रमि॒न्धान॑ ए॒नं ज॑रते
स्वा॒धीः। शु॒चिः पा॒वक॑ व॒न्द्योऽग्ने॑ बृ॒हद्वि॑रोच॒से। त्वं
घृ॒तेभि॑राहु॒तः। दृ॒शानो॑ रु॒क्म उ॒र्व्या व्य॑द्यौ॒र्दुर्म॑र्षमायुः श्रि॒ये
रु॒चानः॑। अ॒ग्निर॒मृतो॑ अ॒भव॒द्वयो॑भिर्यदे॒नं द्यौ॑रज॒नय॑त्सुरेताः॑।

आ यदि॒षे नृ॑पतिं तेज॒ आन॑द्बु॒चि रे॒तो नि॑षि॒क्तं द्यौ॑र॒भीकै॑।
अ॒ग्निः श॒र्धम॑नव॒द्यं यु॒वान॑ꣳ स्वा॒धियं॑ ज॒नय॑त्सू॒दय॑च्च। स
तेजी॑यसा॒ मन॑सा॒ त्वोत॑ उ॒त शि॑क्ष स्व॒पत्य॑स्य॒ शिक्षोः॑। अ॒ग्ने
रा॒यो नृ॑तमस्य॒ प्रभू॑तौ भू॒याम॑ ते सुष्टु॒तय॑श्च॒ वस्वः॑। अ॒ग्ने
सह॑न्त॒मा भ॑र द्यु॒मस्य॑ प्रा॒सहा॑ र॒यिम्।

वि॒श्वा यश्च॑र्ष॒णीर॒भ्यासा॑ वा॒जेषु॑ सा॒सह॑त्। तम॑ग्ने पृ॒तना॒
सह॑ꣳ र॒यिꣳ सह॑स्व आ भ॑र। त्वꣳ हि स॒त्यो अ॒द्भुतो॑
दा॒ता वा॑ज॒स्य गो॑म॒तः। उ॒क्षान्ना॑य॒ वशा॑न्नाय॒ सोम॑पृ॒ष्ठाय॑
वे॒धसे॑। स्तोमै॑र्वि॒धेमा॒ग्रये॑। व॒द्म हि सू॒नो अ॒स्य॑द्म॒सद्वा च॑क्रे
अ॒ग्निर्ज॒नुषा॑ऽज्माऽन्नम्। स त्वं न॑ ऊ॒र्जस॑न् ऊ॒र्ज धा॒ राजे॑व
जे॒रवृ॑के क्षे॒प्यन्तः॑।

अ॒ग्न आयू॑ꣳषि पव॒स आ सु॒वोर्ज॑मिषं च नः। आ॒रे बा॑धस्व
दु॒च्छुना॑म्। अ॒ग्ने पव॑स्व॒ स्वपा॑ अ॒स्मे वर्चः॑ सु॒वीर्य॑म्।
दध॑त्पोषꣳ र॒यिं म॒यि। अ॒ग्ने पा॒वक॑ रो॒चिषा॑ म॒न्द्रया॑ दे॒व

जिह्वया॥ आ देवान् वक्षि यक्षि च। स नः पावक दीदिवोऽग्ने
 देवाः इहऽऽवह। उप यज्ञः हविश्च नः। अग्निः शुचिं
 व्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः। शुचीं रोचत आहुतः। उदग्ने
 शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते। तव ज्योतीं ष्यर्चयः॥

॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०) ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः। त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष
 ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यासि शङ्गयः। त्वं पूषा विधृतः
 पांसि नु त्मना॥ देवां देवेषु श्रयध्वम्। प्रथमा द्वितीयेषु
 श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषु
 श्रयध्वम्। चतुर्थाः पञ्चमेषु श्रयध्वम्। पञ्चमाः षष्ठेषु
 श्रयध्वम्॥ षष्ठाः सप्तमेषु श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषु
 श्रयध्वम्। अष्टमा नवमेषु श्रयध्वम्। नवमा दशमेषु
 श्रयध्वम्। दशमा एकादशेषु श्रयध्वम्। एकादशा द्वादशेषु
 श्रयध्वम्। द्वादशात्रयोदशेषु श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चतुर्दशेषु
 श्रयध्वम्। चतुर्दशाः पञ्चदशेषु श्रयध्वम्। पञ्चदशाः
 षोडशेषु श्रयध्वम्॥ षोडशाः सप्तदशेषु श्रयध्वम्।
 सप्तदशा अष्टादशेषु श्रयध्वम्। अष्टादशा एकान्नविंशेषु
 श्रयध्वम्। एकान्नविंशा विंशेषु श्रयध्वम्। विंशा
 एकविंशेषु श्रयध्वम्। एकविंशा द्वाविंशेषु श्रयध्वम्।

द्वाविंशत्योविंशेषु श्रयध्वम्। त्रयोविंशश्चतुर्विंशेषु
 श्रयध्वम्। चतुर्विंशः पञ्चविंशेषु श्रयध्वम्। पञ्चविंशः
 षड्विंशेषु श्रयध्वम्॥ षड्विंशः सप्तविंशेषु श्रयध्वम्।
 सप्तविंशा अष्टाविंशेषु श्रयध्वम्। अष्टाविंशा
 ऐकान्नत्रिंशेषु श्रयध्वम्। ऐकान्नत्रिंशस्त्रिंशेषु
 श्रयध्वम्। त्रिंशा ऐकत्रिंशेषु श्रयध्वम्। ऐकत्रिंशा
 द्वात्रिंशेषु श्रयध्वम्। द्वात्रिंशस्त्रिंशस्त्रिंशेषु श्रयध्वम्।
 देवास्त्रिरकादशास्त्रिंशस्त्रिंशः। उत्तरे भवत। उत्तरवर्त्मान्
 उत्तरसत्वानः। यत्काम इदं जुहोमि। तन्मे समृध्यताम्।
 वयं स्याम पतयो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥
 ॐ भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥ अस्त्राय फट्॥

॥ पञ्चाङ्गम् ॥

हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
 नृषद्वरसदृतसद्धौमसदजा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋत
 बृहत्॥

प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
 यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

तत्संवितुर्वृणीमहे। वयं देवस्य भोजनम्।
 श्रेष्ठं सर्वधातमम्। तुरं भगस्य धीमहि॥
 विष्णुर्योनिं कल्पयतु। त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
 आसिंश्चतु प्रजापतिः। धाता गर्भं दधातु ते॥



॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः ॥

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकं आसीत्।
 सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
 [उरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥१॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
 य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
 [शिरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥२॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः।
 सबुधिया उपमा अस्य विष्टाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥१॥
 [दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो
 भरीमभिः॥

[मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥

उप॑श्वासय पृ॒थि॒वीमु॒त द्यां पु॑रु॒त्रा ते॑ म॒नुतां॑ वि॒ष्टि॑तं जग॑त्।
स दु॑न्दु॒भे स॒जूरि॒न्द्रेण॑ दे॒वैर्द॑रु॒द्राद्वि॑यी॒यो अप॑सेध॒ शत्रू॑न्॥

[वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अग्ने॑ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒ये अ॒स्मान् वि॒श्वानि॑ दे॒व व॒युना॑नि वि॒द्वान्।
यु॒यो॒ध्य॑स्म॒ङ्गुह॑रा॒णमे॒नो भू॒यि॑ष्ठां ते॒ नम॑ उ॒क्तिं वि॒धेम॥

[पञ्चाम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥

या ते॑ अग्ने॑ रु॒द्रिया॑ त॒नूस्त॑या॒ नः पा॒हि तस्या॑स्ते॒ स्वाहा॑॥

[कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥

इ॒मं य॑मप्र॒स्तर॑मा॒हि सी॒दाऽङ्गि॑रोभिः पि॒तृभिः॑ संवि॒दानः॑।
आ॒त्वा म॒न्त्राः क॒विश॑स्ता व॒हन्त्वे॒ना रा॑जन् ह॒विषा॑ मा॒दय॑स्व॥

[कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥



॥ लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम् ॥

अथऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री रुद्र रूपं ध्यायेत्॥

शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम्।

गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्।

व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥

कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्।

ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥

वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्धधारिणम्।
 अमृते नाप्नुतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥
 दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्।
 नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥
 सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्।
 एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥
 अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित
 एव तीर्थे स्नात्वा उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्लवासा
 ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः
 स्थित्वा आत्मनि देवताः स्थापयेत्॥

॥ लघुन्यासे देवता-स्थापनम् ॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु।
 बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु।
 कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु। वक्त्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्वायुस्तिष्ठतु।
 नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्। कर्णयोरश्विनौ तिष्ठेताम्।
 ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्ध्यादित्यास्तिष्ठन्तु। शिरसि
 महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु। पृष्ठे पिनाकी
 तिष्ठतु। पुरतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्।
 सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बहिः सर्वतोऽग्निज्वालामाला-
 परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं तिष्ठन्तु।

मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥]

अ॒ग्नि॒र्मे वा॒चि श्रि॒तः। वा॒ग्घृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृतै॑।
अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (जिह्वा)

वा॒यु॒र्मे प्रा॒णे श्रि॒तः। प्रा॒णो हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृतै॑।
अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (नासिका)

सू॒र्यो मे चक्षु॑षि श्रि॒तः। चक्षु॑र्हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृतै॑।
अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (नेत्रे)

च॒न्द्रमा॑ मे म॒न॒सि श्रि॒तः। म॒नो हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृतै॑।
अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (वक्षः)

दि॒शो मे श्रो॒त्रे श्रि॒ताः। श्रो॒त्रं हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृतै॑।
अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (श्रोत्रे)

आ॒पो मे रे॒त॒सि श्रि॒ताः। रे॒तो हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृतै॑।
अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (गुह्यम्)

पृ॒थि॒वी मे शरी॑रे श्रि॒ता। शरी॑रं हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑।
अ॒हम॒मृतै॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (शरीरम्)

ओ॒षधि॒व॒न॒स्प॒तयो॑ मे लो॒म॒सु श्रि॒ताः। लो॒मा॒नि हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑।
अ॒हम॒मृतै॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (लोमानि)

इ॒न्द्रो मे ब॒ले श्रि॒तः। ब॒लं हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृतै॑।
अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (बाहू)

प॒र्जन्यो॑ मे मूर्ध्नि श्रि॒तः। मूर्धा॑ हृ॒दये। हृ॒दयं॑ मयि॑। अ॒हम॒मृतै॑।

अमृतं ब्रह्मणि। (शिरः)

ईशानो मे मन्यौ श्रितः। मन्युरहृदये। हृदयं मयि। अहममृते।
अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

आत्मा मं आत्मनि श्रितः। आत्मा हृदये। हृदयं मयि।
अहममृते। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

पुनर्म आत्मा पुनरायुरागात्। पुनः प्राणः पुनराकूतमागात्।
वैश्वानरो रश्मिभिर्वावृधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतस्य गोपाः॥
(सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥)



॥ कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् ॥



॥ षोडशोपचार पूजा ॥



॥ श्रीरुद्रनाम त्रिशती ॥

नमो हिरण्यबाहवे नमः। सेनान्यै नमः।
दिशां च पतये नमः। नमो वृक्षेभ्यो नमः।
हरिकेशेभ्यो नमः। पशूनां पतये नमः।
नमः सस्पिञ्जराय नमः। त्विषीमते नमः।
पथीनां पतये नमः। नमो बभ्रुशाय नमः।

वि॒व्या॒धि॒ने नमः॑। अ॒न्ना॒नां पत॑ये नमः॑।
 नमो॑ हरि॑केशाय॒ नमः॑। उ॒प॒वी॒ति॒ने नमः॑।
 पु॒ष्टा॒नां पत॑ये नमः॑। नमो॑ भ॒व॒स्य हे॒त्यै नमः॑।
 जग॑तां पत॑ये नमः॑। नमो॑ रु॒द्राय॒ नमः॑।
 आ॒त॒ता॒वि॒ने नमः॑। क्षे॒त्रा॒णां पत॑ये नमः॑।
 नमः॑ सू॒ताय॒ नमः॑। अ॒ह॒न्त्याय॒ नमः॑।
 वना॑नां पत॑ये नमः॑। नमो॑ रोहि॑ताय॒ नमः॑।
 स्थ॒प॒त॒ये नमः॑। वृ॒क्षा॒णां पत॑ये नमः॑।
 नमो॑ म॒न्त्रि॒णे नमः॑। वा॒णि॒जाय॒ नमः॑।
 कक्षा॑णां पत॑ये नमः॑। नमो॑ भुव॑न्तये नमः॑।
 वा॒रि॒व॒स्कृ॒ताय॒ नमः॑। ओष॑धीनां पत॑ये नमः॑।
 नम॑ उ॒च्चैर्घो॑षाय॒ नमः॑। आ॒क्र॒न्द॒य॒ते नमः॑।
 प॒त्ती॒नां पत॑ये नमः॑। नमः॑ कृ॒त्स्न॒वी॒ताय॒ नमः॑।
 धाव॑ते नमः॑। सत्त्वं॑नां पत॑ये नमः॑॥

नमः॑ स॒ह॒मा॒नाय॒ नमः॑। नि॒व्या॒धि॒ने नमः॑।
 आ॒व्या॒धि॒नी॒नां पत॑ये नमः॑। नमः॑ ककु॑भाय॒ नमः॑।
 नि॒ष॒ङ्गि॒णे नमः॑। स्ते॒ना॒नां पत॑ये नमः॑।
 नमो॑ नि॒ष॒ङ्गि॒णे नमः॑। इ॒षु॒धि॒म॒ते नमः॑।
 तस्क॑राणां पत॑ये नमः॑। नमो॑ व॒श्व॒ते नमः॑।
 प॒रि॒व॒श्व॒ते नमः॑। स्ता॒यू॒नां पत॑ये नमः॑।

नमो॑ निचे॒रवे॒ नमः॑। परि॒चराय॒ नमः॑।
 अर॑ण्यानां पत॑ये नमः॑। नमः॑ सूका॒विभ्यो॒ नमः॑।
 जिघा॑स॒द्भ्यो॒ नमः॑। मुष्ण॑तां पत॑ये नमः॑।
 नमो॑ऽसि॒मद्भ्यो॒ नमः॑। नक्तं॑ चर॒द्भ्यो॒ नमः॑।
 प्र॒कृन्त॑ानां पत॑ये नमः॑। नम॑ उ॒ष्णीषि॑ने नमः॑।
 गि॒रिच॑राय॒ नमः॑। कुलु॑श्चानां पत॑ये नमः॑।
 नम॑ इषु॒मद्भ्यो॒ नमः॑। धन्वा॒विभ्य॑श्च नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ आत॒न्वाने॑भ्यो नमः॑। प्र॒ति॒द॒धाने॑भ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ आ॒यच्छ॑द्भ्यो नमः॑। वि॒सृज॑द्भ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ऽस्य॒द्भ्यो॒ नमः॑। वि॒ध्य॑द्भ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ आ॒सी॒नेभ्यो॒ नमः॑। शया॑नेभ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ स्व॒पद्भ्यो॒ नमः॑। जाग्र॑द्भ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑स्तिष्ठ॒द्भ्यो॒ नमः॑। धाव॑द्भ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ स॒भाभ्यो॒ नमः॑। स॒भाप॑तिभ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ अ॒श्वेभ्यो॒ नमः॑। अ॒श्वप॑तिभ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑॥

नम॑ आ॒व्या॒धिनी॑भ्यो नमः॑। वि॒वि॒ध्य॑न्तीभ्यश्च नमः॑।
 वो॒ नमः॑।
 नम॑ उ॒ग॑णाभ्यो नमः॑। तृ॒हृती॑भ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ गृ॒त्सेभ्यो॒ नमः॑। गृ॒त्सप॑तिभ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ ब्रा॒त॑ेभ्यो नमः॑। ब्रा॒तप॑तिभ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ ग॒णेभ्यो॒ नमः॑। ग॒णप॑तिभ्यश्च नमः॑। वो॒ नमः॑।

नमो॑ वि॒रूपे॑भ्यो॒ नमः॑। वि॒श्वरू॑पेभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ म॒हद्भ्यो॒ नमः॑। क्षु॒ल्लके॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ र॒थिभ्यो॒ नमः॑। अ॒रथे॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ रथे॑भ्यो॒ नमः॑। रथ॑पतिभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ सेना॑भ्यो॒ नमः॑। सेना॑निभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ क्ष॒त्तृभ्यो॒ नमः॑। स॒ङ्ग्रही॑तृभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑स्तक्ष॑भ्यो॒ नमः॑। रथ॑का॒रेभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ कु॒लाले॑भ्यो॒ नमः॑। क॒र्मरि॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ पु॒ञ्जिष्टे॑भ्यो॒ नमः॑। नि॒षादे॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ इषु॑कृद्भ्यो॒ नमः॑। ध॒न्वकृ॑द्भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ मृ॒गयु॑भ्यो॒ नमः॑। श्व॒निभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ श्व॒भ्यो॒ नमः॑। श्व॒पति॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑॥

नमो॑ भ॒वाय॑ च॒ नमः॑। रु॒द्राय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ श॒र्वाय॑ च॒ नमः॑। प॒शुप॑तये च॒ नमः॑।
 नमो॑ नील॑ग्रीवाय च॒ नमः॑। शि॒ति॒कण्ठा॑य च॒ नमः॑।
 नमः॑ क॒पर्दि॑ने च॒ नमः॑। व्यु॒त्तके॑शाय च॒ नमः॑।
 नमः॑ स॒हस्रा॑क्षाय च॒ नमः॑। श॒तध॑न्वने च॒ नमः॑।
 नमो॑ गि॒रि॒शाय॑ च॒ नमः॑। शि॒पि॒वि॒ष्टाय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ मी॒ढुष्ट॑माय च॒ नमः॑। इषु॑मते च॒ नमः॑।
 नमो॑ ह्र॒स्वाय॑ च॒ नमः॑। वा॒म॒नाय॑ च॒ नमः॑।

नमो बृहते च नमः। वर्षीयसे च नमः।
 नमो वृद्धाय च नमः। संवृध्वने च नमः।
 नमो अग्रियाय च नमः। प्रथमाय च नमः।
 नम आशवे च नमः। अजिराय च नमः।
 नमः शीघ्रियाय च नमः। शीभ्याय च नमः।
 नम ऊर्म्याय च नमः। अवस्वन्याय च नमः।
 नमः स्रोतस्याय च नमः। द्वीप्याय च नमः॥

नमो ज्येष्ठाय च नमः। कनिष्ठाय च नमः।
 नमः पूर्वजाय च नमः। अपरजाय च नमः।
 नमो मध्यमाय च नमः। अपगल्भाय च नमः।
 नमो जघन्याय च नमः। बुध्रियाय च नमः।
 नमः सोभ्याय च नमः। प्रतिसर्याय च नमः।
 नमो याम्याय च नमः। क्षेम्याय च नमः।
 नम उर्वर्याय च नमः। खल्याय च नमः।
 नमः श्लोक्याय च नमः। अवसान्याय च नमः।
 नमो वन्याय च नमः। कक्ष्याय च नमः।
 नमः श्रवाय च नमः। प्रतिश्रवाय च नमः।
 नम आशुषेणाय च नमः। आशुरथाय च नमः।
 नमः शूराय च नमः। अवभिन्दते च नमः।
 नमो वर्मिणे च नमः। वरूथिने च नमः।

नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च॒ नमः॑। क॒व॒चिने॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ श्रु॒ताय॑ च॒ नमः॑। श्रु॒त॒से॒नाय॑ च॒ नमः॑॥

नमो॑ दु॒न्दु॒भ्याय॑ च॒ नमः॑। आ॒ह॒न॒न्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ धृ॒ष्णवे॑ च॒ नमः॑। प्र॒मृ॒शाय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ दू॒ताय॑ च॒ नमः॑। प्र॒हि॒ताय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ नि॒ष॒ङ्गि॒णे च॒ नमः॑। इ॒षु॒धि॒मते॑ च॒ नमः॑।
 नम॑स्ती॒क्ष्णेष॑वे च॒ नमः॑। आ॒यु॒धिने॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ स्वा॒यु॒धाय॑ च॒ नमः॑। सु॒ध॒न्व॒ने च॒ नमः॑।
 नमः॑ स्मृ॒त्याय॑ च॒ नमः॑। प॒थ्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ का॒ट्याय॑ च॒ नमः॑। नी॒प्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ सू॒द्याय॑ च॒ नमः॑। स॒र॒स्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ ना॒द्याय॑ च॒ नमः॑। वै॒श॒न्ताय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ कू॒प्याय॑ च॒ नमः॑। अ॒व॒ट्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ व॒र्ष्याय॑ च॒ नमः॑। अ॒व॒र्ष्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ मे॒घ्याय॑ च॒ नमः॑। वि॒द्यु॒त्याय॑ च॒ नमः॑।
 नम॑ ई॒ध्रियाय॑ च॒ नमः॑। आ॒त॒प्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ वा॒त्याय॑ च॒ नमः॑। रे॒ष्मियाय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ वा॒स्त॒व्याय॑ च॒ नमः॑। वा॒स्तु॒पाय॑ च॒ नमः॑॥

नमः॑ सो॒माय॑ च॒ नमः॑। रु॒द्राय॑ च॒ नमः॑।

नमः॑स्ता॒म्राय॑ च॒ नमः॑। अ॒रु॒णाय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ श॒ङ्गाय॑ च॒ नमः॑। प॒शु॒पत॑ये च॒ नमः॑।
 नम॑ उ॒ग्राय॑ च॒ नमः॑। भी॒माय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ अ॒ग्नेव॒धाय॑ च॒ नमः॑। दू॒रेव॒धाय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ ह॒न्त्रे च॒ नमः॑। ह॒नीय॑से च॒ नमः॑।
 नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॑ नमः॑। ह॒रि॒केशे॑भ्यो नमः॑।
 नम॑स्ता॒राय॑ नमः॑। नमः॑ श॒म्भवे॑ च॒ नमः॑।
 म॒योभ॑वे च॒ नमः॑। नमः॑ श॒ङ्करा॑य च॒ नमः॑।
 म॒य॒स्क॒राय॑ च॒ नमः॑। नमः॑ शि॒वाय॑ च॒ नमः॑।
 शि॒वत॑राय च॒ नमः॑। नम॑स्ती॒र्थ्याय॑ च॒ नमः॑।
 कू॒ल्याय॑ च॒ नमः॑। नमः॑ पा॒र्याय॑ च॒ नमः॑।
 अ॒वा॒र्याय॑ च॒ नमः॑। नमः॑ प्र॒तर॑णाय च॒ नमः॑।
 उ॒त्तर॑णाय च॒ नमः॑। नम॑ आ॒ता॒र्याय॑ च॒ नमः॑।
 आ॒ला॒द्याय॑ च॒ नमः॑। नमः॑ श॒ष्याय॑ च॒ नमः॑।
 फे॒न्याय॑ च॒ नमः॑। नमः॑ सि॒क॒त्याय॑ च॒ नमः॑।
 प्र॒वा॒ह्याय॑ च॒ नमः॑॥

नम॑ इ॒रि॒ण्याय॑ च॒ नमः॑। प्र॒प॒थ्याय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ कि॒शिला॑य च॒ नमः॑। क्षय॑णाय च॒ नमः॑।
 नमः॑ कप॒र्दि॒ने च॒ नमः॑। पु॒ल॒स्तये॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ गो॒ष्ठ्याय॑ च॒ नमः॑। गृ॒ह्याय॑ च॒ नमः॑।

नमस्तल्प्याय च नमः। गेह्याय च नमः।
 नमः काट्याय च नमः। गृह्णरेष्ठाय च नमः।
 नमो हृदय्याय च नमः। निवेष्ट्याय च नमः।
 नमः पा९सव्याय च नमः। रजस्याय च नमः।
 नमः शुष्क्याय च नमः। हरित्याय च नमः।
 नमो लोप्याय च नमः। उलप्याय च नमः।
 नम ऊर्व्याय च नमः। सूर्म्याय च नमः।
 नमः पुण्याय च नमः। पर्णशद्याय च नमः।
 नमोऽपगुरमाणाय च नमः। अभिघ्नते च नमः।
 नम आखिखदते च नमः। प्रखिखदते च नमः। नमो वो
 नमः।
 किरिकेभ्यो नमः। देवाना९ हृदयेभ्यो नमः।
 नमो विक्षीणकेभ्यो नमः। नमो विचिन्वत्केभ्यो नमः।
 नम आनिर्हृतेभ्यो नमः। नम आमीवत्केभ्यो नमः।



॥ प्रदक्षिणम् ॥

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रन्नीललोहित। एषां पुरुषाणामेषां
 पशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽममत्॥ या ते रुद्र
 शिवा तनूः शिवा विश्वाहभेषजी। शिवा रुद्रस्य भेषजी तया
 नो मृड जीवसे॥ इमा९ रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय

प्रभरामहे म॒तिम्॥ यथा॑ नः॒ शमस॑द्विपदे॒ चतु॑ष्पदे॒ विश्वं॑
 पु॒ष्टं ग्रामे॑ अ॒स्मिन्नना॑तुरम्॥ मृ॒डा नो॑ रु॒द्रोत॑ नो॒ मय॑स्कृधि
 क्षय॑द्वीराय॒ नम॑सा विधेम ते। यच्छं॑ च॒ योश्च॒ मनु॑राय॒जे
 पि॒ता तद॑श्याम॒ तवं रु॒द्र प्रणी॑तौ॥ मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा
 नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न॒ उक्ष॑न्तमु॒त मा न॑ उ॒क्षित॑म्। मा नो॑ऽवधीः
 पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र री॑रिषः॥
 मा न॑स्तो॒के तन॑ये॒ मा न॒ आयु॑षि॒ मा नो॒ गोषु॑ मा नो॒
 अ॒श्वेषु॑ रीरिषः। वी॒रान्मा नो॑ रु॒द्र भामि॑तोऽवधी॒र्हविष्म॑न्तो॒
 नम॑सा विधेम ते॥ आ॒रात्ते॑ गो॒घ्न उ॒त पू॑रुष॒घ्ने क्षय॑द्वीराय
 सु॒म्रम॒स्मे ते॑ अस्तु। रक्षा॑ च नो॒ अधि॑ च दे॒व ब्रू॒ह्यधा॑
 च नः॒ शर्म॑ यच्छ॒ द्विब॑र्हः॥ स्तु॒हि श्रु॑तं ग॒र्तसदं॑ यु॒वानं॑
 मृ॒गं न भी॑ममु॒पह॑तुमु॒ग्रम्। मृ॒डा ज॑रि॒त्रे रु॒द्र स्तवा॑नो
 अ॒न्यन्ते॑ अ॒स्मन्नि॑व॒पन्तु॑ सेनाः॥ परि॑णो रु॒द्रस्य॑ हे॒तिर्वृ॑णक्तु
 परि॑ त्वे॒षस्य॑ दु॒र्मति॑र॒घायोः॑। अ॒व स्थि॑रा म॒घव॑द्ध्यस्त॒नुष्व
 मी॒ढ्वस्तो॑काय॒ तन॑याय मृ॒डय॑॥ मी॒ढुष्ट॑म॒ शिव॑तम॒ शिवो नः॑
 सु॒मना॑ भव। प॒रमे॑ वृ॒क्ष आयु॑धं नि॒धाय॑ कृ॒त्तिं वसा॑न॒ आ
 च॑र॒ पिना॑कं बिभ्र॒दा ग॑हि॥ वि॒कि॑रि॒द विलो॑हित॒ नम॑स्ते
 अस्तु॑ भगवः। यास्ते॑ स॒हस्र॑ हे॒तयो॑ऽन्यम॒स्मन्नि॑व॒पन्तु॑
 ताः॥ स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑धा बा॒हुवो॑स्त॒र्व हे॒तयः॑। तासा॒मीशा॑नो
 भगवः॑ प॒राची॑ना॒ मुखा॑ कृधि॥ प्रदक्षिणं कृत्वा॥



॥ नमस्काराः ॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषां
सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो
नमः॥ १ ॥

अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भुवा अधि। तेषां सहस्रयोजने-
ऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥ २ ॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षमाचुराः। तेषां
सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो
नमः॥ ३ ॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवः रुद्रा उपश्रिताः। तेषां
सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो
नमः॥ ४ ॥

ये वृक्षेषु सस्पर्शरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषां
सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो
नमः॥ ५ ॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषां
सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो
नमः॥ ६ ॥

ये अत्रेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबन्तो जनान्। तेषां
सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो
नमः॥ ७ ॥

ये प॒थां प॑थि॒रक्ष॑य ऐ॒लबृ॑दा य॒व्युधः॑। तेषां॑ सहस्रयोज॒ने-
ऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥८॥

ये ती॒र्थानि॑ प्र॒चर॑न्ति सृ॒काव॑न्तो निष॒ङ्गिणः॑। तेषां॑
सहस्रयोज॒नेऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो
नमः॥९॥

य ए॒ताव॑न्तश्च॒ भूया॑ंसश्च॒ दिशो॑ रु॒द्रा वि॑तस्थि॒रे। तेषां॑
सहस्रयोज॒नेऽव॒धन्वा॑नि तन्मसि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो
नमः॥१०॥

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये पृ॑थि॒व्यां येषा॑म॒न्नमिष॑व॒स्तेभ्यो॑ दश॒ प्राची॑र्दश॒
दक्षि॑णा दश॒ प्र॒तीची॑र्दशो॒दीची॑र्दशो॒र्ध्वास्ते॑भ्यो॒ नम॑स्ते नो॒
मृड॑यन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं वो॒ जम्भे॑ दधामि।
श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥११॥

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ येऽन्तरि॑क्षे येषां॑ वा॒त इष॑व॒स्तेभ्यो॑ दश॒
प्राची॑र्दश॒ दक्षि॑णा दश॒ प्र॒तीची॑र्दशो॒दीची॑र्दशो॒र्ध्वास्ते॑भ्यो॒
नम॑स्ते नो॒ मृड॑यन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं वो॒ जम्भे॑
दधामि। श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥१२॥

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॑ ये दि॒वि येषां॑ व॒र्षमिष॑व॒स्तेभ्यो॑ दश॒ प्राची॑र्दश॒
दक्षि॑णा दश॒ प्र॒तीची॑र्दशो॒दीची॑र्दशो॒र्ध्वास्ते॑भ्यो॒ नम॑स्ते नो॒
मृड॑यन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॑ तं वो॒ जम्भे॑ दधामि।
श्री महादे॒वादि॒भ्यो नमः॥१३॥

नमस्कारान् कृत्वा॥



॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना ॥

अ॒ग्रा॒विष्णू॑ स॒जोष॑से॒मा व॑र्धन्तु वां॒ गिरः॑ । द्यु॒मैर्वा॒जैर्भिरा॑ग॒तम् ॥
 वा॒जश्च॑ मे प्र॒स॒वश्च॑ मे प्र॒य॒तिश्च॑ मे प्र॒सि॒तिश्च॑ मे धी॒तिश्च॑
 मे क्र॒तुश्च॑ मे स्वर॑श्च मे श्लो॒कश्च॑ मे श्रा॒वश्च॑ मे श्रु॒तिश्च॑ मे
 ज्यो॒तिश्च॑ मे सु॒वश्च॑ मे प्रा॒णश्च॑ मेऽपान॑श्च मे व्या॒नश्च॑ मेऽसु॑श्च
 मे चि॒त्तं च॑ म आ॒धी॒तं च॑ मे वाक्क॑ मे म॒नश्च॑ मे चक्षु॑श्च
 मे श्रो॒त्रं च॑ मे दक्ष॑श्च मे ब॒लं च॑ म ओज॑श्च मे स॒हश्च॑ म
 आयु॑श्च मे ज॒रा च॑ म आ॒त्मा च॑ मे त॒नूश्च॑ मे श॒र्म च॑
 मे वर्म॑ च मेऽङ्गा॒नि च॑ मेऽस्थानि॑ च मे प॒रू॒षि च॑ मे
 शरी॑राणि च मे ॥१॥

ज्यैष्ठ्यं॑ च म आधि॑पत्यं च मे म॒न्युश्च॑ मे भा॒मश्च॑ मेऽम॑श्च
 मेऽम्भ॑श्च मे जे॒मा च॑ मे म॒हि॒मा च॑ मे व॒रि॒मा च॑ मे प्रथि॑मा
 च॑ मे व॒र्ष्मा च॑ मे द्राघु॑या च॑ मे वृ॒द्धं च॑ मे वृ॒द्धिश्च॑ मे स॒त्यं
 च॑ मे श्र॒द्धा च॑ मे जग॑च्च मे ध॒नं च॑ मे व॒शश्च॑ मे त्विषि॑श्च
 मे क्री॒डा च॑ मे मोद॑श्च मे जा॒तं च॑ मे ज॒नि॒ष्यमा॑णं च मे
 सू॒क्तं च॑ मे सु॒कृतं॑ च॑ मे वि॒त्तं च॑ मे वेद्यं॑ च मे भू॒तं च॑ मे
 भवि॑ष्यच्च॑ मे सु॒गं च॑ मे सु॒पथं॑ च म ऋ॒द्धं च॑ म ऋ॒द्धिश्च॑ मे
 क्लृ॒प्तं च॑ मे क्लृ॒प्तिश्च॑ मे म॒तिश्च॑ मे सु॒म॒तिश्च॑ मे ॥२॥

शं च॑ मे म॒यश्च॑ मे प्रि॒यं च॑ मेऽनु॒का॒मश्च॑ मे का॒मश्च॑ मे

सौमन॒सश्च॑ मे भ॒द्रं च॑ मे श्रेय॑श्च मे वस्य॑श्च मे यश॑श्च मे
 भग॑श्च मे द्रवि॑णं च मे य॒न्ता च॑ मे ध॒र्ता च॑ मे क्षेम॑श्च मे
 धृति॑श्च मे वि॒श्वं च॑ मे मह॑श्च मे संवि॑च्च मे ज्ञा॒त्रं च॑ मे सू॒श्च मे
 प्र॒सू॒श्च मे सीरं॑ च मे ल॒यश्च॑ म ऋ॒तं च॑ मेऽमृ॑तं च मेऽय॒क्ष्मं
 च॑ मेऽना॑मयच्च मे जी॒वातु॑श्च मे दी॒र्घायु॑त्वं च॑ मेऽन॒मित्रं॑ च॑
 मेऽभ॑यं च मे सु॒गं च॑ मे श॒यनं॑ च मे सू॒षा च॑ मे सु॒दिनं॑ च
 मे॥३॥

ऊ॒र्क्कं मे सूनृ॑तां च मे प॒यश्च॑ मे रस॑श्च मे घृ॒तं च॑ मे मधु॑ च
 मे स॒ग्धिश्च॑ मे स॒पीति॑श्च मे कृ॒षिश्च॑ मे वृ॒ष्टिश्च॑ मे जै॒त्रं च॑
 म औ॒द्भिद्यं॑ च मे र॒यिश्च॑ मे रा॒यश्च॑ मे पु॒ष्टं च॑ मे पु॒ष्टिश्च॑ मे
 वि॒भु च॑ मे प्र॒भु च॑ मे ब॒हु च॑ मे भू॒यश्च॑ मे पू॒र्णं च॑ मे पू॒र्णतरं॑
 च॑ मेऽक्षि॑तिश्च मे कू॒यवा॑श्च मेऽन्नं॑ च॑ मेऽक्षु॑च्च मे व्री॒हय॑श्च
 मे यवा॑श्च मे मा॒षाश्च॑ मे ति॒लाश्च॑ मे मु॒द्गाश्च॑ मे ख॒ल्वाश्च॑ मे
 गो॒धूमा॑श्च मे म॒सुरा॑श्च मे प्रि॒यङ्ग॑वश्च मेऽण॑वश्च मे श्या॒माका॑श्च
 मे नी॒वारा॑श्च मे॥४॥

अश्मा॑ च मे मृ॒त्तिका॑ च मे गि॒रय॑श्च मे प॒र्वता॑श्च मे सि॒कता॑श्च
 मे वन॑स्पत॒यश्च॑ मे हि॒रण्यं॑ च॑ मेऽय॑श्च मे सी॒सं च॑ मे त्रपु॑श्च
 मे श्या॒मं च॑ मे लो॒हं च॑ मेऽग्नि॑श्च म॒ आप॑श्च मे वी॒रुध॑श्च
 म॒ ओष॑धयश्च मे कृ॒ष्टप॑च्यं च॑ मेऽकृ॒ष्टप॑च्यं च॑ मे ग्रा॒म्याश्च॑
 मे प॒शव॑ आ॒रण्या॑श्च य॒ज्ञेन॑ कल्प॒न्तां वि॒त्तं च॑ मे वि॒त्तिश्च॑ मे

भूतं च मे भूतिश्च मे वसुं च मे वसुतिश्च मे कर्म च मे
शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इतिश्च मे गतिश्च मे॥५॥

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म
इन्द्रश्च मे सरस्वती च म इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे
बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरुणश्च म
इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे धाता च म इन्द्रश्च मे
विष्णुश्च म इन्द्रश्च मेऽश्विनौ च म इन्द्रश्च मे मरुतश्च म
इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे पृथिवी च म इन्द्रश्च
मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म
इन्द्रश्च मे मूर्धा च म इन्द्रश्च मे प्रजापतिश्च म इन्द्रश्च मे॥६॥

अ॒ःशुश्च मे र॒श्मिश्च मेऽदा॑भ्यश्च मेऽधि॑पतिश्च म उपा॒ःशुश्च
मेऽन्तर्या॑मश्च म ऐन्द्र॑वायवश्च मे मैत्रा॑वरुणश्च म आ॒श्विनश्च
मे प्रति॑प्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे म॒न्थी च म आग्र॑यणश्च मे
वैश्व॑देवश्च मे ध्रु॒वश्च मे वैश्वान॑रश्च म ऋतु॑ग्रहाश्च मेऽति॑ग्राह्याश्च
म ऐन्द्रा॑ग्रश्च मे वैश्व॑देवश्च मे मरु॑त्वतीयाश्च मे माहेन्द्रश्च
म आदि॑त्यश्च मे सावि॑त्रश्च मे सार॑स्वतश्च मे पौ॒ष्णश्च मे
पाली॑वतश्च मे हारि॑योजनश्च मे॥७॥

इ॒ध्मश्च मे ब॒र्हिश्च मे वेदि॑श्च मे धि॒ष्णि॒याश्च मे सु॒चश्च मे
चम॑साश्च मे ग्रा॒वा॒णश्च मे स्वर॑वश्च म उप॒र॒वाश्च मेऽधि॑षवणे च
मे द्रो॑णकल॒शश्च मे वा॒य॒व्यानि॑ च मे पू॒त॒भृच्च॑ म आ॒ध॒व॒नीय॑श्च
म आ॒ग्नी॑ध्रं च मे ह॒वि॒र्धानं॑ च मे गृ॒हाश्च मे स॒द॑श्च मे

पुरोडाशांश्च मे पचतांश्च मेऽवभृथंश्च मे स्वगाकारंश्च मे॥८॥

अग्निंश्च मे घर्मंश्च मेऽर्कंश्च मे सूर्यंश्च मे प्राणंश्च मेऽश्वमेधंश्च मे
पृथिवी च मेऽदितिंश्च मे दितिंश्च मे द्यौश्च मे शक्रं रीरुङ्गुलं यो
दिशंश्च मे यज्ञेन कल्पन्तामृक्कं मे सामं च मे स्तोमंश्च
मे यजुंश्च मे दीक्षा च मे तपंश्च म ऋतुंश्च मे व्रतं च
मेऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम्॥९॥

गर्भांश्च मे वत्सांश्च मे त्र्यविंश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाच्च
मे दित्यौही च मे पश्चाविंश्च मे पश्चावी च मे त्रिवत्संश्च मे
त्रिवत्सा च मे तुर्यवाच्च मे तुर्यौही च मे पष्ठवाच्च मे पष्ठौही च
म उक्षा च मे वशा च म ऋषभंश्च मे वेहच्च मेऽनङ्गां च मे धेनुंश्च
म आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतामपानो यज्ञेन
कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं
यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा
यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्॥१०॥

एकां च मे तिस्रंश्च मे पञ्चं च मे सप्तं च मे नवं च म
एकादशं च मे त्रयोदशं च मे पञ्चदशं च मे सप्तदशं च
मे नवदशं च म एकविंशतिंश्च मे त्रयोविंशतिंश्च मे
पञ्चविंशतिंश्च मे सप्तविंशतिंश्च मे नवविंशतिंश्च म
एकत्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे चतस्रंश्च मेऽष्टौ च मे
द्वादशं च मे षोडशं च मे विंशतिंश्च मे चतुर्विंशतिंश्च
मेऽष्टाविंशतिंश्च मे द्वात्रिंशच्च मे षट्त्रिंशच्च मे

चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मेऽष्टाचत्वारिंशच्च
मे वाजंश्च प्रसवश्चापिजश्च ऋतुश्च सुवंश्च मूर्धा च
व्यश्रियश्चान्त्यायनश्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चाधिपतिश्च॥११॥

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥

इडा देवहर्मनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानि शःसिषद्विधेदेवाः
सूक्तवाचः पृथिवि मातर्मा मां हिःसीर्मधुं मनिष्ये मधुं
जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो
वाचमुद्यासः शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभायै
पितरोऽनुमदन्तु॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।

तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-
ऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।

तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ (दशवारं जपेत्।)

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥



॥ प्रार्थना ॥



॥ श्रीरुद्रजपः ॥

अस्य श्री रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्त्रस्य। अघोर ऋषिः।
अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः
परमपुरुषः स एष रुद्रो देवता॥

नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः।
महादेवायेति कीलकम्।
श्री साम्बसदाशिवप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

॥ करन्यासः ॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः।
चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः।
निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः।
ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
सर्वक्रत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥ अङ्गन्यासः ॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः।
 दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा।
 चातुर्मास्यात्मने शिखायै वषट्।
 निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं।
 ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।
 सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्।
 भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

॥ ध्यानम् ॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत्
 ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णेन्दु-वान्तामृतैः।
 अस्तोकाप्लुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन्
 ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिञ्चेच्छिवम्॥
 ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भसित-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गैः
 कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित-शशि-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः।
 त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः
 रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥
 ॥ पञ्चपूजा ॥

लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि।
 हं आकाशात्मने पूष्पैः पूजयामि।
 यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि।

रं अग्न्यात्मने दीपं दर्शयामि।

वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि।

सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद
सादनम्॥

ॐ महागणपतये नमः॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे
सौमनसश्च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे
भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे
धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे
प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च
मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं
च मे सुगं च मे शयनं च मे सूषा च मे सुदिनं च मे॥३॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु
धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः॥ या त इषुः शिवतमा शिवं

ब॒भूव॑ ते॒ धनुः॑। शि॒वा शं॒र॒व्या॑ या तव॒ तया॑ नो रुद्र मृडय॥
 या ते॑ रुद्र शि॒वा त॒नूर॑घोराऽपा॑पकाशिनी। तया॑ नस्त॒नुवा॑
 शन्त॑मया॒ गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि॥ यामिषु॑ गिरिशन्त॒ हस्ते॑
 बिभ॑र्ष्यस्तवे। शि॒वां गिरि॑त्र तां कुरु॒ मा हि॑सीः पुरुषं
 जग॑त्॥ शिवे॒न वच॑सा त्वा॒ गिरि॑शाच्छा॒वदाम॑सि। यथा॑
 नः॒ सर्व॑मि॒ज्जग॑दय॒क्ष्मः सु॒मना॑ असत्॥ अ॒ध्य॒वोच॑दधि॒वक्ता॑
 प्र॒थ॒मो दै॒व्यो भि॒षक्। अही॑श्च॒ सर्वा॑ञ्ज॒म्भय॑न्त्सर्वा॑श्च
 यातु॑धान्यः॥ अ॒सौ यस्ता॑म्रो अ॒रुण॑ उ॒त ब॒भ्रुः सु॒मङ्ग॑लः।
 ये चे॒माः रु॒द्रा अ॒भितो॑ दि॒क्षु श्रि॒ताः स॒हस्र॑शोऽवैषा॑ः हेडं
 ईम॑हे॥ अ॒सौ योऽव॑सर्पति॒ नील॑ग्रीवो॒ विलो॑हितः। उ॒तैनं॑
 गो॒पा अ॑दृश॒न्नदृ॑शन्नुदहा॒र्यः॥ उ॒तैनं॑ वि॒श्वा भू॒तानि॑ स दृष्टो
 मृ॒डया॑ति नः। नमो॑ अस्तु॒ नील॑ग्रीवाय॒ सह॑स्रा॒क्षाय॑ मी॒ढुषै॑॥
 अथो॒ ये अ॑स्य॒ सत्वा॑नोऽहं॒ तेभ्यो॑ऽकरं॒ नमः॑। प्र मु॑ञ्च
 धन्व॑न॒स्त्वमु॒भयो॒रारि॑यो॒ज्याम्॥ याश्च॑ ते॒ हस्त॑ इष॒वः परा॑
 ता भ॑गवो वप। अ॒व॒तत्य॑ धनु॒स्त्वः सह॑स्राक्ष॒ शतै॑षुधे॥
 नि॒शीर्य॑ श॒ल्यानां॑ मु॒खा शि॒वो नः॑ सु॒मना॑ भव। विज्यं॑
 धनुः॑ कप॒र्दिनो॑ वि॒शल्यो॑ बाण॒वाः उ॒त॥ अने॑शन्न॒स्येष॑व
 आ॒भुर॑स्य निष॒ङ्गथिः॑। या ते॑ हे॒तिर्मी॑ढुष्ट॒म हस्ते॑ ब॒भूव॑
 ते॒ धनुः॑॥ तया॑ऽस्मान् वि॒श्वत॑स्त्वम॒यक्ष्मया॑ परि॒भुज॑।
 नम॑स्ते अ॒स्त्वायु॑धा॒याना॑तताय धृ॒ष्णवै॑॥ उ॒भाभ्या॑मु॒त ते॑

नमो॑ बा॒हुभ्यां॑ तव॒ धन्व॑ने। परि॑ ते॒ धन्व॑नो हे॒तिर॒स्मान्बृ॑णक्तु
वि॒श्वतः॑॥ अथो॒ य इ॑षुधिस्तव॒ऽऽरे॒ अ॒स्मन्नि धे॑हि॒ तम्॥१॥

[नम॑स्ते अस्तु॒ भगवन्॑ वि॒श्वेश्व॑राय॒ महा॑दे॒वाय॒ त्र्यम्ब॑काय॒
त्रिपु॑रान्त॒काय॒ त्रिका॑[ला]ग्निका॒लाय॒ काला॑ग्निरु॒द्राय॒
नील॑क॒ण्ठाय॒ मृत्यु॑ञ्ज॒याय॒ सर्वेश्व॑राय॒ सदा॑शि॒वाय॒
श्रीमन्महा॑दे॒वाय॒ नमः॑॥]

नमो॑ हि॒र॑ण्यबा॒हवे॑ सेना॒न्ये दि॒शां च॒ पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॑
हरि॑केशेभ्यः पशू॒नां पत॑ये॒ नमो॑ नमः॑ स॒स्मिञ्ज॑राय॒ त्विषी॑मते
पथी॒नां पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑ बभ्रु॒शाय॒ विव्या॑धिनेऽन्ना॒नां पत॑ये॒
नमो॑ नमो॑ हरि॑केशायोपवी॒तिने॑ पु॒ष्टा॒नां पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑
भ॒वस्य॑ हे॒त्यै जग॑तां॒ पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑ रु॒द्राया॑तता॒विने॒
क्षेत्रा॑णां॒ पत॑ये॒ नमो॑ नमः॑ सू॒ताया॑ह॒न्त्याय॒ वना॑नां॒ पत॑ये॒
नमो॑ नमो॑ रोहि॑ताय॒ स्थप॑तये॒ वृक्षा॑णां॒ पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑
म॒न्त्रिणे॑ वाणि॒जाय॒ कक्षा॑णां॒ पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑ भुव॒न्तये॑
वारि॑वस्कृ॒तायौष॑धीनां॒ पत॑ये॒ नमो॑ नमः॑ उ॒च्चैर्घो॑षायाक्र॒न्दय॑ते
पत्ती॑नां॒ पत॑ये॒ नमो॑ नमः॑ कृ॒त्स्नवी॑ताय॒ धाव॑ते॒ सत्व॑नां॒ पत॑ये॒
नमः॑॥२॥

नमः॑ स॒ह॒मा॒नाय॑ निव्या॒धिने॑ आ॒व्या॒धिनी॑नां॒ पत॑ये॒ नमो॑ नमः॑
ककु॑भाय॒ निष॑ङ्गि॒णे स्ते॒ना॒नां पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑ निष॑ङ्गि॒णं
इषु॑धि॒मते॒ तस्क॑राणां॒ पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑ व॒ञ्चते॒ परि॑व॒ञ्चते॒
स्तायू॑नां॒ पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑ नि॒चे॒रवे॑ परि॒च॒राया॑र॒ण्यानां॒ पत॑ये॒

नमो॑ नमः॑ सृ॒का॒वि॒भ्यो॒ जि॒घा॑ꣳस॒द्भ्यो॒ मु॒ष्ण॒तां प॒तये॑ नमो॑
 नमो॑ऽसि॒म॒द्भ्यो॒ न॒क्तं च॒र॒द्भ्यः प्र॒कृ॒न्ता॒नां प॒तये॑ नमो॑ नमः॑
 उ॒ष्णी॒षिण॑ गि॒रि॒च॒राय॑ कु॒लु॒श्वा॒नां प॒तये॑ नमो॑ नमः॑ इ॒षु॒म॒द्भ्यो
 ध॒न्वा॒वि॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमः॑ आ॒त॒न्वा॒ने॒भ्यः प्र॒ति॒द॒धा॒ने॒भ्यश्च॑ वो॒
 नमो॑ नमः॑ आ॒य॒च्छ॒द्भ्यो वि॒सृ॒ज॒द्भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमो॑ऽस्य॒द्भ्यो
 वि॒ध्य॒द्भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमः॑ आ॒सी॒ने॒भ्यः श॒या॒ने॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑
 नमः॑ स्व॒प॒द्भ्यो जा॒ग्र॒द्भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नम॒स्ति॒ष्ठ॒द्भ्यो धा॒व॒द्भ्यश्च॑
 वो॒ नमो॑ नमः॑ स॒भा॒भ्यः स॒भा॒प॒ति॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमो॑
 अ॒श्वे॒भ्योऽश्व॑प॒ति॒भ्यश्च॑ वो॒ नमः॑ ॥ ३ ॥

नमः॑ आ॒व्या॒धि॒नी॒भ्यो वि॒वि॒ध्य॒न्ती॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमः॑
 उ॒ग॒णा॒भ्यस्तृ॑ꣳह॒ती॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमो॑ गृ॒त्से॒भ्यो
 गृ॒त्स॒प॒ति॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमो॑ ब्रा॒ते॒भ्यो ब्रा॒त॒प॒ति॒भ्यश्च॑
 वो॒ नमो॑ नमो॑ ग॒णे॒भ्यो ग॒ण॒प॒ति॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमो॑
 वि॒रू॒पे॒भ्यो वि॒श्व॒रू॒पे॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमो॑ म॒ह॒द्भ्यः, क्षु॒ल्ल॒के॒भ्यश्च॑
 वो॒ नमो॑ नमो॑ र॒थि॒भ्योऽर॒थे॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमो॑ र॒थे॒भ्यो
 र॒थ॒प॒ति॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमः॑ से॒ना॒भ्यः से॒ना॒नि॒भ्यश्च॑ वो॒
 नमो॑ नमः॑, क्ष॒त्तृ॒भ्यः स॒ङ्ग॒ही॒तृ॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नम॒स्तक्ष॑भ्यो
 र॒थ॒का॒रे॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमः॑ कु॒ला॒ले॒भ्यः क॒र्मा॒रे॒भ्यश्च॑ वो॒
 नमो॑ नमः॑ पु॒ञ्जि॒ष्टे॒भ्यो नि॒षा॒दे॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमः॑ इ॒षु॒कृ॒द्भ्यो
 ध॒न्व॒कृ॒द्भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑ नमो॑ मृ॒ग॒यु॒भ्यः श्व॒नि॒भ्यश्च॑ वो॒ नमो॑
 नमः॑ श्व॒भ्यः श्व॒प॒ति॒भ्यश्च॑ वो॒ नमः॑ ॥ ४ ॥

नमो भुवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो
नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने च व्युत्तकेशाय
च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशाय च
शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ह्रस्वाय
च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय
च संवृध्वने च नमो अग्रियाय च प्रथमाय च नमो आशवे
चाजिराय च नमः शीघ्रियाय च शीभ्याय च नमो ऊर्म्याय
चावस्वन्याय च नमः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च॥५॥

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च
नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्रियाय
च नमः सोभ्याय च प्रतिसूर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय
च नमो उर्वर्याय च खल्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय
च नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय
च नमो आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभिन्दते
च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमो बिल्मिने च कवचिने
च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च॥६॥

नमो दुन्दुभ्याय चऽऽहन्याय च नमो धृष्णवे च प्रमृशाय
च नमो दूताय च प्रहिताय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च
नमस्तीक्ष्णेषवे चऽऽयुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने
च नमः सुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय
च नमः सूद्याय च सरस्याय च नमो नाद्याय च वैशन्ताय

च नमः कू॒प्याय चाव॒ट्याय च नमो व॒र्ष्याय चाव॒र्ष्याय च
 नमो मे॒घ्याय च वि॒द्युत्याय च नम ई॒ध्रियाय चऽऽत॒प्याय च
 नमो वा॒त्याय च रे॒ष्मियाय च नमो वा॒स्त॒व्याय च वा॒स्तु॒पाय
 च॥७॥

नमः सो॒माय च रु॒द्राय च नमस्ता॒म्राय चारु॒णाय च नमः
 श॒ङ्गाय च पशु॑प॒तये च नम उ॒ग्राय च भी॒माय च नमो
 अ॒ग्रेव॒धाय च दू॒रेव॒धाय च नमो ह॒त्रे च ह॒नीय॑से च नमो
 वृ॒क्षेभ्यो ह॒रि॒केशे॑भ्यो नमस्ता॒राय नमः श॒म्भवे॑ च म॒योभवे॑ च
 नमः शङ्क॒राय च म॒यस्क॒राय च नमः शि॒वाय च शि॒वत॑राय
 च नमस्ती॒र्थ्याय च कू॒ल्याय च नमः पा॒र्याय चावा॒र्याय च
 नमः प्र॒तर॑णाय चो॒त्तर॑णाय च नम आ॒ता॒र्याय चऽऽला॒द्याय
 च नमः श॒ष्याय च फे॒न्याय च नमः सि॒क्त्याय च प्र॒वा॒ह्याय
 च॥८॥

नम इ॒रि॒ण्याय च प्र॒प॒थ्याय च नमः कि॒शिला॑य च क्ष॒य॑णाय
 च नमः क॒पर्दि॑ने च पु॒ल॒स्तये॑ च नमो गो॒ष्ठ्याय च गृ॒ह्याय
 च नमस्त॒ल्प्याय च गे॒ह्याय च नमः का॒ट्याय च ग॒ह्वरे॑ष्ठाय
 च नमो हृ॒द॒य्याय च नि॒वे॒ष्याय च नमः पा॒स॒व्याय च
 रज॒स्याय च नमः शु॒ष्क्याय च ह॒रि॒त्याय च नमो लो॒प्याय
 चो॒ल॒प्याय च नम ऊ॒र्व्याय च सूर्म्या॑य च नमः प॒र्ण्याय च
 पर्ण॑श॒द्याय च नमोऽप॒गु॒रमा॑णाय चाभिघ्न॒ते च नम आ॒खि॒ब॒द॒ते

च॑ प्रखि॒वद॑ते च॒ नमो॑ वः कि॒रि॒केभ्यो॑ दे॒वाना॑ꣳ हृद॑येभ्यो
नमो॑ वि॒क्षी॒णके॑भ्यो नमो॑ वि॒चि॒न्व॒त्केभ्यो॑ नम॑ आ॒नि॒र॒ह॒तेभ्यो॑
नम॑ आ॒मी॒व॒त्केभ्यः॑ ॥ ९ ॥

द्रा॒पे अ॒न्य॑स॒स्पते॑ दरि॒द्र॒त्रील॑लो॒हित॑ । ए॒षां पु॒रु॒षाणा॑मे॒षां
प॑शूनां मा भे॒र्माऽरो॑ मो ए॒षां किं॑ च॒नऽऽम॑मत् ॥ या ते॑ रु॒द्र
शि॒वा त॒नूः शि॒वा वि॒श्वाह॑भेष॒जी । शि॒वा रु॒द्रस्य॑ भेष॒जी तया॑
नो मृ॒ड जी॒वसे॑ ॥ इ॒माꣳ रु॒द्राय॑ त॒वसे॑ क॒प॒र्दि॒ने क्ष॑य॒द्वी॒राय॑
प्रभ॑रामहे म॒तिम् ॥ यथा॑ नः श॒मस॑द्वि॒पदे॑ चतु॑ष्पदे॒ विश्व॑
पु॒ष्टं ग्रामे॑ अ॒स्मिन्न॑ना॒तुर॑म् ॥ मृ॒डा नो॑ रु॒द्रोत॑ नो म॒यस्कृ॑धि
क्ष॑य॒द्वी॒राय॑ नम॑सा वि॒धेम॑ ते । यच्छं॑ च॒ योश्च॑ म॒नुरा॑य॒जे
पि॒ता तद॑श्याम॒ तव॑ रु॒द्र प्र॒णीतौ॑ ॥ मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा
नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न॒ उक्ष॑न्तमु॒त मा न॑ उ॒क्षित॑म् । मा नो॑
व॒धीः पि॒तरं॑ मोत मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र री॑रिषः ॥
मा न॑स्तो॒के तन॑ये॒ मा न॑ आ॒युषि॑ मा नो॒ गोषु॑ मा नो॒
अश्वे॑षु री॒रिषः॑ । वी॒रान्मा॑ नो॒ रुद्र॑ भा॒मितो॑ व॒धीर्ह॒विष्म॑न्तो
नम॑सा वि॒धेम॑ ते ॥ आ॒रात्ते॑ गो॒घ्न उ॒त पू॑रुष॒घ्ने क्ष॑य॒द्वी॒राय॑
सु॒म्रम॑स्मे ते॑ अस्तु । रक्षा॑ च नो॒ अधि॑ च दे॒व ब्रू॑ह॒धा
च नः॑ श॒र्म यच्छ॑ द्वि॒बर्हाः॑ ॥ स्तु॒हि श्रु॑तं ग॒र्तस॑दं यु॒वानं॑
मृ॒गं न भी॑ममु॒पह॑तुमु॒ग्रम् । मृ॒डा ज॑रि॒त्रे रु॒द्र स्त॒वानो॑ अ॒न्यं
ते॑ अ॒स्मन्नि॑ व॒पन्तु॑ से॒नाः ॥ परि॑णो रु॒द्रस्य॑ हे॒तिर्वृ॑णक्तु
परि॑ त्वे॒षस्य॑ दु॒र्मति॑र॒घा॒योः । अव॑ स्थि॒रा म॒घव॑द्भ्यस्त॒नुष्व॑

मीढ्वंस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुष्टम् शिवंतम शिवो नः
 सुमना भव। पुरमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसान् आ
 चर पिनाकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद् विलोहित नमस्ते
 अस्तु भगवः। यास्तौ सहस्रं हेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तु
 ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तव हेतयः। तासामीशानो
 भगवः पराचीना मुखा कृधि॥१०॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषां
 सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे
 भवा अधि॥ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षमाचराः॥
 नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवः रुद्रा उपश्रिताः॥ ये वृक्षेषु
 सस्पर्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो
 विशिखासः कपर्दिनः॥ ये अन्त्रेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबन्तो
 जनान्॥ ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा यव्युधः॥ ये तीर्थानि
 प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः॥ य एतावन्तश्च भूयांसश्च
 दिशो रुद्रा वितस्थिरे॥ तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि
 तन्मसि॥ नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येऽन्तरिक्षे ये दिवि
 येषामन्नं वातो वर्षमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश
 प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं
 द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि॥११॥

[त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव
 बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु

य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय
नमो अस्तु॥ तमुष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य
क्षयति भेषजस्य।

(ऋक्) यक्ष्वा॑म॒हे सौ॑म॒न॒साय॑ रु॒द्रं नमो॑भिर्दे॒वम॑सु॒रं दु॒वस्य॑॥
अ॒यं मे॒ हस्तो॒ भग॑वान॒यं मे॒ भग॑वत्तरः। अ॒यं मे॑ वि॒श्वभे॑षजोऽयं
शि॒वाभि॑मर्शनः॥

ये ते॑ स॒हस्रं॑म॒युतं॑ पाशा॒ मृत्यो॒ मर्त्या॑य॒ हन्त॑वे। तान् य॒ज्ञस्य॑
मा॒यया॑ सर्वा॒नव॑ यजामहे। मृत्यवे॒ स्वाहा॑ मृत्यवे॒ स्वाहा॑॥
ओं नमो॑ भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्यु॒र्मे पा॒हि। प्रा॒णानां॑
ग्रन्थि॑रसि रुद्रो मा॑ वि॒शान्त॑कः। तेना॒न्नेना॑प्याय॒स्व॥ नमो॑
रुद्राय विष्णवे मृत्यु॒र्मे पा॒हि॥]

॥ॐ शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॑॥



॥ चमकप्रश्नः ॥

अ॒ग्रा॑विष्णू स॒जोष॑से॒मा व॑र्धन्तु वा॒ गिरः॑। द्यु॒मैर्वा॑जे॒भिरा॑गंतम्॥
वा॒जंश्च॑ मे प्र॒स॒वश्च॑ मे प्र॒य॑तिश्च मे प्र॒सि॑तिश्च मे धी॒तिश्च॑
मे क्र॒तुश्च॑ मे स्वर॑श्च मे श्लो॒कश्च॑ मे श्रा॒वश्च॑ मे श्रु॒तिश्च॑ मे
ज्यो॒तिश्च॑ मे सु॒वश्च॑ मे प्रा॒णश्च॑ मेऽपान॑श्च मे व्या॒नश्च॑ मेऽसु॑श्च
मे चि॒त्तं च॑ म॒ आधी॑तं च मे वाक्क्र॑ मे मन॑श्च मे चक्षु॑श्च
मे श्रो॒त्रं च॑ मे दक्ष॑श्च मे बलं॑ च म॒ ओज॑श्च मे सह॑श्च म॒

आयु॑श्च मे ज॒रा च॑ म आ॒त्मा च॑ मे त॒नूश्च॑ मे श॒र्म च॑
मे वर्म॑ च मेऽङ्गानि॑ च मेऽस्थानि॑ च मे प॒रू॑षि च मे
शरी॑राणि च मे॥

यो दे॒वानां॑ प्रथ॒मं पु॒रस्ता॒द्विश्वा॒धियो॑ रु॒द्रो मह॑र्षिः।
हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भं प॑श्यत॒ जाय॑मान॒ः स नो॑ दे॒वः शु॒भया॒ स्मृत्याः॑
संयु॑नक्तु॥

अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः महादेवः सुप्रीतः
सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

ज्यैष्ठ्यं॑ च म॒ आधि॑पत्यं च मे म॒न्युश्च॑ मे भा॒मश्च॑ मेऽम्भ॑श्च
मेऽम्भ॑श्च मे जे॒मा च॑ मे महि॒मा च॑ मे वरि॒मा च॑ मे प्रथि॒मा
च॑ मे व॒र्ष्मा च॑ मे द्राघु॒या च॑ मे वृ॒द्धं च॑ मे वृ॒द्धिश्च॑ मे स॒त्यं
च॑ मे श्र॒द्धा च॑ मे जग॑च्च मे ध॒नं च॑ मे व॒शश्च॑ मे त्विषि॑श्च
मे क्री॒डा च॑ मे मोद॑श्च मे जा॒तं च॑ मे जनि॑ष्यमाणं च मे
सू॒क्तं च॑ मे सु॒कृतं॑ च॑ मे वि॒त्तं च॑ मे वेद्यं॑ च मे भू॒तं च॑ मे
भवि॑ष्यच्च मे सु॒गं च॑ मे सु॒पथं॑ च म ऋ॒द्धं च॑ म ऋ॒द्धिश्च॑ मे
कृ॒प्तं च॑ मे कृ॒प्तिश्च॑ मे म॒तिश्च॑ मे सु॒मतिश्च॑ मे॥

यस्मा॒त्परं॑ नाप॑रमस्ति॒ किञ्चि॒द्यस्मान्ना॒र्णीयो॑ न ज्यायो॑स्ति॒
कश्चित्॑।

वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्॥
अनेन द्वितीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शिवः सुप्रीतः

सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥२॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे
 सौमनसश्च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे
 भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे
 धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे
 प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं
 च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च
 मेऽभयं च मे सुगं च मे शयनं च मे सूषा च मे सुदिनं च
 मे॥

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानुशुः।
 परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजदेतद्यतयो विशन्ति॥
 अनेन तृतीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः
 सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥३॥

ऊर्क् मे सूनृतां च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधुं च
 मे सग्धिश्च मे सर्पीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च
 मे औद्भिद्यं च मे रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे
 विभुं च मे प्रभुं च मे बहुं च मे भूयश्च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं
 च मेऽक्षितिश्च मे कूयवाश्च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे व्रीहयश्च
 मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे
 गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामकाश्च

मे नी॒वारां॑श्च मे॥

वे॒दा॒न्त॒वि॒ज्ञान॒सुनि॑श्चि॒तार्थाः॑ स॒न्ध्या॑स॒ यो॒गाद्य॑त॒यः शु॒द्ध॒स॒त्त्वाः॑ ।
ते ब्र॑ह्मलो॒के तु॒ परा॑न्त॒काले॒ परा॑मृता॒त्परि॑मुच्यन्ति॒ सर्वे॑॥
अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शङ्करः सुप्रीतः
सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥४॥

अ॒श्मा च मे॒ मृ॒त्ति॒का च मे॒ गि॒रय॑श्च मे॒ पर्व॑ताश्च मे॒ सि॒कं॒ताश्च॑
मे॒ वन॑स्पत॒यश्च॑ मे॒ हि॒र॒ण्यं च॑ मे॒ऽय॑श्च मे॒ सी॒सं च॑ मे॒ त्रपु॑श्च
मे॒ श्या॑मं च॑ मे॒ लो॒हं च॑ मे॒ऽग्नि॑श्च म॒ आप॑श्च मे॒ वी॒रुध॑श्च
म॒ ओष॑धयश्च मे॒ कृ॒ष्टप॑च्यं च॑ मे॒ऽकृ॒ष्टप॑च्यं च॑ मे॒ ग्रा॒म्याश्च॑
मे॒ प॒शव॑ आ॒र॒ण्याश्च॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पन्तां वि॒त्तं च॑ मे॒ वि॒त्ति॑श्च मे॒
भू॒तं च॑ मे॒ भू॒ति॑श्च मे॒ वसु॑ च मे॒ वस॑तिश्च मे॒ कर्म॑ च मे॒
शक्ति॑श्च मे॒ऽर्थ॑श्च म॒ ए॒मंश्च॑ म॒ इति॑श्च मे॒ गति॑श्च मे॥

द॒हं वि॒पापं॑ प॒रमे॑ऽश्मभू॒तं यत्पु॑ण्डरी॒कं पु॒रम॑ध्यस॒ंस्थम्॑ ।
त॒त्रा॒पि द॒हं ग॒गनं॑ वि॒शो॒क॒स्तस्मिन्॑ यद॒न्तस्तदु॑पा॒सित॑व्यम्॥
अनेन पञ्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः नीललोहितः
सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥५॥

अ॒ग्नि॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ सोम॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ सवि॑ता च॑ म॒
इन्द्र॑श्च मे॒ सर॑स्वती च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ पू॒षा च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒
बृ॒ह॒स्पति॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ मि॒त्रश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ वरु॑णश्च म॒
इन्द्र॑श्च मे॒ त्वष्टा॑ च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ धा॒ता च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒

विष्णुश्च म॒ इन्द्रश्च मे॒ऽश्विनौ च म॒ इन्द्रश्च मे म॒रुतश्च म॒
इन्द्रश्च मे वि॒श्वे च मे दे॒वा इन्द्रश्च मे पृ॒थि॒वी च म॒ इन्द्रश्च
मे॒ऽन्तरिक्षं च म॒ इन्द्रश्च मे द्यौश्च म॒ इन्द्रश्च मे दि॒शश्च म॒
इन्द्रश्च मे मूर्धा च म॒ इन्द्रश्च मे प्र॒जाप॑तिश्च म॒ इन्द्रश्च मे॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।

तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः॥

अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः ईशानः सुप्रीतः
सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥६॥

अ॒ंशुश्च मे र॒श्मिश्च मे॒ऽदा॑भ्यश्च मे॒ऽधि॑पतिश्च म॒ उपा॒ंशुश्च
मे॒ऽन्तर्या॑मश्च म॒ ऐन्द्र॑वायवश्च मे मै॒त्रावरु॑णश्च म॒ आ॒श्विनश्च
मे प्र॒तिप्र॑स्थानश्च मे शु॒क्रश्च मे म॒न्थी च म॒ आग्र॑यणश्च मे
वै॒श्वदे॑वश्च मे ध्रु॒वश्च मे वै॒श्वान॑रश्च म॒ ऋ॒तुग्र॑हाश्च मे॒ऽति॑ग्राह्याश्च
म॒ ऐन्द्रा॑ग्रश्च मे वै॒श्वदे॑वश्च मे म॒रुत्व॑तीयाश्च मे मा॒हेन्द्रश्च
म॒ आदि॑त्यश्च मे सा॒वि॒त्रश्च मे सा॒रस्व॑तश्च मे पौ॒ष्णश्च मे
पा॒त्नीव॑तश्च मे हा॒रि॒यो॒ज॒नश्च मे॥

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।

भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नमः॥

अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः विजयः सुप्रीतः
सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥७॥

इ॒ध्मश्च मे ब॒र्हिश्च मे वे॒दिश्च मे धि॒ष्णि॒याश्च मे स्रु॒चश्च मे
चम॑साश्च मे ग्रा॒वा॒णश्च मे स्वर॑वश्च म॒ उप॒र॒वाश्च मे॒ऽधि॑षवणे च

मे द्रोणकलशश्च मे वायव्यानि च मे पूतभृच्च म आधवनीयश्च
म आग्नीध्रं च मे हविर्धानं च मे गृहाश्च मे सदैश्च मे
पुरोडाशाश्च मे पचताश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः
कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो
बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो
मनोन्मनाय नमः॥

अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः भीमः सुप्रीतः
सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥८॥

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे
पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे शक्नीरङ्गुलयो
दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्तामृक् मे सामं च मे स्तोमंश्च
मे यजुश्च मे दीक्षा च मे तपश्च म ऋतुश्च मे व्रतं च
मेऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम्॥

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।

सर्वैभ्यः सर्वशर्वैभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः देवदेवः सुप्रीतः
सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥९॥

गर्भाश्च मे वत्साश्च मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाच्च
मे दित्यौही च मे पश्चाविश्च मे पश्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे

त्रिव॒त्सा च॑ मे तु॒र्य॒वाच॑ मे तु॒र्यो॒ही च॑ मे प॒ष्ठ॒वाच॑ मे प॒ष्ठो॒ही च॑
 म उ॒क्षा च॑ मे व॒शा च॑ म ऋ॒ष॒भश्च॑ मे वे॒हच॑ मेऽन॒ङ्गां च॑ मे धे॒नुश्च॑
 म आ॒यु॒र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां प्रा॒णो य॒ज्ञेन॑ कल्पतामपा॒नो य॒ज्ञेन॑
 कल्पतां व्या॒नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां चक्षु॑र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां॒ श्रोत्रं॑
 य॒ज्ञेन॑ कल्पतां मनो॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पतां वा॒ग्य॒ज्ञेन॑ कल्पतामा॒त्मा
 य॒ज्ञेन॑ कल्पतां य॒ज्ञो य॒ज्ञेन॑ कल्पताम्॥

तत्पु॒रुषाय॑ वि॒द्महे॑ महादे॒वाय॑ धीमहि। तन्नो॑ रु॒द्रः प्रचो॑दयात्॥
 अनेन दशम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः भवोद्भवः सुप्रीतः
 सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१०॥

एका॑ च मे ति॒स्रश्च॑ मे प॒ञ्च च॑ मे स॒प्त च॑ मे न॒व च॑ म
 एका॑दश च मे त्रयो॑दश च मे प॒ञ्चद॑श च मे स॒प्तद॑श च
 मे न॒वद॑श च म॒ एक॑विंशतिश्च मे त्रयो॑विंशतिश्च मे
 प॒ञ्चविं॑शतिश्च मे स॒प्तविं॑शतिश्च मे न॒वविं॑शतिश्च म
 एक॑त्रिंशच्च मे त्रय॑स्त्रिंशच्च मे चत॑स्रश्च मेऽष्टौ च॑ मे
 द्वाद॑श च मे षोड॑श च मे विं॑शतिश्च मे चतु॑र्विंशतिश्च
 मेऽष्टा॑विंशतिश्च मे द्वात्रिं॑शच्च मे षड्विं॑शच्च मे
 चत्वारिं॑शच्च मे चतु॑श्चत्वारिंशच्च मेऽष्टाच॑त्वारिंशच्च
 मे वा॒ज॑श्च प्रस॒वश्चा॑पि॒जश्च॑ क्तु॑श्च सु॒वश्च॑ मूर्धा च॑
 व्य॒श्रि॒यश्चान्त्या॑य॒नश्चान्त्य॑श्च भौ॒व॒नश्च॑ भु॒व॒नश्चाधि॑पतिश्च॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-
 ऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥

अनेन एकादश-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
 आदित्यात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥११॥

[इडां देवहूर्मनु॑र्यज्ञ॒नीर्बृ॒हस्पति॑रुक्थाम॒दानि॑ श॒ःसिष॒द्विश्वे॑ दे॒वाः
 सू॒क्त॒वाचः॑ पृथि॒वि मात॑र्मा मां हि॒ःसी॒र्मधुं॑ म॒निष्ये॒ मधुं॑
 ज॒निष्ये॒ मधुं॑ वक्ष्यामि॒ मधुं॑ वदिष्यामि॒ मधु॑म॒तीं दे॒वेभ्यो॑
 वाच॑मु॒द्यास॑ः शुश्रू॒षेण्यां॑ म॒नुष्ये॑भ्य॒स्तं मां दे॒वा अ॑वन्तु
 शो॒भायै॑ पि॒तरोऽनु॑मदन्तु॥]

॥ ॐ शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॑ ॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद
सादनम्॥

ॐ महागणपतये नमः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु
धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः॥ या त इषुः शिवतमा शिवं
बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो रुद्र मृडय॥
या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा
शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ यामिषु गिरिशन्त हस्ते
बिभर्ष्यस्तवे। शिवा गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं
जगत्॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा
नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमना असत्॥ अध्यवोचदधिवक्ता
प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च
यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चेमां रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेडं
ईमहे॥ असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उत्तैनं
गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः॥ उत्तैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो
मृडयाति नः। नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे॥
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः। प्र मुञ्च

धन्वं॑न॒स्त्व॒-मु॒भयो॒रार्त्वि॑यो॒र्ज्याम्॥ याश्च॑ ते॒ हस्त॑ इ॒षवः॑ परा॒
 ता भ॑गवो वप। अ॒व॒त॒त्य॒ धनु॑स्त्व॒ः स॒ह॒स्राक्ष॑ श॒तै॒षुधे॑॥
 नि॒शीर्य॑ श॒ल्यानां॑ मु॒खा शि॒वो नः॑ सु॒मना॑ भव। वि॒ज्यं
 धनुः॑ क॒प॒र्दिनो॑ वि॒शल्यो॑ बा॒णवा॑ः उ॒त॥ अ॒ने॒शन्न॒स्ये॒षव॑
 आ॒भुर॑स्य नि॒षङ्ग॑थिः। या ते॒ हे॒ति॒र्मी॒दुष्ट॑म् ह॒स्ते ब॒भूव॑
 ते॒ धनुः॑॥ तया॒ऽस्मान् वि॒श्वत॑स्त्व॒मय॑क्ष्मया॒ परि॑भुज।
 नम॑स्ते अ॒स्त्वायु॑धा॒याना॑त॒ताय॑ धृ॒ष्णवै॑॥ उ॒भाभ्या॑मु॒त ते॒
 नमो॑ बा॒हुभ्यां॑ तव॒ धन्व॑ने। परि॑ ते॒ धन्व॑नो हे॒तिर॒स्मान्वृ॑णक्तु
 वि॒श्वतः॑॥ अथो॒ य इ॒षुधि॑स्तव॒ऽऽरे॑ अ॒स्मन्नि धै॑हि॒ तम्॥१॥

नम॑स्ते अस्तु भगवन् वि॒श्वेश्व॒राय॑ म॒हादे॒वाय॑ त्र्य॒म्बका॒य
 त्रि॒पुरा॒न्त॒काय॑ त्रि॒काला॒ग्नि॒काला॑य॒ काला॒ग्निरु॒द्राय॑
 नील॑क॒ण्ठाय॑ मृ॒त्युञ्ज॒याय॑ स॒र्वेश्व॒राय॑ स॒दाशि॒वाय॑
 श्रीम॑न्महादे॒वाय॒ नमः॑॥

नमो॑ हिर॑ण्यबा॒हवे॑ से॒नान्ये॑ दि॒शां च॒ पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॑
 हरि॑केशेभ्यः प॒शूनां॑ पत॑ये॒ नमो॑ नमः॑ स॒स्मिञ्ज॒राय॑ त्वि॒षीम॑ते
 प॒थीनां॑ पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑ ब॒भुशा॑य॒ वि॒व्या॒धिने॒ऽन्ना॑नां॒ पत॑ये॒
 नमो॑ नमो॑ हरि॑केशायोपवी॒तिने॑ पु॒ष्टानां॑ पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑
 भ॒वस्य॑ हे॒त्यै ज॑ग॒तां पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑ रु॒द्राया॑त॒तावि॑ने
 क्षे॒त्राणां॑ पत॑ये॒ नमो॑ नमः॑ सू॒ताया॑ह॒न्त्याय॑ व॒नानां॑ पत॑ये॒
 नमो॑ नमो॑ रोहि॑ताय॒ स्थ॒पत॑ये॒ वृ॒क्षाणां॑ पत॑ये॒ नमो॑ नमो॑

मन्त्रिणै॑ वाणि॒जाय॒ कक्षा॑णां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ भुव॒न्तये॑
 वारि॑वस्कृ॒तायौष॑धीनां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नम॑ उ॒च्चैर्घो॑षायाक्र॒न्दय॑ते
 पत्ती॑नां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमः॑ कृ॒त्स्नवी॒ताय॒ धाव॑ते॒ सत्व॑नां॒ पत॑ये॒
 नमः॑ ॥ २ ॥

नमः॑ सह॑मानाय॒ निव्या॒धिना॑ आ॒व्या॒धिनी॑नां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमः॑
 ककु॑भाय॒ निष॑ङ्गिणै॑ स्ते॒नानां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ निष॑ङ्गिणं
 इषु॑धि॒मते॒ तस्क॑राणां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ व॒ञ्चते॒ परि॒वञ्च॑ते
 स्तायू॑नां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ नि॒चेर॑वे॒ परि॒चरा॑यार॒ण्यानां॒ पत॑ये॒
 नमो॒ नमः॑ सू॒कावि॒भ्यो जिघा॑स॒द्भ्यो मु॒ष्णतां॒ पत॑ये॒ नमो॒
 नमो॑ऽसि॒मद्भ्यो॒ नक्तं॑ चर॒द्भ्यः प्र॒कृन्ता॑नां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नम॑
 उ॒ष्णीषि॑णै॒ गिरि॑च॒राय॑ कुलु॒श्चानां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नम॑ इषु॑म॒द्भ्यो
 धन्वा॑वि॒भ्यश्च॒ वो नमो॒ नम॑ आ॒तन्वा॑ने॒भ्यः प्र॒ति॒दधा॑ने॒भ्यश्च॒ वो
 नमो॒ नम॑ आ॒यच्छ॑द्भ्यो॒ विसृ॑ज॒द्भ्यश्च॒ वो नमो॒ नमो॑ऽस्य॑द्भ्यो॒
 वि॒ध्यद्भ्यश्च॒ वो नमो॒ नम॑ आ॒सी॒नेभ्यः॑ श॒याने॑भ्यश्च॒ वो नमो॒
 नमः॑ स्व॒पद्भ्यो जाग्र॑द्भ्यश्च॒ वो नमो॒ नम॑ स्ति॒ष्ठद्भ्यो॒ धाव॑द्भ्यश्च॒
 वो नमो॒ नमः॑ स॒भाभ्यः॑ स॒भाप॑ति॒भ्यश्च॒ वो नमो॒ नमो॑
 अ॒श्वेभ्यो॑ऽश्व॑पति॒भ्यश्च॒ वो नमः॑ ॥ ३ ॥

नम॑ आ॒व्या॒धिनी॑भ्यो वि॒विध्य॑न्ती॒भ्यश्च॒ वो नमो॒ नम॑
 उ॒गणा॑भ्यस्तृ॒हती॑भ्यश्च॒ वो नमो॒ नमो॑ गृ॒त्सेभ्यो॑
 गृ॒त्सप॑ति॒भ्यश्च॒ वो नमो॒ नमो॑ ब्रा॒तैभ्यो॑ ब्रा॒तप॑ति॒भ्यश्च॒
 वो नमो॒ नमो॑ ग॒णेभ्यो॑ ग॒णप॑ति॒भ्यश्च॒ वो नमो॒ नमो॑

विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यः, क्षुल्लकेभ्यश्च
 वो नमो नमो रथिभ्योऽरथेभ्यश्च वो नमो नमो रथेभ्यो
 रथपतिभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो
 नमो नमः, क्षत्तृभ्यः सङ्गृहीतृभ्यश्च वो नमो नमस्तक्ष्मभ्यो
 रथकरेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्मरिभ्यश्च वो
 नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमो नम इषुकृद्भ्यो
 धन्वकृद्भ्यश्च वो नमो नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमो
 नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः॥४॥

नमो भुवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो
 नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय
 च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशाय च
 शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ह्रस्वाय
 च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय
 च संवृध्वने च नमो अग्रियाय च प्रथमाय च नमो आशवे
 चाजिराय च नमः शीघ्रियाय च शीभ्याय च नमो ऊर्म्याय
 चावस्वन्याय च नमः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च॥५॥

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च
 नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्नियाय
 च नमः सोभ्याय च प्रतिसूर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय
 च नमो उर्वर्याय च खल्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय
 च नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय

च नमः आशुषेणाय चाशुरंथाय च नमः शूराय चावभिन्दते
 च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमो बिल्मिने च कवचिने
 च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च॥६॥

नमो दुन्दुभ्याय चऽऽहन्याय च नमो धृष्णवे च प्रमृशाय
 च नमो दृताय च प्रहिताय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमतै च
 नमस्तीक्ष्णेषवे चऽऽयुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने
 च नमः सुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय
 च नमः सूद्याय च सरस्याय च नमो नाद्याय च वैशन्ताय
 च नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च
 नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नम ईध्रियाय चऽऽतप्याय च
 नमो वात्याय च रेष्मियाय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय
 च॥७॥

नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमः
 शङ्गाय च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो
 अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हृत्रे च हनीयसे च नमो
 वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शम्भवे च मयोभवे च
 नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय
 च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः पार्याय चावार्याय च
 नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतार्याय चऽऽलाद्याय
 च नमः शष्याय च फेन्याय च नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय

च॥८॥

नमं इरिण्याय च प्रपथ्याय च नमः किंशिलाय च क्षयणाय
च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नमो गोष्ठ्याय च गृह्याय
च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय
च नमो हृदय्याय च निवेष्याय च नमः पांसुव्याय च
रजस्याय च नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमो लोप्याय
चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्म्याय च नमः पुण्याय च
पर्णशद्याय च नमोऽपगुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आख्विदते
च प्रख्विदते च नमो वः किरिकेभ्यो देवानां हृदयेभ्यो
नमो विक्षीणकेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नम अनिर्हृतेभ्यो
नम आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रव्रीललोहित। एषां पुरुषाणामेषां
पशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽमत्॥ या तै रुद्र
शिवा तनूः शिवा विश्वाहभेषजी। शिवा रुद्रस्य भेषजी तया
नो मृड जीवसे॥ इमां रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय
प्रभरामहे मतिम्॥ यथा नः शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं
पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ मृडा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि
क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे
पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो महान्तमुत मा
नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो
वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषः॥

मा न॑स्तो॒के तन॑ये॒ मा न॒ आयु॑षि॒ मा नो॒ गोषु॒ मा नो॒
 अश्वे॑षु॒ रीरि॑षः। वी॒रान्मा नो॑ रु॒द्र भामि॑तो व॒धीर्ह॒विष्म॑न्तो
 नम॑सा विधेम ते॥ आ॒रात्ते॑ गो॒घ्न उ॒त पू॒रुष॑घ्ने क्ष॒यद्वी॑राय
 सु॒म्रम॑स्मे ते॑ अस्तु। रक्षा॑ च नो॒ अधि॑ च देव ब्रू॒हधा॑
 च नः॒ शर्म॑ यच्छ द्वि॒बर्हाः॑॥ स्तु॒हि श्रु॑तं ग॒र्तस॑दं यु॒वानं॑
 मृ॒गं न भी॑ममु॒पह॑लुमु॒ग्रम्। मृ॒डा ज॑रि॒त्रे रु॒द्र स्तवा॑नो अ॒न्यं
 ते॑ अ॒स्मन्नि व॑पन्तु सेनाः॑॥ परि॑णो रु॒द्रस्य॑ हे॒तिर्वृ॑णक्तु
 परि॑ त्वे॒षस्य॑ दु॒र्मति॑र॒घायोः॑। अव॑ स्थि॒रा म॒घव॑च्च॒स्तनु॑ष्व
 मी॒द्वस्तो॒काय॑ तन॑याय मृ॒डय॑॥ मी॒दुष्ट॑म् शि॒वत॑म शि॒वो नः॑
 सु॒मना॑ भव। प॒रमे॑ वृ॒क्ष आयु॑धं नि॒धाय॑ कृ॒त्तिं वसा॑न आ
 च॑र॒ पिना॑कं बिभ्र॒दा ग॑हि॥ वि॒कि॑रि॒द् विलो॑हित॒ नम॑स्ते
 अस्तु॑ भगवः। यास्ते॑ स॒हस्र॑ हे॒तयो॑ऽन्यम॒स्मन्नि व॑पन्तु
 ताः॥ स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑धा बा॒हुवो॑स्तव हे॒तयः॑। तासा॒मीशा॑नो
 भगवः॑ प॒राची॑ना॒ मुखा॑ कृ॒धि॥१०॥

स॒हस्रा॑णि स॒हस्र॑शो ये रु॒द्रा अधि॑ भू॒म्याम्। तेषा॑
 स॒हस्र॑योज॒नेऽव॑ धन्वा॒नि तन्म॑सि॥ अ॒स्मिन् म॑ह॒त्यर्ण॑वे॒ऽन्तरि॑क्षे
 भ॒वा अधि॑॥ नील॑ग्री॒वाः शि॒ति॒कण्ठाः॑ श॒र्वा अधः॑, क्ष॒माच॑राः॥
 नील॑ग्री॒वाः शि॒ति॒कण्ठा॑ दि॒वः रु॒द्रा उप॑श्रिताः॥ ये वृ॒क्षेषु॑
 स॒स्पिञ्ज॑रा नील॑ग्री॒वा विलो॑हिताः॥ ये भू॒ताना॑मधि॒पत॑यो
 वि॒शि॒खासः॑ क॒पर्दि॑नः॥ ये अ॒न्नेषु॑ वि॒विध्य॑न्ति पात्रेषु॒ पिब॑तो
 जना॑न्॥ ये प॒थां प॑थि॒रक्ष॑य ऐ॒लबृ॑दा य॒व्युधः॑॥ ये ती॒र्थानि॑

प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः॥ य एतावन्तश्च भूयांसश्च
दिशो रुद्रा वितस्थिरे॥ तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि
तन्मसि॥ नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येऽन्तरिक्षे ये दिवि
येषामन्नं वातो वरुषमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश
प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं
द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि॥११॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव
बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु
य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय
नमो अस्तु॥ तमुष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य
क्षयति भेषजस्य।

(ऋक्) यक्ष्वामहे सौमनसाय रुद्रं नमोभिर्देवमसुरं दुवस्य॥
अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः। अयं मे विश्वभेषजोऽयं
शिवाभिर्मर्शनः॥

ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तवे। तान् यज्ञस्य
मायया सर्वानव यजामहे। मृत्यवे स्वाहा मृत्यवे स्वाहा॥
ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि। प्राणानां
ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनात्रेनाप्यायस्व॥ नमो
रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ चमकप्रश्नः ॥

अग्राविष्णू सजोषंसेमा वर्धन्तु वां गिरः। द्युमैर्वाजैर्भिरागतम्॥
 वाजंश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे
 मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रावश्च मे श्रुतिश्च मे
 ज्योतिश्च मे सुवश्च मे प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च
 मे चित्तं च मे आधीतं च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च
 मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे ओजश्च मे सहश्च मे
 आयुश्च मे जरा च मे आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च
 मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे परूरुषि च मे
 शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठ्यं च मे आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च
 मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा
 च मे वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं
 च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे वशश्च मे त्विषिश्च
 मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे
 सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे
 भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथं च मे ऋद्धं च मे ऋद्धिश्च मे
 कृतं च मे कृतिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे॥२॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे
 सौमनसश्च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे

भग॑श्च मे॒ द्रवि॑णं च मे॒ यु॒न्ता च॑ मे॒ ध॒र्ता च॑ मे॒ क्षे॒मश्च॑ मे॒
 धृ॒तिश्च॑ मे॒ वि॒श्वं च॑ मे॒ मह॑श्च मे॒ सं॒वि॒च्च॑ मे॒ ज्ञा॒त्रं च॑ मे॒ सू॒श्च मे॒
 प्र॒सू॒श्च मे॒ सी॒रं च॑ मे॒ ल॒यश्च॑ म॒ ऋ॒तं च॑ मे॒ऽमृ॒तं च॑ मे॒ऽय॒क्ष्मं
 च॒ मे॒ऽना॑मयच्च मे॒ जी॒वातु॑श्च मे॒ दी॒र्घायु॑त्वं च॑ मे॒ऽन॒मि॒त्रं च॒
 मे॒ऽभ॑यं च मे॒ सु॒गं च॑ मे॒ श॒य॒नं च॑ मे॒ सू॒षा च॑ मे॒ सु॒दि॒नं च॑
 मे॥३॥

ऊ॒र्क्क॑ मे॒ सू॒नृता॑ च मे॒ प॒य॑श्च मे॒ र॒संश्च॑ मे॒ घृ॒तं च॑ मे॒ म॒धु च॑
 मे॒ स॒ग्धि॑श्च मे॒ स॒पी॑तिश्च मे॒ कृ॒षि॑श्च मे॒ वृ॒ष्टि॑श्च मे॒ जै॒त्रं च॑
 म॒ औ॒द्भि॑द्यं च मे॒ र॒यि॑श्च मे॒ रा॒य॑श्च मे॒ पु॒ष्टं च॑ मे॒ पु॒ष्टि॑श्च मे॒
 वि॒भु च॑ मे॒ प्र॒भु च॑ मे॒ ब॒हु च॑ मे॒ भू॒य॑श्च मे॒ पू॒र्णं च॑ मे॒ पू॒र्ण॑तरं
 च॒ मे॒ऽक्षि॑तिश्च मे॒ कू॒य॑वाश्च मे॒ऽन्नं च॑ मे॒ऽक्षु॑च्च मे॒ व्री॒ह॒य॑श्च
 मे॒ य॒वा॑श्च मे॒ मा॒षा॑श्च मे॒ ति॒ला॑श्च मे॒ मु॒द्गा॑श्च मे॒ ख॒ल्वा॑श्च मे॒
 गो॒धू॒मा॑श्च मे॒ म॒सुरा॑श्च मे॒ प्रि॒यङ्ग॑वश्च मे॒ऽण॑वश्च मे॒ श्या॒माका॑श्च
 मे॒ नी॒वा॒रा॑श्च मे॥४॥

अ॒श्मा॑ च मे॒ मृ॒त्ति॑का च मे॒ गि॒र॒य॑श्च मे॒ प॒र्व॒ताश्च॑ मे॒ सि॒क॒ताश्च॑
 मे॒ व॒न॒स्प॒त॒य॑श्च मे॒ हि॒र॒ण्यं च॑ मे॒ऽय॑श्च मे॒ सी॒सं च॑ मे॒ त्र॒पु॑श्च
 मे॒ श्या॑मं च॑ मे॒ लो॒हं च॑ मे॒ऽग्नि॑श्च म॒ आ॒प॑श्च मे॒ वी॒रु॑धश्च
 म॒ ओष॑धयश्च मे॒ कृ॒ष्ट॒प॒च्यं च॑ मे॒ऽकृ॑ष्ट॒प॒च्यं च॑ मे॒ ग्रा॒म्या॑श्च
 मे॒ प॒श॒वं आ॒र॒ण्या॑श्च य॒ज्ञेन॑ क॒ल्प॒न्तां वि॒त्तं च॑ मे॒ वि॒त्ति॑श्च मे॒
 भू॒तं च॑ मे॒ भू॒ति॑श्च मे॒ व॒सु॑ च मे॒ व॒स॒ति॑श्च मे॒ क॒र्म च॑ मे॒

शक्तिश्च मेऽर्थश्च म् एमश्च म् इतिश्च मे गतिश्च मे॥५॥

अग्निश्च म् इन्द्रश्च मे सोमश्च म् इन्द्रश्च मे सविता च म्
इन्द्रश्च मे सरस्वती च म् इन्द्रश्च मे पूषा च म् इन्द्रश्च मे
बृहस्पतिश्च म् इन्द्रश्च मे मित्रश्च म् इन्द्रश्च मे वरुणश्च म्
इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म् इन्द्रश्च मे धाता च म् इन्द्रश्च मे
विष्णुश्च म् इन्द्रश्च मेऽश्विनौ च म् इन्द्रश्च मे मरुतश्च म्
इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे पृथिवी च म् इन्द्रश्च
मेऽन्तरिक्षं च म् इन्द्रश्च मे द्यौश्च म् इन्द्रश्च मे दिशश्च म्
इन्द्रश्च मे मूर्धा च म् इन्द्रश्च मे प्रजापतिश्च म् इन्द्रश्च मे॥६॥

अ॒ंशुश्च मे र॒श्मिश्च मेऽदा॑भ्यश्च मेऽधि॑पतिश्च म उपा॒ंशुश्च
मेऽन्तर्या॑मश्च म ऐन्द्र॑वायवश्च मे मैत्रा॑वरुणश्च म आ॒श्विनश्च
मे प्रति॑प्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे म॒न्थी च म आग्र॑यणश्च मे
वैश्व॑देवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वान॑रश्च म ऋतु॑ग्रहाश्च मेऽति॑ग्राह्याश्च
म ऐन्द्रा॑ग्रश्च मे वैश्व॑देवश्च मे मरु॑त्वतीयाश्च मे माहेन्द्रश्च
म आदि॑त्यश्च मे सावि॑त्रश्च मे सार॑स्वतश्च मे पौ॒ष्णश्च मे
पा॒त्नीव॑तश्च मे हा॒रियो॑ज॒नश्च मे॥७॥

इ॒ध्मश्च मे ब॒र्हिश्च मे वेदि॑श्च मे धि॒ष्णि॑याश्च मे सु॒चश्च मे
चम॑साश्च मे ग्रावा॑णश्च मे स्वर॑वश्च म उपर॑वाश्च मेऽधि॑षवणे च
मे द्रो॑णकल॒शश्च मे वाय॑व्यानि च मे पू॒तभृ॑च्च म आध॑वनीयश्च
म आ॒ग्नी॑ध्रं च मे ह॒वि॒र्धानं॑ च मे गृ॒हाश्च मे स॒दश्च मे
पुरो॒डाशा॑श्च मे प॒च॒ताश्च मेऽव॑भृथश्च मे स्व॒गाका॑रश्च मे॥८॥

अ॒ग्निश्च॑ मे घ॒र्मश्च॑ मे ऽर्क॑श्च मे सूर्य॑श्च मे प्रा॒णश्च॑ मे ऽश्व॑मे॒धश्च॑ मे
 पृथि॑वी च मे ऽदि॒तिश्च॑ मे दि॒तिश्च॑ मे द्यौश्च॑ मे श॒क्र॑रीर॒ङ्गुल॑यो
 दि॒शश्च॑ मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्तामृ॒क् मे सा॒म च॑ मे स्तोम॑श्च
 मे य॒जुश्च॑ मे दी॒क्षा च॑ मे तप॑श्च म ऋ॒तुश्च॑ मे व्र॒तं च॑
 मे ऽहो॒रा॒त्रयो॑र्वृ॒ष्ट्या बृ॑ह॒द्रथ॑न्त॒रे च॑ मे य॒ज्ञेन॑ कल्पेताम्॥९॥

गर्भा॑श्च मे व॒त्साश्च॑ मे त्र्य॒विश्च॑ मे त्र्य॒वी च॑ मे दि॒त्य॒वाच॑
 मे दि॒त्यौही॑ च॑ मे पश्चा॑विश्च मे पश्चा॒वी च॑ मे त्रि॒व॒त्सश्च॑ मे
 त्रि॒व॒त्सा च॑ मे तु॒र्य॒वाच॑ मे तु॒र्यौही॑ च॑ मे प॒ष्ठ॒वाच॑ मे प॒ष्ठौही॑ च॑
 म उ॒क्षा च॑ मे व॒शा च॑ म ऋ॒ष॒भश्च॑ मे वे॒हच॑ मे ऽन॒ङ्गा च॑ मे धे॒नुश्च॑
 म आ॒यु॒र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां प्रा॒णो य॒ज्ञेन॑ कल्पतामपा॒नो य॒ज्ञेन॑
 कल्पतां व्या॒नो य॒ज्ञेन॑ कल्पतां चक्षु॑र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां॒ श्रोत्रं॑
 य॒ज्ञेन॑ कल्पतां मनो॑ य॒ज्ञेन॑ कल्पतां वा॒ग्य॒ज्ञेन॑ कल्पतामा॒त्मा
 य॒ज्ञेन॑ कल्पतां य॒ज्ञो य॒ज्ञेन॑ कल्पताम्॥१०॥

एका॑ च मे ति॒स्रश्च॑ मे प॒ञ्च च॑ मे स॒प्त च॑ मे न॒व च॑ म
 एका॑दश च मे त्रयो॑दश च मे प॒ञ्चद॑श च मे स॒प्तद॑श च
 मे न॒वद॑श च म ए॒क॒विं॒शति॑श्च मे त्रयो॑विं॒शति॑श्च मे
 प॒ञ्चविं॒शति॑श्च मे स॒प्तविं॒शति॑श्च मे न॒वविं॒शति॑श्च म
 ए॒क॒त्रिं॒शच्च॑ मे त्रय॑स्त्रिं॒शच्च॑ मे च॒त॒स्रश्च॑ मे ऽष्टौ॑ च॑ मे
 द्वाद॑श च मे षोड॑श च मे विं॒शति॑श्च मे च॒तुर्विं॒शति॑श्च
 मे ऽष्टा॑विं॒शति॑श्च मे द्वा॒त्रिं॒शच्च॑ मे ष॒ट्त्रिं॒शच्च॑ मे
 च॒त्वारिं॒शच्च॑ मे च॒तुश्च॑त्वारिं॒शच्च॑ मे ऽष्टा॑च॒त्वारिं॒शच्च॑

मे॒ वाज॑श्च॒ प्रस॒वश्चा॑पि॒जश्च॒ ऋतु॑श्च॒ सुव॑श्च॒ मूर्धा॑ च॒
व्य॒श्रिय॑श्चान्त्याय॒नश्चान्त्य॑श्च॒ भौव॑नश्च॒ भुव॑न॒श्चाधि॑पतिश्च॥११॥

इडा॑ देव॒हर्म॑नुर्यज्ञ॒नीर्बृ॒हस्पति॑रुक्थाम॒दानि॑ श॒सिष॑द्वि॒श्वेदे॒वाः
सू॒क्त॒वाचः॑ पृथि॑वि मा॒त॒र्मा मां हि॑सी॒र्मधुं॑ म॒निष्ये॑ मधुं
ज॒निष्ये॑ मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधु॑मतीं दे॒वेभ्यो॑
वाच॑मुद्यास॒ शुश्रू॑षेण्या॑ म॒नुष्ये॑भ्य॒स्तं मां दे॒वा अ॑वन्तु शो॒भायै॑
पि॒तरोऽनु॑मदन्तु॥

॥ ॐ शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॑ ॥

॥ पुरुषसूक्तम् ॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं
 विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद्वशाङ्गुलम्॥ पुरुष एवेदं सर्वम्।
 यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति॥
 एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य
 विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः।
 पादोऽस्येहाऽऽभवात्पुनः। ततो विश्वङ्मूकामत्। साशनानशने
 अग्निः॥ तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः। स जातो
 अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ यत्पुरुषेण हविषा। देवा
 यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः
 शरद्धविः॥ सप्तास्यऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः
 कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥
 तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा
 अयजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं
 पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च
 ये॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
 छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥
 तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादतः। गावो ह
 जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥ यत्पुरुषं व्यदधुः।
 कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू
 पादावुच्येते॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।

ऊ॒रू तद॑स्य॒ यद्वै॑श्यः। प॒द्भ्या॑ः शू॒द्रो अ॑जायत॥ च॒न्द्रमा॑
 मन॑सो जा॒तः। चक्षोः॑ सूर्यो॑ अजायत। मु॒खादिन्द्र॑श्चा॒ग्निश्च॑।
 प्रा॒णाद्वा॒युर॑जायत॥ नाभ्या॑ आसीद॒न्तरि॑क्षम्। शी॒र्ष्णो
 द्यौः सम॑वर्तत। प॒द्भ्यां भूमि॑र्दिशः श्रोत्रा॑त्। तथा॑ लो॒काः
 अ॑कल्पयन्॥ वेदा॒हमे॑तं पु॒रुषं॑ म॒हान्त॑म्। आ॒दि॒त्यव॑र्णं
 तम॑सस्तु पा॒रे॥ सर्वा॑णि रूपाणि वि॒चित्य॑ धीरः। नामा॑नि
 कृ॒त्वाऽभि॑वदन् यदास्ते॑॥ धा॒ता पु॒रस्ता॑द्यमु॒दाज॑हार। श॒क्रः
 प्रवि॑द्वान् प्रदिश॑श्चत॑स्रः। तमे॒वं वि॑द्वान॒मृतं॑ इ॒ह भ॑वति। नान्यः
 पन्था॑ अय॑नाय विद्यते॥ य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वाः। तानि॑
 धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन्। ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्ते। यत्र॑
 पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः॥ अ॒द्भ्यः सम्भू॑तः पृथि॒व्यै रसा॑च्च।
 वि॒श्वक॑र्मणः सम॑वर्त॒ताधि॑। तस्य॒ त्वष्टा॑ वि॒दध॑द्रूपमे॑ति।
 तत्पु॒रुष॑स्य वि॒श्वमा॑जा॒नम॑ग्रे॥ वेदा॒हमे॑तं पु॒रुषं॑ म॒हान्त॑म्।
 आ॒दि॒त्यव॑र्णं तम॑सः पर॑स्तात्। तमे॒वं वि॑द्वान॒मृतं॑ इ॒ह भ॑वति।
 नान्यः पन्था॑ विद्यतेऽय॑नाय॥ प्र॒जाप॑तिश्चरति॒ गर्भे॑ अ॒न्तः।
 अ॒जाय॑मानो बहु॒धा विजा॑यते। तस्य॒ धीराः॑ परि॒जान॑न्ति
 योनि॑म्। मरी॑चीनां प॒दमि॑च्छन्ति वे॒धसः॑॥ यो दे॒वेभ्य॑
 आत॑पति। यो दे॒वानां॑ पु॒रोहि॑तः। पूर्॒वो यो दे॒वेभ्यो॑ जा॒तः।
 नमो॑ रु॒चाय॑ ब्राह्म॑ये॥ रुचं॑ ब्राह्मं ज॒नय॑न्तः। दे॒वा अग्रे॑
 तद॑ब्रुवन्। यस्त्वै॒वं ब्रा॑ह्म॒णो वि॒द्यात्। तस्य॑ दे॒वा अस॑न्

वशे॑॥ ह्री॑श्च॒ ते ल॒क्ष्मीश्च॒ पत्न्यौ॑। अ॒होरा॒त्रे पा॒र्श्वे। नक्ष॑त्राणि
रूप॑म्। अ॒श्विनौ॒ व्यात्त॑म्। इ॒ष्टं म॑निषाण। अ॒मुं म॑निषाण।
सर्वं॑ मनिषाण॥

॥ ॐ शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॑ ॥

॥ नारायणसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् - ४/प्रपाठकः - १०/अनुवाकः - १३)

स॒हस्र॒शीर्षं॑ दे॒वं वि॒श्वाक्षं॑ वि॒श्वश॑म्भुम्। वि॒श्वं ना॒राय॑णं
दे॒वम॒क्षरं॑ पर॒मं प॒दम्। वि॒श्वतः॒ पर॑मान्नित्यं वि॒श्वं
ना॒राय॑णः॒ हरि॑म्। वि॒श्वमे॒वेदं॑ पु॒रुष॒स्तद्वि॒श्वमु॑पजीवति।
पतिं॑ वि॒श्वस्य॒ऽऽत्मे॒श्वरः॒॑ शाश्व॑तः॒ शिव॑मच्युतम्। ना॒राय॑णं
महा॑ज्ञेयं वि॒श्वात्मा॑नं प॒राय॑णम्। ना॒राय॑णप॒रो ज्यो॒तिरा॒त्मा
ना॒राय॑णः प॒रः। ना॒राय॑ण प॒रं ब्र॒ह्म त॒त्त्वं ना॒राय॑णः
प॒रः। ना॒राय॑णप॒रो ध्या॒ता ध्या॒नं ना॒राय॑णः प॒रः। यच्च॑
कि॒ञ्चिज्जग॑त्सर्वं दृश्यते॑ श्रूय॒तेऽपि॑ वा॥

अन्त॑र्ब॒हिश्च॑ तत्सर्वं॑ व्या॒प्य ना॒राय॑णः स्थि॒तः। अन॑न्तमव्ययं
क॒विः॒ संमु॒द्रेऽन्तं॑ वि॒श्वश॑म्भुवम्। प॒द्म॒को॒श प्र॑तीका॒शः॒
हृदयं॑ चाप्य॒धोमु॑खम्। अधो॑ नि॒ष्ट्या वि॑तस्त्यान्ते ना॒भ्यामु॑परि
तिष्ठ॑ति। ज्वा॒ल॒मा॒लाकु॑लं भा॒ती वि॒श्वस्य॒ऽऽय॑तनं म॒हत्।
सन्त॑तः॒ शि॒लाभि॑स्तुल॒म्बत्या॑को॒शस॒न्निभ॑म्। तस्यान्ते॑
सु॒षिरः॑ सू॒क्ष्मं तस्मि॑न्त्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य॒ मध्ये॑ म॒हान॑-

ग्निर्वि॒श्वार्चिर्वि॒श्वतो॑मुखः। सोऽग्रं॑भु॒ग्विभ॑जन्ति॒ष्ठन्ना॑हारम॒जुरः
 क॒विः। ति॒र्यग्ध॑र्वम॒धः शायी॑ र॒श्मय॑स्तस्य॒ सन्त॑ता।
 सन्ता॒पय॑ति स्वं दे॒हमापा॑दतल॒मस्त॑कः। तस्य॒ मध्ये॒
 वह्नि॑शिखा अ॒णीयो॑र्ध्वा व्य॒वस्थि॑तः। नी॒लतो॑यद॒-
 मध्य॑स्था॒द्विद्यु॑ल्लेखेव॒ भास्व॑रा। नी॒वार॒शूक॑वत्तन्वी पी॒ता
 भा॑स्वत्य॒णूप॑मा। तस्याः॑ शिखा॒या म॑ध्ये पु॒रमा॑त्मा
 व्य॒वस्थि॑तः। स ब्रह्म॒ स शिवः॑ स हरिः॒ सेन्द्रः॑ सोऽक्षरः॒
 पर॑मः स्व॒राट्॥ ऋ॒तं स॒त्यं परं॑ ब्रह्म॒ पुरुषं॑ कृष्ण॒पिङ्ग॑लम्।
 ऊ॒र्ध्वरे॑तं वि॒रूपा॒क्षं वि॒श्वरू॑पाय॒ वै नमो॑ नमः।

ना॒रा॒य॒णाय॑ वि॒द्महे॑ वा॒सुदे॒वाय॑ धीमहि। तन्नो॑ विष्णुः
 प्रचो॒दया॑त्।

विष्णो॒र्नु कं॑ वी॒र्या॑णि प्रवो॑चं॒ यः पार्थि॑वानि विम॒मे रजा॑ंसि
 यो अस्क॑भाय॒दुत्तर॑ स॒धस्थं॑ विचक्रमा॒णस्त्रे॒धोरु॑गा॒यो
 विष्णो॑र॒राट॑मसि विष्णोः॑ पृ॒ष्ठम॑सि विष्णोः॑ श्र॒त्रेस्थो॑ विष्णोः॑
 स्यूर॑सि विष्णो॑र्ध्रु॒वम॑सि वैष्ण॒वम॑सि विष्णो॑वे त्वा॥

॥ ॐ शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॑ ॥

॥ विष्णुसूक्तम् ॥

विष्णो॒र्नु कं॑ वी॒र्या॑णि प्रवो॑चं॒ यः पार्थि॑वानि विम॒मे रजा॑ंसि
 यो अस्क॑भाय॒दुत्तर॑ स॒धस्थं॑ विचक्रमा॒णस्त्रे॒धोरु॑गा॒यः॥

तदस्य प्रियमभिपाथो अश्याम्। नरो यत्र देवयवो मदन्ति।
 उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था। विष्णोः पुदे परमे मध्व उत्थसः।
 प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
 यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।
 परो मात्रया तनुवा वृधान। न ते महित्वमन्वश्रुवन्ति॥

उभे ते विद्म रजंसी पृथिव्या विष्णो देवत्वम्। परमस्य
 विथ्से। विचक्रमे पृथिवीमेष एताम्। क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे
 दशस्यन्। ध्रुवासो अस्य कीरयो जनांसः। उरुक्षितिः
 सुजनिमाचकार। त्रिदेवः पृथिवीमेष एताम्। विचक्रमे
 शतर्चसं महित्वा। प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान्।
 त्वेषः ह्यस्य स्थविरस्य नाम॥

॥ भूसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् - १/प्रपाठकः - ५/अनुवाकः - ३)

भूमिर्भूम्ना द्यौर्वरिणाऽन्तरिक्षं महित्वा। उपस्थे ते
 देव्यदितेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायाऽऽदधे। आऽयङ्गौः पृश्निरक्रमी-
 दसनन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्त्सुवः। त्रिःशद्धाम वि
 राजति वाक्पतङ्गाय शिश्रिये। प्रत्यस्य वह द्युभिः। अस्य
 प्राणादपानत्यन्तश्चरति रोचना। व्यख्यन् महिषः सुवः॥

यत्त्वा क्रुद्धः परोवपं मन्युना यदवर्त्या। सुकल्पमग्ने
 तत्तव पुनस्त्वोदीपयामसि। यत्ते मन्युपरोप्तस्य पृथिवीमनु

दध्व॒से। आ॒दि॒त्या वि॒श्वे तद्दे॒वा वस॑वश्च स॒माभ॑रन्।
 मनो॒ ज्योति॑र्जुषता॒माज्यं॑ विच्छि॒न्नं य॒ज्ञं समि॑मं द॒धातु॑।
 बृह॒स्पति॑स्तनुतामि॒मं नो वि॒श्वे दे॒वा इ॒ह मा॑दयन्ताम्। स॒प्त
 ते॒ अग्ने स॒मिधः॑ स॒प्त जि॒ह्वाः स॒प्त र्ष॑यः स॒प्त धाम॑ प्रि॒याणि॑।
 स॒प्त हो॒त्राः स॒प्तधा॑ त्वा॒ यज॑न्ति स॒प्त योनी॑रापृ॒णस्वा घृ॑तेन॑।
 पुन॑र॒र्जा नि व॑र्तस्व॒ पुन॑र॒ग्र इ॒षाऽऽयु॑षा। पुन॑र्नः पाहि
 वि॒श्वतः॑। स॒ह र॒य्या नि व॑र्तस्वाऽग्ने पि॒न्वस्व॑ धा॒रया॑।
 वि॒श्वप्सि॑न्त्या वि॒श्वत॑स्प॒रि। ले॒कः स॒लैकः॑ सु॒लेक॑स्ते
 न॑ आ॒दि॒त्या आ॒ज्यं जु॒षाणा॑ वि॒यन्तु॑ के॒तः स॒कैतः॑
 सु॒केत॑स्ते न॑ आ॒दि॒त्या आ॒ज्यं जु॒षाणा॑ वि॒यन्तु॑ वि॒वस्वा॑
 अ॒दि॒तिर्दे॒वजू॒तिस्ते न॑ आ॒दि॒त्या आ॒ज्यं जु॒षाणा॑ वि॒यन्तु॑।

॥दुर्गा सूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् - ४/प्रपाठकः - १०/अनुवाकः - २)

जा॒तवे॑दसे सु॒नवाम् सोमं॑ म॒रातीय॑तो नि॒दहा॑ति वे॒दः। स नः॑
पर॑ष॒दति॑ दु॒र्गाणि॑ वि॒श्वा न॒वेव॑ सि॒न्धुं दु॒रिता॑ऽत्य॒ग्निः॥१॥

ताम॒ग्निव॑र्णां तप॑सा ज्वल॒न्तीं वैरो॑च॒नीं क॑र्म॒फले॑षु जुष्टा॑म्।
दु॒र्गा दे॒वीः श॑रण॒महं प्र॑प॒द्ये सु॒तर॑सि तर॒से नमः॑॥२॥

अ॒ग्ने त्वं पा॑रया॒ नव्यो॑ अ॒स्मान्ध॒स्वस्ति॑भिर॒ति दु॒र्गाणि॑ वि॒श्वा।
पू॒श्च पृ॒थ्वी ब॑हु॒ला न॑ उ॒र्वी भ॒वा तो॒काय॑ तन॒याय॑ शं योः॥३॥

वि॒श्वानि॑ नो दु॒र्गहा॑ जा॒तवे॑दः सि॒न्धुं न ना॒वा दु॒रिता॑ऽति॒पर॑षि।
अ॒ग्ने अ॒त्रि॒वन्म॑न॒सा गृ॒णानो॑ऽस्माकं बो॒ध्यवि॒ता त॒नूना॑म्॥४॥

पृ॒तना॑ जि॒तः स॑ह॒मान॑मु॒ग्रम॒ग्निः हु॑वेम पर॒माध॑स॒धस्था॑त्। स
नः॑ पर॑ष॒दति॑ दु॒र्गाणि॑ वि॒श्वा क्षा॑म॒द्दे॒वो अ॒ति दु॒रिता॑त्य॒ग्निः॥५॥

प्र॒लोषि॑ क॒मीड्यो॑ अध्व॒रेषु॑ स॒नाच्च॑ हो॒ता न॒व्यश्च॑ स॒त्सि।
स्वाश्चा॑ग्ने त॒नुवं पि॒प्रय॑स्वा॒स्मभ्य॑ च॒ सौभ॑ग॒माय॑जस्व॥६॥

गोभि॑र्जुष्ट॒मयु॑जो निषि॑क्तं तवे॑न्द्र वि॒ष्णोर॑नु॒सञ्च॑रेम। नाक॑स्य
पृ॒ष्ठम॒भि सं॒वसानो॑ वै॒ष्णवीं॑ लो॒क इ॒ह मा॑दयन्ताम्॥७॥

का॒त्याय॒नाय॑ वि॒द्महे॑ क॒न्यकु॑मा॒रि धी॑महि।
तन्नो॑ दु॒र्गिः प्र॒चोद॑यात्॥

॥ श्रीसूक्तम् ॥

हिरण्यवर्णां ह॒रिणीं सुव॑र्णर॒जत॒स्रजाम्। च॒न्द्रां ह॒रिण्म॑र्यां
ल॒क्ष्मीं जा॑तवे॒दो म॒ आव॑ह॥१॥

तां म॒ आव॑ह जा॒तवे॒दो ल॒क्ष्मीम॑न॒पगा॒मिनी॑म्। यस्यां ह॒रिण्य॑
वि॒न्देयं॒ गाम॑श्चं॒ पुरु॑षान॒हम्॥२॥

अ॒श्वपूर्वा॑ र॒थम॒ध्यां ह॒स्तिना॑दप्र॒बोधि॑नीम्। श्रियं॑ दे॒वीमुप॑ह्वये
श्री॒मादे॒वीर्जु॑षताम्॥३॥

कां सोऽ॒स्मितां ह॒रिण्य॑प्रा॒कारामा॒र्द्रां ज्वल॑न्तीं तृ॒प्तां
त॒र्पय॑न्तीम्। प॒द्मे स्थि॒तां प॒द्मव॑र्णां तामि॒होप॑ह्वये श्रियम्॥४॥

च॒न्द्रां प्र॑भा॒सां य॒शसा॒ ज्वल॑न्तीं श्रियं॑ लो॒के दे॒वजु॑ष्टामुदा॒राम्।
तां प॒द्मिनी॑मीं शरण॑म॒हं प्र॑प॒द्येऽल॒क्ष्मीर्मे न॑श्यतां त्वां वृ॒णे॥५॥

आ॒दि॒त्यव॑र्णे तप॒सोऽधि॑जा॒तो व॒नस्प॑तिस्तव॑ वृ॒क्षोऽथ
बि॒ल्वः। तस्य॑ फ॒ला॒नि तप॑सा नु॒दन्तु॒ मा॒यान्त॑रा॒याश्च बा॒ह्या
अ॒ल॒क्ष्मीः॥६॥

उपै॑तु मां दे॒वस॒खः की॒र्तिश्च॒ मणि॑ना स॒ह। प्रा॒दुर्भू॑तोऽस्मि
राष्ट्रेऽ॒स्मिन् की॒र्तिमृ॑द्धिं ददा॒तु मे॥७॥

क्षु॒त्पिपा॑साम॒लां ज्ये॑ष्ठाम॒ल॒क्ष्मीं ना॑शया॒म्यहम्। अ॒भूति॑मसंमृद्धिं
च सर्वा॑ निर्णु॒द मे गृ॑हात्॥८॥

ग॒न्ध॒द्वारां द॒राध॑र॒षां नि॒त्यपु॑ष्टां करि॒षिणी॑म्। ई॒श्वरी॑

सर्वभू॒ता॒नां॒ तामि॒होप॑ह्वये॒ श्रियम्॑॥१॥

मन॑सः॒ काम॑माकू॒तिं वा॑चः॒ सत्य॑म॒शीम॑हि। प॒शूनां॑ रू॒पम॑न्न॒स्य॒
मयि॑ श्रीः श्र॑यतां॒ यशः॑॥१०॥

क॒र्दमे॑न प्र॒जाभू॑ता॒ मयि॑ सम्भ॑व क॒र्दम॑। श्रियं॑ वा॒सय॑ मे कु॒ले
मा॒तरं॑ प॒द्ममा॒लिनी॑म्॥११॥

आपः॑ सृ॒जन्तु॑ स्नि॒ग्धानि॑ चिक्की॒त व॑स मे॒ गृहे॑। नि च॑ दे॒वीं
मा॒तरं॑ श्रियं॑ वा॒सय॑ मे कु॒ले॥१२॥

आ॒र्द्रा पु॑ष्करि॒णीं पु॑ष्टिं सु॒वर्णां॑ है॒ममा॒लिनी॑म्। सू॒र्यां हि॒रण्म॑यीं
ल॒क्ष्मीं॑ जा॒तवे॑दो म॒ आव॑ह॥१३॥

आ॒र्द्रा यः॑ करि॒णीं य॑ष्टिं पि॒ङ्गलां॑ प॒द्ममा॒लिनी॑म्। च॒न्द्रां
हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं॑ जा॒तवे॑दो म॒ आव॑ह॥१४॥

तां म॒ आव॑ह जा॒तवे॑दो ल॒क्ष्मीम॑न॒पगा॒मिनी॑म्। यस्यां॑ हि॒रण्यं॑
प्रभू॑तं गावो॑ दा॒स्योऽश्वान्॑ वि॒न्देयं॑ पु॒रुषा॑न॒हम्॥१५॥

म॒हादे॒व्यै च॑ वि॒द्महे॑ वि॒ष्णुप॒त्न्यै च॑ धीम॑हि।

तन्नो॑ ल॒क्ष्मीः प्र॑चो॒दया॑त्॥१६॥

॥ मेधासूक्तम् ॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् - ४/प्रपाठकः - १०/अनुवाकः - ४१-४४)

मे॒धादे॒वी जु॒षमा॑णा न॒ आगा॑द्वि॒श्वार्ची॑ भ॒द्रा सु॑मन॒स्यमा॑ना।
 त्वया॒ जुष्टा॑ नुद॒मा॑ना दुरु॒क्ता॑न् बृ॒हद्व॑दे॒म वि॒दथे॑ सु॒वीराः॑।
 त्वया॒ जुष्टं॑ ऋ॒षिर्भव॑ति दे॒वि त्वया॒ ब्रह्मा॑ऽऽग॒तश्री॑रु॒त त्वया॑।
 त्वया॒ जुष्टं॑श्चि॒त्रं वि॑न्दते वसु॒ सानो॑ जुषस्व॒ द्रवि॑णो न
 मे॒धे॥ मे॒धां म॒ इन्द्रो॑ ददातु मे॒धां दे॒वी सर॑स्वती। मे॒धां मे॑
 अ॒श्विना॑वु॒भावा॑ध॒त्तां पु॒ष्कर॑स्रजा। अ॒प्स॒रासु॑ च॒ या मे॒धा
 ग॒न्ध॒र्वेषु॑ च॒ यन्मनः॑। दै॒वीं मे॒धा सर॑स्वती॒ सा मां॑ मे॒धा
 सु॒रभि॑र्जुषता॒ऽऽ स्वाहा॑॥ आ मां॑ मे॒धा सु॒रभि॑र्वि॒श्वरू॑पा
 हि॒र॒ण्यव॑र्णा॒ जग॑ती जग॒म्या। ऊ॒र्ज॒स्वती॑ पय॑सा॒ पिन्व॑माना॒
 सा मां॑ मे॒धा सु॒प्रती॑का जुषन्ताम्। मयि॑ मे॒धां मयि॑ प्र॒जां
 मय्य॑ग्नि॒स्तेजो॑ दधातु मयि॑ मे॒धां मयि॑ प्र॒जां मयीन्द्र॑ इन्द्रि॒यं
 द॑धातु मयि॑ मे॒धां मयि॑ प्र॒जां मयि॑ सूर्यो॒ भ्राजो॑ दधातु।

॥ भाग्यसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् - ३/प्रश्नः - ८/अनुवाकम् - ९)

प्रा॒तर॒ग्निं प्रा॒तरिन्द्र॑ हवामहे प्रा॒तर्मि॒त्रा वरु॑णा प्रा॒तर॒श्विना॑।
प्रा॒तर्भगं॑ पू॒षणं॑ ब्रह्म॑ण॒स्पतिं॑ प्रा॒तः सोम॑मु॒त रु॒द्रं हु॑वेम॥१॥
प्रा॒तर्जि॑तं भग॑मु॒ग्रं हु॑वेम व॒यं पु॒त्रमदि॑ते॒र्यो वि॑ध॒र्ता।
आ॒र्द्धश्चि॒द्यं म॒न्य॑मानस्तु॒रश्चि॒द्राजा॑ चि॒द्यं भगं॑ भ॒क्षीत्याह॑॥२॥

भग॑ प्रणे॒तर्भग॑ सत्य॑राधो भगे॒मां धिय॑मुद॒वद॑दन्नः।

भग॑प्र॒णो जन॑य गोभि॒रश्वैर्भग॑प्र॒नृभिर्नृ॑वन्तः स्याम॥३॥

उ॒तेदानीं॑ भग॑वन्तः स्यामो॒त प्र॑पि॒त्व उ॒त मध्ये॑ अह्ना॑म्।

उ॒तोदि॑ता मघ॒वन्त्सूर्य॑स्य व॒यं दे॒वानां॑ सु॒मतौ स्या॑म॥४॥

भगं॑ ए॒व भग॑वा॒ अस्तु॑ दे॒वास्तेन॑ व॒यं भग॑वन्तः स्याम।

तं त्वा॑ भग॑ सर्व॒ इज्जो॑हवीमि॒ सनो॑ भग॑ पु॒र ए॒ता भवे॑ह॥५॥

सम॑ध्व॒रायोष॑सोऽन॒मन्त॑ दधि॒क्रावे॑व॒ शुच॑ये प॒दाय॑।

अ॒र्वाची॑नं व॒सुवि॑दं भग॑न्नो रथ॑मि॒वाश्वा॑वा॒जिन् आ॑व॒हन्तु॑॥६॥

अश्वा॑वती॒र्गोम॑तीर्न उ॒षासो॑ वी॒रव॑तीः स॒दमु॑च्छन्तु भ॒द्राः।

घृ॒तं दुहा॑ना वि॒श्वतः॑ प्रपी॑नायू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॑ सदा॑ नः॥७॥

यो मा॑ऽग्ने भा॒गिन॑ ह॒ सन्त॑मथाभा॒गं चि॒कीर्ष॑ति।

अभा॑गम॒ग्ने तं कुरु॑ माम॒ग्ने भा॒गिनं॑ कुरु॥८॥

॥ पवमानसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् - १/प्रश्नः - ४/अनुवाकः - ८)

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् - ५/प्रपाठकः - ६/अनुवाकः - १)

ॐ तच्छ्रुं योरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञपतये। दैवीः
स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्।
शं नो अस्तु द्विपदे। शं चतुष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।
दधिक्राव्णो अकार्षम्। जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिर्नो
मुखाकरत्। प्रण आयूँषि तारिषत्।

आपो हि ष्ठा मयो भुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणांय
चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः।
उशतीरिव मातरः। तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय
जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः।
अग्निं या गर्भं दधिरे विरूपास्ता न आपः शः स्योना भवन्तु॥
यासाँ राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यं
जनानाम्। मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शः
स्योना भवन्तु॥

यासाँ देवा दिवि कृण्वन्ति भुक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।
याः पृथिवीं पयसोन्दन्ति शुक्रास्ता न आपः शः स्योना
भवन्तु॥

शिवेन मा चक्षुषा पश्यताऽऽपः शिवया तनुवोप स्पृशत त्वचं
मे। सर्वाँ अग्नीँ रप्सुषदौ हुवे वो मयि वर्चो बलमोजो
नि धत्त॥

पव॑मानः सुव॑र्जनः। प॒वित्रेण॑ विच॑र॒षणिः॑। यः पो॒ता स
 पु॑नातु मा। पु॒नन्तु॑ मा देव॑ज॒नाः। पु॒नन्तु॑ मन॑वो धि॒या।
 पु॒नन्तु॑ वि॒श्वं आ॒यवः॑। जा॒त॑वेदः प॒वित्र॑वत्। प॒वित्रेण॑ पु॒नाहि॑
 मा। शु॒क्रेण॑ देव॒दीद्य॑त्। अ॒ग्ने क॒त्वा क॒तूँ र॒नु। यत्ते॑
 प॒वित्र॑म॒र्चिषि॑। अ॒ग्ने वि॒त॑तमन्त॒रा। ब्र॒ह्म तेन॑ पु॒नीम॑हे।
 उ॒भाभ्यां॑ देव॒सवि॑तः। प॒वित्रेण॑ स॒वेन॑ च। इ॒दं ब्र॒ह्म पु॒नीम॑हे।
 वैश्व॑दे॒वी पु॑न॒ती दे॒व्यागा॑त्। यस्यै॑ ब॒ह्वीस्त॒नुवो॑ वी॒तपृ॑ष्ठाः।
 तया॑ म॒दन्तः॑ सध॒माद्यै॑षु। व॒यँ स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णाम्।
 वैश्वान॑रो र॒श्मिभि॑र्मा पु॒नातु॑। वा॒तः प्रा॒णेनै॑षि॒रो म॑यो
 भूः। द्यावा॑पृथि॒वी प॑य॒सा प॑योभिः। ऋ॒ताव॑री य॒ज्ञिये॑ मा
 पु॒नीता॑म्। बृ॒हद्भिः॑ सवि॒तस्तृ॑भिः। व॒र्षिष्ठै॑र्दे॒वम॑न्म॒भिः। अ॒ग्ने
 दक्षैः॑ पु॒नाहि॑ मा। येन॑ दे॒वा अपु॑नत। येनऽऽपो॑ दि॒व्यङ्क॑शः।
 तेन॑ दि॒व्येन॑ ब्र॒ह्मणा॑। इ॒दं ब्र॒ह्म पु॒नीम॑हे। यः पा॑वमा॒नीर॒ध्येति॑।
 ऋषि॑भिः स॒म्भृत॑ँ र॒सम्। स॒र्वँ स॑ पू॒तम॑श्नाति। स्व॒दि॒तं
 मा॑त॒रि॒श्व॒ना। पा॑वमा॒नीर्यो॑ अ॒ध्येति॑। ऋषि॑भिः स॒म्भृत॑ँ
 र॒सम्। तस्मै॑ स॒रस्व॑ती दु॒हे। क्षी॒रँ स॒र्पिर्मधू॑दकम्॥
 पा॑वमा॒नीः स्व॒स्त्यय॑नीः। सु॒दुघा॑हि प॒यस्व॑तीः। ऋषि॑भिः
 स॒म्भृतो॑ र॒सः। ब्रा॒ह्म॒णेष्व॑मृत॑ँ हि॒तम्। पा॑वमा॒नीर्दि॑शन्तु नः।
 इ॒मं लो॒कम॑थो अ॒मुम्। का॒मान्त्सम॑र्धयन्तु नः। दे॒वीर्दे॒वैः
 स॒माभृ॑ताः। पा॑वमा॒नीः स्व॒स्त्यय॑नीः। सु॒दुघा॑हि घृ॒तश्चु॑तः।
 ऋषि॑भिः स॒म्भृतो॑ र॒सः। ब्रा॒ह्म॒णेष्व॑मृत॑ँ हि॒तम्। येन॑

दे॒वाः प॒वित्रे॑ण। आ॒त्मानं॑ पु॒नते॒ सदा॑। तेन॑ स॒हस्र॑धारेण।
 पा॒वमा॒न्यः पु॑नन्तु मा। प्रा॒जाप॒त्यं प॒वित्रम्। श॒तोद्या॑म॒ः
 हि॒र॒ण्म॒यम्। तेन॑ ब्र॒ह्म वि॒दो व॒यम्। पू॒तं ब्र॒ह्म पु॒नीम॑हे। इन्द्रः॑
 सु॒नी॒ती स॒हमा॑ पु॒नातु। सोमः॑ स्व॒स्त्या व॑रुणः स॒मीच्य॑।
 य॒मो रा॒जा प्र॑मृ॒णाभिः॑ पु॒नातु॒ मा। जा॒तवे॑दा मो॒र्जय॑न्त्या
 पु॒नातु। भूर्भुवः॑ सु॒वः।

तच्छ्रुं॑ योरावृ॑णीमहे। गा॒तुं य॒ज्ञाय॑। गा॒तुं य॒ज्ञप॑तये। दै॒वीः
 स्व॒स्तिर॑स्तु नः। स्व॒स्तिर्मानु॑षेभ्यः। ऊ॒र्ध्वं जि॑गातु भेष॒जम्।
 शं नो॑ अस्तु द्वि॒पदे॑। शं चतु॑ष्पदे।

ॐ शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॑॥

॥ आयुष्यसूक्तम् ॥

यो ब्र॒ह्मा ब्र॒ह्मण॑ उ॒ज्जहार॑ प्रा॒णैः शि॒रः कृ॑त्तिवासाः पि॒नाकी॑।
 ई॒शानो॑ दे॒वः स न॑ आ॒युर्दधा॑तु तस्मै जु॒होमि॑ ह॒विषा॑
 घृ॒तेन॑॥१॥

वि॒भ्राज॑मानः स॒रि॒रस्य॑ म॒ध्याद्रो॑च॒मानो॑ घ॒र्मरु॑चिर्य आ॒गात्।
 स मृ॒त्युपा॑शानप॒नुद्य॑ घो॒रानि॒हायु॑षे॒णो घृ॒तम॑त्तु दे॒वः॥२॥

ब्र॒ह्मज्यो॑तिर्ब्र॒ह्मप॑त्नीषु ग॒र्भं य॒माद॑धात् पुरु॒रूपं॑ ज॒यन्त॑म्।
 सु॒वर्ण॑र॒म्भग्र॑हम॒र्कम॒र्च्यं त॒मायु॑षे॒ वर्ध॑यामो॑ घृ॒तेन॑॥३॥

श्रि॒यं ल॒क्ष्मीमौ॑बलाम॒म्बिकां॑ गां ष॒ष्ठीं च॑ या॒मिन्द्र॑सेनै॒त्युदा॑हुः।
 तां वि॒द्यां ब्र॒ह्मयो॑निः॒ सरू॒पा॒मिहा॑यु॒षे तर्प॑यामो॑ घृ॒तेन॑॥४॥

दाक्षायण्यः सर्वयोन्यः स योन्यः सहस्रशो विश्वरूपां
विरूपाः। ससूनवः सपतयः सयूथ्या आयुषेणो घृतमिदं
जुषन्ताम्॥५॥

दिव्या गणा बहुरूपाः पुराणा आयुश्छिदो नः प्रमथन्तु
वीरान्। तेभ्यो जुहोमि बहुधा घृतेन मा नः प्रजां रीरिषो
मौत वीरान्॥६॥

एकः पुरस्ताद्य इदं बभूव यतो बभूव भुवनस्य गोपाः।
यमप्येति भुवनं साम्पराये स नो हविर्घृतमिहायुषेत्तु
देवः॥७॥

वसून् रुद्रानादित्यान् मरुतोऽथ साध्यान् ऋभून् यक्षान्
गन्धर्वाश्च पितृश्च विश्वान्। भृगून् सर्पाश्चाङ्गिरसोऽथ
सर्वान् घृतं हुत्वा स्वायुष्या महयाम शश्वत्॥८॥

विष्णो त्वं नो अन्तमः शर्म यच्छ सहन्त्य। प्रतेधारां मधुश्चुत
उथ्सं दुहते अक्षितम्॥९॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नवग्रहसूक्तम् ॥

आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो याति भुवना विपश्यन्।
अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य

सुक्रतुम्॥ येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत च
द्विपदाम्। निष्क्रीतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा
यजमानस्य सन्तु॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय आदित्याय नमः॥१॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा९ रेता९सि
जिन्वति। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी। यच्छानः
शर्म सप्रथाः। क्षेत्रस्य पतिना वय९ हिते नैव जयामसि।
गामश्च पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥२॥

प्रवः शुक्राय भानवे भरध्व९ हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम्॥
यो दैव्यानि मानुषा जनु९ष्यन्तर्विश्वानि विद्म ना जिगाति॥
इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीमहमश्रवम्। न ह्यस्या अपरश्च न
जरसा मरते पतिः॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः।
अस्माकमस्तु केवलः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥३॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णियम्। भवा वाजस्य
सङ्गथे॥ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं
च विश्वशम्भुवमापंश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सलिलानि
तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी
बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय सोमाय नमः॥४॥

उद्ध्व्यस्वाग्ने॑ प्रति॑जागृह्येनमिष्टापूर्ते॑ स॒सृजे॑थाम॒यं च॑। पुनः॑
 कृण्व॑स्त्वा॒ पित॑रं॒ युवा॑नम॒न्वाता॑सि॒ त्वयि॑ तन्तुमे॒तम्॥ इदं॑
 विष्णुर्विच॑क्रमे॒ त्रेधा॑ निद॑धे प॒दम्। समू॑ढमस्यपा॒सु सुरे॑॥
 विष्णो॑ र॒राट॑मसि॒ विष्णोः॑ पृ॒ष्ठम॑सि॒ विष्णोः॑ श्र॒त्रे॑स्थो॒ विष्णोः॑
 स्यूर॑सि॒ विष्णो॑र्ध्रु॒वम॑सि॒ वैष्ण॑वम॒सि विष्ण॑वे त्वा।
 अधिदे॒वता॑ प्रत्यधिदे॒वता॑ स॒हिता॑य॒ बुधाय॑ नमः॥५॥

बृह॑स्पते॒ अति॑य॒दर्यो॑ अ॒र्हो॑द्वि॒मद्वि॑भाति॒ क्रतु॑म॒ञ्जने॑षु।
 यद्दी॒दय॑च्छ॒वंस॑र्तप्रजातु॒ तद॒स्मासु॑ द्रवि॑णं॒ धेहि॑ चि॒त्रम्॥
 इन्द्र॑म॒रुत्व॑ इ॒ह पा॑हि॒ सोमं॑ यथा॑ शाय॒ति अपि॑बः सु॒तस्य॑।
 तव॑ प्र॒णीती॑ तव॑ शूर॒शर्म॑न्नावि॒वास॑न्ति क॒वयः॑ सु॒यज्ञाः॑॥
 ब्रह्म॑ज॒ज्ञानं॑ प्र॒थमं॑ पु॒रस्ता॑द्वि॒सीम॑तः॒ सुरु॑चो॒ वेन॑ आ॒वः।
 स॒बुध्रि॒या उप॑मा अ॒स्य वि॒ष्टाः स॒तश्च॑ योनि॒मस॑तश्च॒ विवः॑॥
 अधिदे॒वता॑ प्रत्यधिदे॒वता॑ स॒हिता॑य॒ बृह॑स्पतये॒ नमः॑॥६॥

शं नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑। शं॒यो र॒भिस्र॑वन्तु
 नः॥ प्रजा॑पते॒ न त्व॑दे॒तान्य॒न्यो वि॒श्वा जा॒तानि॑ परि॒ता
 ब॑भूव। यत्का॑मास्ते जुहु॒मस्तन्नो॑ अस्तु व॒यस्स्याम॑ प॒तयो॑
 रयी॑णाम्। इ॒मं य॑मप्र॒स्तर॑माहि॒ सीदा॑ऽङ्गि॒रोभिः॑ पि॒तृभिः॑
 संवि॑दानः। आ॒त्वा म॒न्त्राः क॒विश॑स्ता व॒हन्त्वे॒ना रा॑जन्
 ह॒विषा॑ मादयस्व॥

अधिदे॒वता॑ प्रत्यधिदे॒वता॑ स॒हिता॑य॒ शनैश्च॑राय॒ नमः॑॥७॥

कया॑ नश्चि॒त्र आ॒भुव॑दूती॒ सदा॑वृ॒धः स॒खा। कया॑

शचि॑ष्ठया वृ॒ता। आ॒ऽयङ्गौः पृ॒श्निर॑क्रमी॒दसं॑नन्मा॒तरं॑
 पुनः॑। पि॒तरं॑ च प्र॒यन्त्सुवः॑। यत्ते॑ दे॒वी नि॒र्ऋति॑राब॒बन्ध॑ दामं
 ग्री॒वास्ववि॑च॒र्त्यम्। इ॒दं ते॒ तद्वि॑ष्या॒म्यायु॑षो॒ न म॒ध्या॒दथा॑जीवः
 पि॒तुम॑द्धि प्रमु॑क्तः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥८॥

के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्या अपे॒शसे॑। समु॒षद्वि॑रजायथाः॥
 ब्र॒ह्मा दे॒वानां॑ प॒दवीः॑ क॒वीना॑मृषि॒र्विप्रा॑णां म॒हिषो॑ मृ॒गाणा॑म्।
 श्ये॒नो गृ॒ध्राणा॑ꣳ स्व॒धिति॑र्व॒नाना॑ꣳ सोमः॑ प॒वित्र॑मत्येति॒ रेभन्॑।
 (ऋक्) सचि॑त्र चि॒त्रं चि॒तयन्॑ तम॒स्मे चि॒त्रक्ष॑त्र चि॒त्रत॑मं
 वयो॒धाम्। च॒न्द्रं र॒यिं पु॑रु॒वीरं॑ बृ॒हन्तं॑ च॒न्द्रच॑न्द्राभिर्गृण॒ते
 यु॑वस्व॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय केतवे नमः॥९॥

॥ॐ आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमो नमः॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नक्षत्रसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् - ३/प्रश्नः - १)

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् - ३/प्रपाठकः - ५/अनुवाकः - १)

अ॒ग्निर्नः॑ पा॒तु कृ॒त्तिकाः॑ । नक्ष॑त्रं दे॒वमिन्द्रि॑यम् । इ॒दमा॑सां
विचक्ष॑णम् । ह॒विरा॒सं जु॑होतन । यस्य॒ भान्ति॑ र॒श्मयो॒ यस्य॑
के॒तवः॑ । यस्ये॒मा वि॒श्वा भुव॑नानि॒ सर्वा॑ । स कृ॒त्तिका॑भि॒
र॒भिसं॑वसानः । अ॒ग्निर्नो॑ दे॒वः सु॑वि॒ते द॑धातु ॥ १ ॥

प्र॒जाप॑ते रोहि॒णी वै॒तु पत्नी॑ । वि॒श्वरू॑पा बृ॒हती चि॒त्रभा॑नुः ।
सा नो॑ य॒ज्ञस्य॑ सु॒वि॒ते द॑धातु । यथा जी॒वेम॑ श॒रदः॑ स॒वीराः॑ ।
रोहि॒णी दे॒व्युद॑गात्पु॒रस्ता॑त् । वि॒श्वा रू॒पाणि॑ प्र॒तिमो॑द॒माना॑ ।
प्र॒जाप॑ति॒ः ह॒विषा॑ व॒र्धय॑न्ती । प्रि॒या दे॒वाना॑मुप॑यातु
य॒ज्ञम् ॥ २ ॥

सोमो॒ राजा॑ मृ॒गशी॒रुषे॑ण॒ आग॑न् । शि॒वं नक्ष॑त्रं प्रि॒यम॑स्य
धा॒म । आ॒प्याय॑मानो बहु॒धा जने॑षु । रे॒तः प्र॒जां यज॑माने
दधातु । यत्ते॒ नक्ष॑त्रं मृ॒गशी॒रुषम॑स्ति । प्रि॒यः रा॑जन् प्रि॒यत॑मं
प्रि॒याणा॑म् । तस्मै॑ ते सोम ह॒विषा॑ वि॒धेम । शं न॑ ए॒धि द्वि॒पदे॒
शं चतु॑ष्पदे ॥ ३ ॥

आ॒र्द्रया॑ रु॒द्रः प्रथ॑मा न ए॒ति । श्रेष्ठो॑ दे॒वानां॑ पति॑र॒घ्निया॑नाम् ।
नक्ष॑त्रमस्य ह॒विषा॑ वि॒धेम । मा नः॑ प्र॒जाः री॑रिष॒न्मोत॑
वी॒रान् । हे॒ती रु॒द्रस्य॑ परि॑णो वृ॒णक्तु॑ । आ॒र्द्रा नक्ष॑त्रं

जुषता॑ ह॒विर्नः॑ । प्र॒मुञ्च॑मानौ दुरि॒तानि॑ वि॒श्वा । अपा॒घश॑
सन्न॒दता॒मरा॑तिम् ॥ ४ ॥

पुन॑र्नो दे॒व्यदि॑तिः स्पृ॒णोतु । पुन॑र्वसू नः पुन॒रेता॑ य॒ज्ञम् । पुन॑र्नो
दे॒वा अ॒भिय॑न्तु सर्वे॑ । पुनः॑ पुन॒र्वो ह॒विषा॑ यजामः । ए॒वा
न दे॒व्यदि॑तिरन॒र्वा । वि॒श्वस्य॑ भ॒र्त्री जग॑तः प्रति॒ष्ठा । पुन॑र्वसू
ह॒विषा॑ व॒र्धय॑न्ती । प्रि॒यं दे॒वाना॒मप्ये॑तु पाथः ॥ ५ ॥

बृह॒स्पतिः॑ प्रथ॒मं जा॑यमानः । ति॒ष्यं नक्ष॑त्रम॒भि सम्ब॑भूव । श्रेष्ठो
दे॒वानां॑ पृ॒तना॑सु जिष्णुः । दि॒शोऽनु॑ सर्वा॒ अभ॑यं नो अस्तु ।
ति॒ष्यः पुर॑स्ता॒दुत म॑ध्य॒तो नः॑ । बृह॒स्पति॑र्नः परि॒पातु॑ प॒श्चात् ।
बा॒धेतां॑ द्वेषो॒ अभ॑यं कृणुताम् । सु॒वीर्य॑स्य॒ पत॑यः स्याम ॥ ६ ॥

इ॒दं स॒र्पेभ्यो॑ ह॒विर॑स्तु जुष्टम् । आ॒श्रेषा॑ येषा॒मनु॑यन्ति
चे॒तः । ये अ॒न्तरि॑क्षं पृथि॒वीं क्षि॑यन्ति । ते नः॑ स॒र्पासो॑
हव॒माग॑मिष्ठाः । ये रो॒चने॑ सू॒र्यस्यापि॑ स॒र्पाः । ये दि॒वं
दे॒वीमनु॑स॒ञ्चर॑न्ति । येषा॒माश्रे॑षा अ॒नुय॑न्ति का॒मम् । तेभ्यः॑
स॒र्पेभ्यो॑ मधु॒मञ्जु॑होमि ॥ ७ ॥

उप॑हूताः पि॒तरो॒ ये म॒घासु॑ । मनो॑जवसः सु॒कृतः॑ सु॒कृत्याः॑ ।
ते नो॑ नक्ष॑त्रे हव॒माग॑मिष्ठाः । स्व॒धाभि॑र्य॒ज्ञं प्र॑यतं जुषन्ताम् ।
ये अ॒ग्निद॑ग्धा येऽन॒ग्निद॑ग्धाः । येऽमुं॑ लो॒कं पि॒तरः॑ क्षि॒यन्ति॑ ।
या॑श्च वि॒द्वया॑ उ॒ च न॑ प्रवि॒द्वा । म॒घासु॑ य॒ज्ञं सु॒कृतं॑
जुषन्ताम् ॥ ८ ॥

गवां पतिः फल्गुनीनामसि त्वम्। तदर्यमन् वरुणमित्र
चारु। तं त्वा वयं सनितारं सनीनाम्। जीवा जीवन्तमुप
संविशेम। येनेमा विश्वा भुवनानि सञ्जिता। यस्य देवा
अनुसंयन्ति चेतः। अर्यमा राजाऽजरस्तु विष्मान्।
फल्गुनीनामृषभो रौरवीति॥९॥

श्रेष्ठो देवानां भगवो भगासि। तत्त्वा विदुः फल्गुनीस्तस्य
वित्तात्। अस्मभ्यं क्षत्रमजरं सुवीर्यम्। गोमदश्ववदुपसन्नदेह।
भगो ह दाता भग इत्प्रदाता। भगो देवीः फल्गुनीराविवेश।
भगस्येत्तं प्रसवं गमेम। यत्र देवैः संधमादं मदेम॥१०॥

आयातु देवः सवितोपयातु। हिरण्ययेन सुवृता रथेन। वहन्
हस्तं सुभगं विद्वानापसम्। प्रयच्छन्तं पपुंरिं पुण्यमच्छं।
हस्तः प्रयच्छ त्वमृतं वसीयः। दक्षिणेन प्रतिगृणीम एनत्।
दातारमद्य सविता विदेय। यो नो हस्ताय प्रसुवाति
यज्ञम्॥११॥

त्वष्टा नक्षत्रमभ्येति चित्राम्। सुभगं संसं युवतिं
रोचमानाम्। निवेशयन्नमृतान्मर्त्यांश्च। रूपाणि पिंशन्
भुवनानि विश्वा। तन्नस्त्वष्टा तदु चित्रा विचष्टाम्। तन्नक्षत्रं
भूरिदा अस्तु मह्यम्। तन्नः प्रजां वीरवतीं सनोतु। गोभिर्नो
अश्वैः समनक्तु यज्ञम्॥१२॥

वायुर्नक्षत्रमभ्येति निष्पाम्। तिग्मशृङ्गो वृषभो रोरुवाणः।

समीरयन् भुवना मातरिश्वा॑। अप॒ द्वेषा॑सि नुदतामरा॑तीः।
तन्नो वा॒युस्तदु॒ निष्ठां शृ॒णोतु। तन्नक्षत्रं भूरि॒दा अस्तु॑ मह्यम्।
तन्नो दे॒वासो अनु॑जानन्तु कामम्। यथा॒ तरे॑म दुरि॒तानि॒
विश्वा॑॥१३॥

दूर॑म॒स्मच्छ॑त्र॒वो यन्तु॑ भी॒ताः। तदिन्द्रा॒ग्नी कृ॑णुतां तद्विशा॑खे।
तन्नो दे॒वा अनु॑मदन्तु य॒ज्ञम्। प॒श्चात् पुर॑स्ता॒दभ॑यं नो अस्तु।
नक्ष॑त्राणा॒मधि॑प॒त्नी वि॒शाखे॑। श्रेष्ठा॑विन्द्रा॒ग्नी भुव॑नस्य गो॒पौ।
विषू॑चः शत्रू॑नप॒बाध॑मानौ। अप॒ क्षुधं॑ नुदतामरा॑तिम्॥१४॥

पूर्णा॑ प॒श्चादु॒त पूर्णा॑ पुरस्ता॑त्। उन्म॑ध्य॒तः पौ॑र्णमा॒सी जि॑गाय।
तस्यां दे॒वा अधि॑संवसन्तः। उ॒त्त॒मे नाकं॑ इ॒ह मा॑दयन्ताम्।
पृ॒थ्वी सु॒वर्चा॑ यु॒वतिः॑ स॒जोषाः॑। पौ॒र्णमा॒स्युद॑गाच्छोभ॑माना।
आ॒प्याय॑यन्ती दुरि॒तानि॒ विश्वा॑। उ॒रुं दुहा॑ं यज॑मानाय
य॒ज्ञम्॥१५॥

ऋ॒द्ध्यास्मि॑ ह॒व्यैर्नम॑सोप॒सद्य॑। मि॒त्रं दे॒वं मि॒त्रधे॑यं नो अस्तु।
अ॒नूरा॒धान् ह॒विषा॑ वर्ध॑यन्तः। श॒तं जी॑वेम श॒रदः॑ स॒र्वीराः॑।
चि॒त्रं नक्ष॑त्रमुद॑गात्पुरस्ता॑त्। अ॒नूरा॒धा स॒ इति॑ यद्वद॑न्ति।
तन्मि॒त्र ए॑ति प॒थिभि॑र्दे॒वयानैः॑। हि॒र॒ण्ययै॑र्वित॑तैरन्तरि॑क्षे॥१६॥

इन्द्रो॑ ज्ये॒ष्ठाम॑नु नक्ष॑त्रमेति। यस्मिन् वृ॒त्रं वृ॒त्र तू॒र्ये त॒तार॑।
तस्मिन्व॑यम॒मृतं॑ दुहा॑नाः। क्षुधं॑ तरे॑म दुरि॒तिं दुरि॑ष्टिम्।
पुर॑न्द॒राय॑ वृष॒भाय॑ धृ॒ष्णवै॑। अषा॑ढाय॒ सह॑मानाय मी॒ढुषे॑।

इन्द्राय ज्येष्ठा मधुमद्बुहाना। उरुं कृणोतु यजमानाय
लोकम्॥१७॥

मूलं प्रजां वीरवतीं विदेय। पराच्येतु निर्ऋतिः पराचा।
गोभिर्नक्षत्रं पशुभिः समक्तम्। अहर्भूयाद्यजमानाय मह्यम्।
अहर्नो अद्य सुविते दधातु। मूलं नक्षत्रमिति यद्वदन्ति। पराचीं
वाचा निर्ऋतिं नुदामि। शिवं प्रजायै शिवमस्तु मह्यम्॥१८॥

या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुः। या अन्तरिक्ष उत
पार्थिवीर्याः। यासामषाढा अनुयन्ति कामम्। ता न आपः
शः स्योना भवन्तु। याश्च कूप्या याश्च नाद्याः समुद्रियाः।
याश्च वैशन्तीरुत प्रासचीर्याः। यासामषाढा मधु भक्षयन्ति।
ता न आपः शः स्योना भवन्तु॥१९॥

तन्नो विश्वे उप शृण्वन्तु देवाः। तदषाढा अभिसंयन्तु यज्ञम्।
तन्नक्षत्रं प्रथतां पशुभ्यः। कृषिर्वृष्टिर्यजमानाय कल्पताम्।
शुभ्राः कन्या युवतयः सुपेशसः। कर्मकृतः सुकृतो वीर्यावतीः।
विश्वान् देवान् हविषा वर्धयन्तीः। अषाढाः काममुपयान्तु
यज्ञम्॥२०॥

यस्मिन् ब्रह्माभ्यजयत्सर्वमेतत्। अमुं च लोकमिदमूच सर्वम्।
तन्नो नक्षत्रमभिजिद्विजित्य। श्रियं दधात्वहणीयमानम्।
उभौ लोकौ ब्रह्मणा सञ्जितेमौ। तन्नो नक्षत्रमभिजिद्विचष्टाम्।
तस्मिन्वयं पृतनाः सञ्जयेम। तन्नो देवासो अनुजानन्तु

कामम्॥२१॥

शृ॒ण्वन्ति॑ श्रो॒णाम॒मृत॑स्य गो॒पाम्। पु॒ण्या॑मस्या॒ उप॑शृ॒णोमि॒
वाच॑म्। म॒हीं दे॒वीं वि॒ष्णु॑पत्नीमजूर्याम्। प्र॒तीचीं॑ मेना॒
ह॒विषा॑ यजामः। त्रे॒धा वि॒ष्णु॑रुरुगा॒यो वि॒च॑क्रमे। म॒हीं दि॒वं
पृ॒थि॒वीम॒न्तरि॑क्षम्। तच्छ्रो॒णैति॑श्रव॒ इच्छ॑माना। पु॒ण्य॑ः श्लोकं
यज॑मानाय कृ॒ण्वती॑॥२२॥

अ॒ष्टौ दे॒वा वस॑वः सो॒म्यासः॑। चत॑स्रो दे॒वीर॒जराः॑ श्रवि॑ष्ठाः। ते
य॒ज्ञं पा॑न्तु रज॑सः पुर॒स्तात्। सं॒वत्स॑रीण॑म॒मृत॑ः स्व॒स्ति। य॒ज्ञं
नः पा॑न्तु वस॑वः पुर॒स्तात्। द॒क्षिण॑तोऽभि॒यन्तु॑ श्रवि॑ष्ठाः। पु॒ण्यं
नक्ष॑त्रम॒भि संवि॑शाम। मा नो अ॒राति॑र॒घश॑सा॒ऽगत्र॑॥२३॥

क्ष॒त्रस्य॑ रा॒जा वरु॑णोऽधि॒राजः॑। नक्ष॑त्राणा॒ं श॒तभि॑ष॒ग्वसि॑ष्ठः।
तौ दे॒वेभ्यः॑ कृ॒णुतो॑ दी॒र्घमा॑युः। श॒त॑ सह॒स्रा भे॑ष॒जानि॑
धत्तः। य॒ज्ञं नो॒ राजा॒ वरु॑ण॒ उप॑यातु। तन्नो॒ विश्वे॑ अ॒भि
संय॑न्तु दे॒वाः। तन्नो॒ नक्ष॑त्र॑ श॒तभि॑ष॒गजु॑षा॒णम्। दी॒र्घमा॑युः
प्रति॑र॒द्धेष्जानि॑॥२४॥

अ॒ज एक॑पा॒दुद॑गात्पु॒रस्ता॑त्। वि॒श्वा भू॑तानि॒ प्रति॑ मोद॑मानः।
तस्य॑ दे॒वाः प्र॑स॒वं य॑न्ति॒ सर्वे॑। प्रो॒ष्ठप॒दासो॑ अ॒मृत॑स्य गो॒पाः।
वि॒भ्राज॑मानः समि॒धा न उ॒ग्रः। आ॒ऽन्तरि॑क्षमरु॒हद॑ग॒न्धाम्।
त॑ सूर्य॑ दे॒वम॒जमे॑कपादम्। प्रो॒ष्ठप॒दासो॑ अ॒नुय॑न्ति॒
सर्वे॑॥२५॥

अहिर्बुध्नियः प्रथमा न एति। श्रेष्ठो देवानामुत मानुषाणाम्।
तं ब्राह्मणाः सोमपाः सोम्यासः। प्रोष्ठपदासो अभिरक्षन्ति
सर्वे। चत्वार एकमभि कर्म देवाः। प्रोष्ठपदा स इति यान्
वदन्ति। ते बुध्नियं परिषद्यं स्तुवन्तः। अहिं रक्षन्ति
नमसोपसद्यं॥ २६॥

पृषा रेवत्यन्वेति पन्थाम्। पुष्टिपती पशुपा वाजबस्त्यौ।
इमानि हव्या प्रयता जुषाणा। सुगैर्नो यानैरुपयातां यज्ञम्।
क्षुद्रान् पशून् रक्षतु रेवती नः। गावो नो अश्वाः अन्वेतु पृषा।
अत्र रक्षन्तौ बहुधा विरूपम्। वाजं सनुतां यजमानाय
यज्ञम्॥ २७॥

तदश्विनावश्वयुजोपयाताम्। शुभङ्गमिष्ठौ सुयमैभिरश्वैः। स्व
नक्षत्रं हविषा यजन्तौ। मध्वासम्पृक्तौ यजुषा समन्तौ।
यौ देवानां मिषजौ हव्यवाहौ। विश्वस्य दूतावमृतस्य
गोपौ। तौ नक्षत्रं जुजुषाणोपयाताम्। नमोऽश्विभ्यां
कृणुमोऽश्वयुग्भ्याम्॥ २८॥

अपं पाप्मानं भरणीर्भरन्तु। तद्यमो राजा भगवान् विचष्टाम्।
लोकस्य राजा महतो महान् हि। सुगं नः पन्थामभयं
कृणोतु। यस्मिन्नक्षत्रे यम एति राजा। यस्मिन्नेनमभ्यर्षिश्चन्त
देवाः। तदस्य चित्रं हविषा यजाम। अपं पाप्मानं
भरणीर्भरन्तु॥ २९॥

निवेशनी सङ्गमनी वसूनां विश्वा रूपाणि वसून्त्यावेशयन्ती।
 सहस्रपोषः सुभगा रराणा सा न आगन्वर्चसा संविदना॥
 यत्ते देवा अदधुर्भागधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा। सा नो
 यज्ञं पिपृहि विश्ववारे रयिं नो धेहि सुभगे सुवीरम्॥३०॥

॥ गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
 स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ संस्तुनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः।
 स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
 स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥
 ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वंमसि। त्वमेव
 केवलं कर्ताऽसि। त्वमेव केवलं धर्ताऽसि। त्वमेव केवलं
 हर्ताऽसि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्माऽसि
 नित्यम्॥१॥

ऋतं वच्मि। संत्यं वच्मि॥२॥

अवं त्वं माम्। अवं वक्तारम्। अवं श्रोतारम्। अवं दातारम्।
 अवं धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अवं पुश्चात्तात्। अवं
 पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अवं दक्षिणात्तात्। अवं चोर्ध्वात्तात्।
 अवाधुरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्॥३॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि॥४॥

सर्वं जगदिदं त्वत्त्वं जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्त्वं स्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्परिमिता पदानि॥५॥

त्वं गुणत्रयातीतः। त्वम् अवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥६॥

गुणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्रीच्छन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः॥७॥

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि।

तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥८॥

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।

रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्॥

रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।

रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्॥

भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।

आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।

एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः॥९॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु
लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये
नमो नमः॥१०॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न
बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापापात् प्रमुच्यते।
सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो
रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो
भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं
च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि
मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं
काममधीते तं तमनेन साधयेत्॥११॥

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन्

जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं
विद्यान् बिभेति कदाचनेति॥१२॥

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति
स यशोवान् भवति स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण
यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्धिर्यजति
स सर्वं लभते स सर्वं लभते॥१३॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा। सूर्यवर्चस्वी भवति।
सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति।
महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महापापात्
प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स
सर्वविद्भवति। य एवं वेद। इत्युपनिषत्॥१४॥

सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहे।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहे॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः ॥

अपैतु मृत्युरमृतं न आगन्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पूर्णं
वनस्पतैरिवाभिनः शीयतां रयिः स च तान्नः शचीपतिः॥१॥
परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत

वीरान्॥२॥

वातं प्राणं मनसाऽन्वा रभामहे प्रजापतिं यो भुवनस्य
गोपाः। स नो मृत्योस्त्रायतां पात्वहंसो ज्योग्जीवा
जरामशीमहि॥३॥

अमुत्र भूयादध यद्यमस्य बृहस्पते अभिशस्तेरमुञ्चः।
प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्माद्देवानामग्ने भिषजा शचीभिः॥४॥

हरिः हरन्तमनुयन्ति देवा विश्वस्येशानं वृषभं मतीनाम्।
ब्रह्म सरूपमनुमेदमागादयनं मा विवधीर्विक्रमस्व॥५॥

शलकैरग्निमिन्धान उभौ लोकौ सनेमहम्। उभयोर्लोकयोर्-
ऋध्वाऽति मृत्युं तराम्यहम्॥६॥

मा छिदो मृत्यो मा वधीर्मा मे बलं विवृहो मा प्रमोषीः। प्रजां
मा मे रीरिष आयुरुग्र नृचक्षसं त्वा हविषा विधेम॥७॥

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा
न उक्षितम्। मा नोऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा
नस्तनुवो रुद्र रीरिषः॥८॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि
मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र
भामितोऽवधीर्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते॥९॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो
रयीणाम्॥१०॥

यत॑ इन्द्र॒ भया॑महे॒ ततो॑ नो॒ अभयं॑ कृधि। मघ॑वन्छुग्धि॒ तव॒ तन्न॑
ऊ॒तये॑ वि॒द्विषो॑ वि॒मृधो॑ जहि॥११॥ स्व॒स्ति॒दा वि॒शस्पति॑र्वृ॒त्रहा॑
वि॒मृधो॑ व॒शी। वृ॒षेन्द्रः॑ पु॒र ए॑तु नः स्व॒स्ति॒दा अ॑भयङ्क॒रः॥१२॥

त्र्य॑म्बकं॒ यजाम॑हे सु॒गन्धिं॑ पु॒ष्टि॒वर्ध॑नम्। उ॒र्वारु॒कमि॑व
बन्ध॑नान्मृत्यो॑र्मु॒क्षीय॒ माऽमृ॑ता॒त्॥१३॥

अप॑मृत्युमप॒क्षुध॑म्। अपे॒तः श॒पथं॑ जहि। अ॒धा नो॑ अ॒ग्न
आ॒व॒ह। रा॒यस्पोष॑ सह॒स्रिण॑म्॥१४॥

ये ते॑ स॒हस्र॑म॒युतं॑ पाशाः॑। मृत्यो॒ मर्त्या॑य॒ हन्त॑वे। तान् य॒ज्ञस्य॑
मा॒यया॑। सर्वा॒नव॑यजामहे॥१५॥

जा॒तवे॑दसे सु॒नवाम॑ सोमं म॒राती॑य॒तो नि॑द॒हाति॑ वेदः। स नः॑
पर्ष॑दति॒ दुर्गा॑णि॒ विश्वा॑ ना॒वेव॑ सि॒न्धुं दुरि॑ताऽत्य॒ग्निः॥१६॥

भूर्भुवः॑ स्वः। ओजो॒ बल॑म्। ब्रह्म॑ क्ष॒त्रम्। यशो॑ म॒हत्। स॒त्यं
तपो॑ नाम॑। रू॒पम॑मृत॒म्। चक्षुः॑ श्रोत्र॒म्। मन॑ आ॒युः। वि॒श्वं यशो॑
म॒हः। स॒मं तपो॑ ह॒रो भाः। जा॒तवे॑दा॒ यदि॑ वा पाव॒कोऽसि॑।
वैश्वान॑रो॒ यदि॑ वा वैद्यु॒तोऽसि॑। शं प्र॒जाभ्यो॑ यज॑मानाय
लो॒कम्। ऊ॒र्जं पु॒ष्टिं द॑द॒द्भ्याव॑वृ॒त्स्व॥१७॥

मृत्यु॑र्नश्य॒त्वायु॑र्वर्ध॒तां भूः। मृत्यु॑र्नश्य॒त्वायु॑र्वर्ध॒तां भुवः॑।
मृत्यु॑र्नश्य॒त्वायु॑र्वर्ध॒तां सुवः॑। मृत्यु॑र्नश्य॒त्वायु॑र्वर्ध॒तां भूर्भुवः॑
सुवः॑। मृत्यु॑र्नश्य॒त्वायु॑र्वर्ध॒ताम्॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

